ॐ महाराज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना



॥ नित्य पाठ संग्रह स्तोत्र ॥

अर्धरात्री श्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुर, जम्मू।

महाराज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्नः

ॐ

नित्य पाठ संग्रह स्तोत्र

अर्धरात्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुर, जम्मू।
जम्मू व कश्मरी

प्रकाशक
प्रकाशन विभाग
अर्धरात्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुर, जम्मू–180008
जम्मू व कश्मरी

दूरभाषः 0191-2536300

संस्करणः छट्टा 2012 ई० संख्या–2000

मूल्य(लागत) : Rs. 50/-

दो शब्द

ॐ नमो राज्ञायै नमः

प्रथम संस्करण के अवसर पर

आदरणीय पाठक गण ! नमस्कार

इस स्तोत्रावली संग्रह का प्रकाशन हम देवी माता के भगतजनों के आग्रह तथा अनुरोध से प्रेरित होकर कर रहे हैं। जनता भली-भांति जानती है कि हमारी संस्था कश्मीर में उत्साह से कार्यग्रस्त रहती थी। हर प्रकार के धार्मिक काम में आगे-आगे रहती थी। हमारी संस्था ने श्रीनगर में जो कुछ प्रकाशित किया था वह तो सारे का सारा वहीं पर छोड़ आने के कारण हमें यहाँ जम्मू में नये सिरे से प्रबन्ध करना बड़ा कठिन था। देवी माता की कृपा तथा आपके हार्दिक सहयोग से हमारी संस्था ने देवी माता के सिद्ध पीठ का निर्माण कार्य भी किया है और पूजा-पाठ तथा स्तुति से संबंधित कार्यों की ओर ध्यान देने की भी योजनाएँ हाथ में लेने का निश्चय किया है। यह पुस्तक तो इसी योजना की एक कड़ी है। इस संग्रह में दैनिक पूजा-पाठ का विधि अनुसार एक अपना विशेष क्रम अपनाया गया है। देवी माता के भजन, धार्मिक पुस्तकें, स्तुतियां तथा आराधनाएँ भी एक के बाद एक प्रकाशित हो कर आपके हाथों में आती रहेंगी। हम समय-समय पर जाति के उत्थान तथा जगत कल्याण सम्बन्धित कार्यों का आयोजन तथा प्रबन्ध भी करेंगे। इस सेवा कार्य में जाति का पूर्ण रूप से सहयोग तथा देवी माता की इच्छा अनिवार्य है। हम प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि यही हमारा निश्चय है और लक्ष भी।

ॐ शांति शांति शांति

अर्जुन देव वेशण (प्रधान)
अर्ध रात्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)
भवानी नगर, जानीपुर, जम्मू।

दो शब्द
चौथे संस्करण के अवसर पर

अर्ध रात्री श्री माराज्ञा सेवा संस्था चालीस वर्ष पुरानी संस्था है जिसके सदस्य विस्थापन से पूर्व हर शुल्क पक्ष अष्टमी को क्षीर भवानी (तुलामुला काश्मीर) में मां राज्ञा का आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए वहां उपस्थित हुआ करते थे। हमारा उद्देश्य यह था कि भक्तजनों में विशेष कर और पूरे काश्मीरी पंडित समुदाय में आमतौर पर अध्यात्मिक और सांस्कृतिक जागृति लाई जा सके।

विस्थापन के बाद भवानी नगर (जानीपुर) जम्मू में किस प्रकार माता श्री महाराज्ञा का मंदिर (पीठ) निर्मित हुआ यह अब इतिहास हो गया है। हम इस उद्देश्य के लिए किये हुए प्रयासों की दुहाई नहीं करना चाहते पर अभिलेख (रिकॉर्ड) के लिए इतना बताना काफी है कि हमारे यह प्रयत्न सामूहिक पूजा पाठ प्रार्थना तथा भजन कीर्तन के लिए इकट्ठे होते समय रंग लाए और अर्धरात्री श्री महाराज्ञा सेवा संस्था फिर सक्रिय हो गया। इसका श्रेय भक्तजनों के अटूट विश्वास तथा मां भवानी की कृपा दोनों को हैं।

मां के चरणों के अनुराग को निरंतर बनाए रखने तथा उसका संवर्धन करने की दृष्टि से हमने नित्य पाठ विधि, स्तोत्रावली तथा भजन-लीला संग्रह को प्रकाशित किया है। इस प्रकाशन का उद्देश्य यह है कि भक्तों की अध्यात्मिक प्यास भी संतुष्ट हो तथा उनके मन में कभी उठने वाली किसी प्रकार की शंका का भी निवारण हो।

यह प्रस्तुत पुस्तिका का चौथा संस्करण है। आप जानते हैं कि तीसरा संस्करण यहीं जम्मू में प्रकाशित हुआ था। हम इस बात को लगभग अनुभव कर रहे थे कि उस में कुछ छापे की गल्तियाँ रह गई थीं। कुछ अन्य अभाव भी खटकते थे। फिर यह संस्करण अब अप्राप्य हो गया था। इसलिए इस चौथे संस्करण की आवश्यकता पड़ी।

इस संस्करण का पुनः मुद्रण करते समय एक तो हमने दूसरे संस्करण के अभावों तथा त्रुटियों की यथासंभव दूर करने का प्रयत्न किया हैं दूसरा इसे उन अन्य दोषों को भी रहित करने की कोशश की है जो समय-समय पर भक्तजनों तथा हमारे सहयोगियों ने बताए। आप देखेंगे कि इस संस्करण में भजनों-लीलाओं का क्रम भी बदल गया है। इसका कारण भी यही है। इसके अतिरिक्त इस में कुछ ऐसे भजन जोड़ दिए गए हैं जो

अब यहां गाये जाते हैं। जो अब हमारे भजन कीर्तन का भाग बन गए हैं।

पाठक और भक्तजन इस नए संस्करण से लाभान्वित हो यह हमारी कामना और आशा है। इस प्रयास को सफल करने में हमारे जिन बंधुओं ने सहयोग दिया, हम मां भवानी से उन के कल्याण की प्रार्थना करते हैं। सहयोग सहधर्म और सहकर्म सांसारिक तथा पारलौकिक दोनों उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक होता है।

मां भवानी हमारी जाति के सब सदस्यों को सहकर्म की प्रेरणा दे, जिससे हम अपने इतिहास के इस कठिन पड़ाव पर अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा कर सकें।

श्री भवानी पीठ
भवानी नगर
जानीपुर - जम्मू

शुभ आकांक्षी
ए०डी० वेशण
प्रधान

दो शब्द

छठे संस्करण के विषय में,

नित्य पाठ संग्रह स्तोत्र का छठा संस्करण अर्द्धरात्री श्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०) द्वारा माता महामाया के प्रिय भक्तजनों की सेवा में प्रस्तुत है।

इस संस्करण का पुनः मुद्रण कराते समय हमने प्रयास किया है कि पिछले संस्करण की त्रुटियों को यथा संभव दूर किया जाए ताकि पाठकगण को शुद्ध पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो सके जिसके वह सदेव इच्छुक रहे हैं। दूसरे अन्य दोष तथा अभाव जो समय-समय पर हमारे सहयोगी तथा अन्य भक्तजन हमारे ध्यान में लाते रहे हैं उन को भी दूर करने का प्रयत्न किया गया है।

इसके अतिरिक्त इस संस्करण में "महाराज्ञा सहस्रनाम स्तोत्र" भी जोड़ दिया गया है और हम आशा करते हैं कि हमारे इस प्रयास से भक्तजन लाभान्वित होंगे।

इस संस्करण के प्रकाशन में श्री एल० डी० कौल द्वारा किए गए प्रयास सराहनीय हैं। माता भवानी उन पर अपना अनुग्रह बनाए रखे।

मां भवानी हम सबको इतिहास के इस कठिन मोड़ पर हमें अपने धर्म तथा संस्कृति की रक्षा करने की प्रेरणा एवं सामर्थ्य प्रदान करें।

ज्येष्ट अष्टमी 2012

एम०एल० सफाया

कुछ सूचनाएँ

१. इस तीर्थ स्थान का प्रबंध "अर्धरात्रि श्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि०)" के अधीन है।

२. संस्था भक्तजनों के लिए निम्नलिखित सुविधाएँ निःशुल्क प्रदान करता है। केवल हानि की भरपाई या वस्तुओं की टूटन का शुल्क लिया जाता है, पर बुकिंग पहले से की जानी चाहिए।

हवन, नामावलि, यज्ञोपवीत काहनेथर, मुंडन, वाकदान (ड्रुय कसम) जैसे धार्मिक या सामाजिक उत्सवों पर बरतन तथा आवास का कमरा दिया जाता है। दरी या टाट तथा कंबल भी दिए जा सकते हैं।

३. अष्टमी के दिन नामावलि, पंचस्तवी, श्रीमद्भगवद्गीता, सतनाम स्तोत्र, नीतिपथ, संग्रहस्तोत्र आदि पुस्तिकाएँ उचित दर पर उपलब्ध कराई जाती हैं।

४. सब दिन स्वामीजी/पुजारीजी से पूजा सामग्री मिल सकती है। अष्टमी के दिन काउँटर पर बिकती है।

५. पूजा सामग्री, प्रकाशनों पुस्तकों आदि से प्राप्त होने वाली आय संस्थान द्वारा मंदिर के निर्माण कार्य पर खर्च की जाती है।

६. मां भवानी के पीठ पर अष्टमी के दिन तथा कुछ विशेष अवसरों पर भक्तजनों तथा कार्यकरताओं के लिए लंगर का जो प्रबंध किया जाता है। इसके लिए आवश्यक धन-राशि कार्यकर्त्ता आपस में चंदा इकट्ठा करके उपलब्ध कराते हैं, संस्था लंगर पर कोई खर्चा नहीं करती।

७. दानी भक्तजनों से प्रार्थना है कि दान की हुई वस्तु या रकम की रसीद ज़रूर लें। रकम संस्थान के दानपात्र में भी डाली जाती सकती है।

अनुक्रमणिका

1.	नित्य पाठ	9
2.	अथ गौरीस्तुतिः	20
3.	प्रेप्युन (नैवेद्य मन्त्र)	25
4.	भवगती श्लोक	28
5.	क्षमा प्रार्थना	32
6.	श्री गणेश स्तुति	34
7.	नमो भवानी	37
8.	शंकर प्रार्थना	42
9.	भवानीनामसहस्रस्तुतिः	46
10.	इन्द्राक्षीस्तोत्रम्	66
11.	भवगती लीला	71
12.	शिव आरती	74
13.	विष्णु स्तुति	76
14.	भैरव स्तुति	77
15.	प्रातः काल स्मरण	79
16.	माजि ज़ार'पार	80
17.	लीला (ब ज़ाअरी गोश थावतम ....)	82
18.	शिव महिम्ना स्तोत्रम्	85
19.	शंकर अस्तुति (रुद्राष्टक स्तोत्र)	93
20.	प्रभात आरती	95
21.	शांति पाठ	97

22. कुछ सर्वकामनासिद्ध मंत्र 100
23. लोकप्रिय श्लोक 102
24. महा गायत्री मंत्र 103
25. महा राज्ञा स्तोत्र 104
26. श्री राजराजेश्वरी स्तुतिः 106
27. भगवती पोश पूजा 110
28. लीलायें 111
29. श्लोक 151
30. पंचस्तवी(अथ लघुस्तवः प्रथम) 154
(अथ चर्चस्तवो द्वितीयः) 158
(अथ तृतीयो घटस्तवः) 163
(अथ पञ्चस्तव्याम ऽम्बस्तवश्चतुर्थः) 167
(अथ सकलजननीस्तवः पञ्चमः) 173
31. श्री स्वामी विद्याधर कृत राज्ञास्तोत्र 180
32. श्री दुर्गा पूजा 184
33. महाराज्ञीसहस्रनामकम् 206

ॐ

नित्य पाठ

ॐ श्री महा राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्नः

ॐ अस्य श्री गणेशाय नमः

(पानी से संकल्प छोड़ना)

ॐ अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ट ऋषिः सुतलं च्छन्दः कूर्मो देवता आसन-शोधने विनियोगः।

(धरती को नमस्कार करना)

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

(धरती को आसन रखना)

ध्रुवा द्योध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामसि।

(गन्ध अक्षत व फूल चढ़ाना)

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्तये समालभनं गन्धोनमः, अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

(अब हाथ जोड़ के देवों का स्मरण करना।)

१. शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नो पशान्तये।।

२. अभिप्रेतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।

३. गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्साक्षान्महेश्वरः।
गुरुर-एव जगत्-सर्वं तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

४. अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

५. विभ्रूत-दक्षिण-हस्तपद्म-युगले
दन्ताक्षसूत्रे शुभे, वामे मोदकपूर्ण
पात्र-परशू नागो-पवीती-त्रिधृक।

६. श्रीमान्-सिंह्युगासनः श्रुतियुगे शंखौ वह्न मौलिमान
दिश्यात्- ईश्वरपुत्र-ईश-भगवान् लम्बोदरः शर्म नः।

७. सिन्दूर- कुंकुम- हुताशन- विद्रुमार्क- रक्ताब्ज-
दाडिमनिभाय - चर्तुभुजाय, हेरम्बभैरव- गणेश्वर-
नायकाय। सर्वार्थसिद्धि- फलदाय गणेशवराय।।

८. मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य-महात्मनः। यः
पठेत्- तुं शिवोक्तानि सलभेत् सिद्धिम् उत्तमाम्।

९. प्रथमं वक्रतुण्डं तु चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं
कृष्णपिङ्गं तु चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं
पंचमं तु षष्ठं विकटम्-एवच, सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं
धूम्रवर्णं तथाष्टमम्, नवमं भालचन्द्रं तु दशमं तु
विनायकम, एकादशं गणपतिं द्वादशं- मन्त्रनायकम्-
पठते श्रृणुतेयस्तु, गणेश-स्तवम-उत्तमं, भार्यार्थी
लभते भार्यां घ्नार्थी विपुलं धनम्, पुत्रार्थी लभते
पुत्रम्, मोक्षार्थी परमं पदम् इच्छाकामं तु कामार्थी
धर्मार्थी-धर्मम्-अक्षयम्।।

१०. सुमुखेश्चैक-दन्तश्च, कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः
धूम्र-केतु-र्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः

द्वादशैतानि-नामानि गणेशस्य महात्मनः, य
पठेतु-श्रृणुयात-वापि स लभेत सिद्धिम् ऊत्तमाम्।
विद्यारम्भे विवाहे च' प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे
संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

११. लाक्षासिन्दूरवर्ण सुरवरनमितं मोदकैः मौदितास्यं,
हस्तेदन्तं ददानं हिमकरसदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम।
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपर- शुधरंसाखुसिंहासनस्थं,
गांगेय रौद्रमूर्तिं त्रिपुर-वधकरं विघ्नभक्षं नमामि।।

१२. लाभस्तेषां-जयस्तेषां-कुतस्तेषां पराजयः।
ईषामन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जर्नादन।।

१३. नमामि सत्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकार्मार्थसिद्धये।।

१४. वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

१५. महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनि।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।।
अचिन्त्य रुप चरिते सर्वशत्रुविनाशिनि।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजहि।।

१६. सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्या-खिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम्।।

१७. ॐ गुरुवे नमः, परम गुरुवे नमः,
परमेष्टिगुरवे नमः, परमाचार्याय नमः,
आदि-सिद्धभ्यो नमः।

(अंगन्यास कीजिए)

(दोनों हाथों की उंगलियों से स्पर्श करते हुए पढ़ें)

'अ' नाभो (नाभिको) 'उ' हृदि (हृदय को) 'म' शिरसि (सिर को)!!

ॐ 'भू' अंगुष्ठाभयां नमः (दोनों अंगूठों को) 'भवः' तर्जनीभ्यां नमः (अंगूठे के साथ वाली उंगलियों को) 'स्वः' मध्यमाभ्यां नमः (बीचवाली उंगलियों को) 'महः' अनामिकाभ्यां नमः (सब से छोटी उंगली के साथ वाली उंगलियों को) 'जनः' कनिष्ठकाभ्यां नमः (छोटी उंगलियों को) 'तपः सत्यं' करतल कर पृष्ठाभ्ययां नमः (दोनों हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें)। 'भूः' पादयोः (पांवों को) 'भुवः जान्वोः (घुटनों को) 'स्व गुह्ये' (गुह्यस्थान को) 'महाः नाभौ' (नाभि को) 'जनः हृदिये (हृदय को) 'तपः कण्ठे' (गले को) 'सत्यं शिरसि (सिर को) ॐ 'भूः' हृदयाय नमः 'भुवः' शिरसि स्वाहा 'स्व' शिखाये वषट् (चौटी को) महः कवचाय हूँ (वस्त्रों को) जन नेत्रभ्यां वौष्ट (नेत्रों को) 'तपः सत्यम्-अस्त्राय फट्' (चुटकी मारे)।।

'तत-सवितुर' अंगुष्ठाभ्यां नमः 'वरेण्यं' तर्जनीभ्यां नमः, 'भर्गो-देवस्य' मध्यमाभ्यां नमः 'धीमहि' अनामिकाभ्यां नमः 'धियो यो नः' कनिष्टिकाभ्यां नमः 'प्रचोदयात्' करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् पादयोः 'सवितुर' जान्वोः (घुटनों को) 'वरेण्यं कट्यां'

(कमर को) भर्गो नाभौ, 'देवस्य' हृदये, 'धीमहि' कण्ठे, 'धियोः' नासिकायां, 'यः' चक्षषोः (नेत्रों को) 'नः' ललाटे (माथे को) 'प्रचोदयात् शिरसि'।। 'तत सवितुर' हृदयायनमः 'वरेण्यं शिर से स्वाहा, 'भर्गो देवस्य' शिखायै वषट्, 'धीमहि' कवचाय हूँ (वस्त्रों को) 'धियो योनः' नेत्राभ्यां वौषट् 'प्रचोदयात्' अस्त्राय फट् (चुटकी मार कर) 'आपः स्तनयोः' (स्तनों को) 'ज्योति' नेत्रयोः 'रसो' मुखे, 'अमृतं' ललाट (माथे को) 'ब्रह्म-भूर्भुवः स्वरोम (शिरसि)।

(प्राणायाम कीजिये)

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भवः स्वरोम्।

(हृदय और मुख को जल की छींटें देते हुए पढ़ें) :-

तीर्थे- स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति मानः शंस्योर-अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्माणस्पते।

(अनामिका उंगली पर पवित्र ऊपर की ग्रन्थि (पर्व) पर धारण करते हुए पढ़ें) :-

वसोः पवित्रम्- असि शतधारं वसूनां पवित्रम्- असि सहस्रधारम्, अयक्षमा वः प्रजया संसृजामि- रायस्पोषेण बहुला भवन्ति।।

(यजमान को तिलक लगाते हुए पढ़ें) :-

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः शत्रूणां

बुद्धिनाशस्तु मित्राणाम्- उदयस्तव आयुर्- आरोग्यम्-ऐश्वर्यम्-एतत्-त्रितयम्-अस्तु ते जीवत्वं शरदः शतम्।

मौली बाँधने का मन्त्र :

यदा बन्धन्दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानः। तन्म आबध्नामि शत शारदाय आयुष्मान् जरदष्टिः यथासत्।।

(अपनी मध्यमा उंगली से अपने आपको तिलक पुष्प लगाते हुए पढ़ें)

परमात्मने पुरुषोत्तमाये पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधार-शक्तयै समालभनं-गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।

(चोंग-दीप को तिलक अक्षत और पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें) :-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वत-स्तिमि - रापहः प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।

(धूप को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें) :-

वनस्पति- रसो दिव्यो-गन्धाढ्यो गन्धवतमः आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।

(सूर्य देवता को निर्माल्य के थाल में तिलक अर्घ चावल फूल चढ़ाते हुए पढ़ें)

नमो धर्म निधानाय, नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्ष-देवाय-भास्कराय नमो नमः।

(विष्टर और अक्षत समेत अर्घपात्र से पानी संकल्प छोड़ना) :-

यत्रास्ति-माता, न पिता न बन्धु-भ्रातापि नो यत्र

सुहृत्-जनश्च, न ज्ञायते, यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्म-दीप शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधार-शक्त्यै दीप-धूप संकल्पात्- सिद्धिर-अस्तु दीपो नमः धूपोनमः। ॐ तत्-सत् ब्रह्म अध तावत् तिथौ अध आमुकमासस्य, आमुकपक्षस्य, आमुक तिथि, आमुक वासारन्वित्ताया ॐ भगवते वासुदेवाये सङ्कर्षणाय प्रद्युमनाय अनिरुद्धाय सत्याय- पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय सहस्रनामने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय ईश्वरायदेवाय उमासहिताय शिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडा भगवत्यै वैरवरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गङ्गा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै। विष्णुपञ्चायतन- देवताभ्यो दीपो नमः धूपो नमः।

(अपसवयेन)

(बायां यज्ञोपवीत रखकर तिल सहित पानी से पितरों को जल देते हुए पढ़ें)

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे। नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः।।

ॐ तत्-सत-ब्रह्म अधतावततिथावध अमुकमास्य, अमुकपक्षस्य तिथावमुकायां नित्यकर्मनिमितं। पित्रे पितामहाय प्रपितामहाय मात्रें पितामहाय मात्रें पितामह्यै, प्रपितामह्यै। मातामहाय, प्रमातामहाय, वृदप्रमातामहा मातामह्यै प्रमातामह्यै, वृदप्रमातामह्यै, समस्तमाता पितृभ्यो द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यो दीपः स्वधा धूपः स्वधा।

(देवी महामाया का ध्यान करते हुए पढ़ें) :-

आरक्ताभां, त्रिनेत्रां, मणिमुकुटवती, रत्नताटङ्करम्यां, हस्ताम्भोजैः सपाशाङ्कुशमदनधनु, सायकैवि-स्फुरन्तीम, आपीनो, तुङ्गवक्षो, रुहतैटविलुठत्तारहारोज्जवलाङ्गीं, ध्यायाम्यभोरुहस्थामरुणविवसनामीश्वरी- मीश्वराणाम्।

(दूध और पानी पवित्र कुण्ड में डालते हुए) :-

जात-वेदसे-सनवाम- सोम-अराती-निदहाति-वेदः। स-नः-पर्षदति दुर्गाणि विश्वा-नाववे-सिन्धुं दुरिताव्यग्निः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्य तावत् तिथो अद्य-मासस्य-पक्षस्य-अष्टम्याम- वासरान्विताथां महागायत्र्यै-सावित्र्यै सरस्वत्यै भगवत्यै-अमाये-कामाये-चार्वंग्यै टंकधारिण्यै- ताराये-पार्वत्ये यक्षिण्यै-श्री शारिका भगवत्यै-श्री शारदा

भगवत्यै-श्री महाराज्ञी भगवत्यै-श्री ज्वाला भगवत्यै-व्रीडा भगवत्यै-वैरवरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै, गंगा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, महाकालिका भगवत्यै, महालक्ष्मी भगवत्यै, महासरस्वती भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दरी भगवत्यै, शैलपुत्र्यै, ब्रह्माचारिन्ये, चंद्रघण्टाये कुष्माण्डायै, स्कन्दमात्रे कात्यायनी, काल रात्रे, महागौरे, सिद्धीधात्र्यै, नवदुर्गा भगवत्यै अष्टो स्नानानि नमः।

(गन्ध-तिलक चढ़ाना)

सर्वेवेश्वर, जगद्वन्ध्य, दिव्यासन, संस्थित, गन्धं गृहाणदेवेश, दिव्य गन्धो-पशोभिताम। तस्माद्य ज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दासि-जज्ञिरे-तस्माद्यजुस्तस्माजायात।। गन्धद्वारां-दुरधर्षां- नित्यपुष्टां-करीषिणीम् ईश्वरीं सर्वभूतानां-तामिहोपहये श्रियम, ॐ भगवते वासुदेवाये सङ्कर्षणाय प्रद्युमनाय अनिरुद्धाय सत्याय- पुरुषाय अच्युतयाय माधवाय गोविन्दाय सहस्रनामने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय ईश्वरायदेवाय उमासहिताय शिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृ ष्णपिंङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय

अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गङ्गा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै। समालभनं गन्धो नमः।

(अर्घ पुष्प चढ़ानाः)

जातवेदसे सनवाम सोम अराती निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरिताव्यग्निः। पुष्पवतीः, प्रसुमतीः फलिनीर-अफलावतां अश्वा इव सजित्वरीर-वीरुधः पारयिष्णवः ॐ भगवते वासुदेवाये सङ्कर्षणाय प्रद्युमनाय अनिरुद्धाय सत्याय- पुरुषाय अच्युतयाय माधवाय गोविन्दाय सहस्रनामने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय ईश्वरायदेवाय उमासहिताय शिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विध्नेशाय विध्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय

अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्गयै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गङ्गा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै। अर्घो नमः ...पुष्पं नमः।

(धूप चढ़ाना)

यत्पुरुषं-विदधः कतिधा-व्यकल्पयन, मुखं-किमस्य- कौ-बाहू-का-उरू पादा-उच्यते। धरसि-धर्व-धूर्वन्तं-योस्मा-न्धर्वति-तं-धर्वय-वयं-धर्वामस्तं च धूर्व। देवानामसि -वहितमं- सस्नितमं -पप्रितमं-इष्टतमं-विष्णेः क्रमोस्या हुतमसि- हविर्दानं, दृंहस्व-म्वाहान्मित्रस्यत्वा चक्षुषा -प्रेक्ष- उरुत्वा- वाताय। वस्वस्त्वा- धूपयन्तु-गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वत्। रुदास्त्वा-धूपयन्तु- त्रष्टभेन-छन्दसाङ्गिरस्वत् आदित्यास्त्वा-धूपयन्तु- जागतेन-छन्दसाङ्गिर- त्वत, विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धपयन्तु आनुष्टभेन- छन्दसाङ्गिरस्वत, इन्द्रस्त्वा- धूपयतु-वरुणेस्त्वा-धूपयतुविष्णुस्त्वा-धूपयतु सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्ये धूपं परिकल्पयामि नमः।

(कर्पूर जलाना)

कर्पूर दीपं सुमनो हरं प्रभोददामि ते देववर प्रसीदभो पापांन्धकारं त्वरितं निवार। हिरण्यंबाहो सेनानी रोषधीनं पतेशीवा दीप गृहाण कपूर कपिलाऽय त्रिवर्तिकम।

(काफूर चढ़ाना)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम उर्वारुकामिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।। कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।। सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै कर्पूरं परिकल्पयामि नमः।

(रत्नदीप चढ़ाना)

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः। उरू तदस्ये यद्वश्य पद्मयां शूद्रो अजायात।। तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिरसि, धामासि प्रियन्देवानामना दृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो गृह्णामि। देव्यै भवान्यै रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः।

अथ गौरीस्तुतिः

१. ॐ लीलारब्ध स्थापितलुप्ता खिललोकां,
लोकातीतै-र्योगिभिरन्तर्हृदि मृग्याम्।
बालादित्य श्रेणिसमान धुतिपुञ्जां,
गौरीम्म्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडेय।

२. आशापाश क्लेशविनाशं विदधानां
पादाम्भोजध्यानपराणां पुरुषाणाम्
ईशीमीशाङ्र्गाधङ्गहरां तां तनुमध्यां गौ०।
३. प्रत्याहारध्यानमसमाधि स्थितिभाजां,
नित्यं चिते निर्वृतिकाष्टां कलयन्तीम्।
सत्य ज्ञानां नन्दमयीं तां तडिदाभां गौ०।
४. चन्द्रापीड़ा नन्दितमन्द स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीड़ा लङ्कत लोला लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां गौ०।।
५. नानाकारैः शक्तिकदम्बैभुर्वनानि,
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयंमेका,
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां गौ०।
६. मूलाधारादुत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां तामअभिवन्धां गौ०।
७. आदि क्षान्तामऽक्षरमूर्त्या विलसन्ती,
भूते भूते भूत कदम्ब प्रसवित्रीम्
शब्द ब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां गौ०।
८. यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं,
भूयो भूया प्रादुरभूद क्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं गौ०।
९. यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला
सूत्रे यद्धत्क्वापि चरं चाप्यचरं च
तामध्यात्म ज्ञानपदव्यां गमनीयां गौ०।

१०. नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीश;
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च
विश्वत्राण क्रीडनशीलां शिवपत्नी गौ०।

११. पूजा काले भावविशुद्धिं विदधानो
भक्तया नित्यं जलपति गौरीदशकं यः
वाचां सिद्धिं सम्पतिमुश्चैः शिवभक्तिं,
तस्यात् वश्यं पर्वत पुत्री विदधात्रि गौ०।

❖❖❖

१. पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पदमलोचना
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी

२. अघोर व्याधिनाशी च घोरदुःख निवारिणी
अष्टा दशभुजा दुर्गा शारिका श्याम सुन्दरी।

३. निर्गुणे निष्क्रिये नित्ये सच्चिंदानन्द रूपिणि
नमोस्तुते महाराज्ञि पाहिमाम् शरणागतम्।

४. ज्वालामुखि महाज्वाले ज्वाला पिंगललोचने,
ज्वालातेजे महातेजे ज्वालामुखि नमोस्तुते

५. शारदे वरदे देवि मोक्षदात्रि सरस्वति
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनमः।

६. या देवी सर्व भूतेषु दया रुपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

७. सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।

८. शरणागत दीर्नात परित्राण परायणे, सर्वस्यार्ति
हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।

९. सर्व स्वरूपे सर्वेशे सर्व शक्ति समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते।

१०. महाबले महोत्साहे महाभय विनाशिनी,
त्राहि मा देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनी

११. अचिन्त्यरूप चरिते सर्व शत्रु विनाशिनि,
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जेहि।

१२. सर्वाबाधा प्रशमनं त्रलोक्यस्या खिलेश्वरि
एवमेव त्वमया कार्यम स्मद्वैरि विनाशनम्।

१३. श्री शारिके शरण्ये त्वं, मयि दासे दया कुरु
ऋणं रोगं भयं शोकं रिपून्नाशय सत्वरम्।

१४. श्री महाराज्ञी शरण्ये त्वं मयि पापे क्षमा कुरु
ऋणं रोगं भयं शोकं रिपून्नाशय सत्वरम्।

१५. आकाशी चंडिका देवी पातीली भवनेशवरी
मर्त्य लोके जया देवी देवी त्रिपुर सुन्दरी।

१६. प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम्
पीठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम।

ॐ तत्स ब्रह्माअद्य तावत् अद्य, अमुकमासस्यः अमुक पक्षस्य तिथावमुकायां भगवते आमाये कामायै चार्वंग्यै टंकधारिण्ये तारायै पार्वत्यै यक्षिन्यै श्री शारिका भगवत्यै, श्री शारदा भगवत्यै, श्री महाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ता भगवत्यै, गंगा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, महा कालिका भगवत्यै, महा

लक्ष्मी भगवत्यै, महा सरस्वती भगवत्यै, सिद्ध लक्ष्म्यै, महा लक्ष्म्यै, महात्रिपुर सुन्दरी भगवत्यै रत्न दीप, धूपं, कर्पूरं परिकलपयामी नमः

भक्तानु ग्रहकारिणी भगवती देवाधिदेवेश्वरी दीनानाथ कृपावती स्वजननी भक्तानुरक्ता सती। ॐ काराक्षरवासनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्वदा भूयान्नो वरदा सदा हृभयदा कामेश्वरी कामदा।।

वारांड्कुशौ पाशम भीतिमुद्रां करैर्वहन्ती कमला-सनस्थाम।
बालार्क कोटि प्रतिमां त्रिनेत्रां भजेहभाद्यां-भुवनेश्वरीं ताम्।।

(कन्द, फल, फूल, माता की भेंट चढ़ाना)

यार्द्रादशार्क परिमण्डित मूर्तिरेका
सिंहासनस्थितिमती-मुरगै वृतां च
देवी-मनक्षगतिमी श्वरतां प्रपन्नां
तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थ राज्ञीम्।
उधद्दिवाकर सहस्त्र रुचिं त्रिनेत्रां।
सिंहासनो परिगतां उरगो पवीताम्
खडगाम्बुजाढ्य कलशामृत पात्र हस्तां,
राज्ञी भजामि विकसद्वदनार विन्दाम।।
निर्गुणे ! निष्क्रिये ! नित्ये सच्चिदानन्द
रुपिणि ! नमोस्तुते महाराज्ञि !
पाहिमाम् शरणागतम्

ॐ तत् सत् ब्रह्माअद्य तावत् ..... मासस्थ ..... पक्षस्थ ..... वासरन्वितायाम सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै मिष्टानम् परिकल्पयामि नमः

प्रेप्युन (नैवेद्य मन्त्र)
(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुए पढ़ें)

अमृतेश मुद्रया अमृतीकृत्य अमृतम् अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनो बार्हुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् आददे। महागणपतये कुमाराय श्रिये सरस्वत्यै लक्ष्म्ये विश्वकर्मण द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर देवताभ्यः चतुर्वेदश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गाये त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निश्वाता दिभ्यः पितृ गण देवताम्भ्यः ॐ भगवते वासुदेवाये सङ्कर्षणाय प्रद्युमनाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युतयाय माधवाय गोविन्दाय सहस्रनामने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय ईश्वरायदेवाय उमासहिताय शिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमाये कामाये चार्वङ्गये

टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै श्री शारदा भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता भगवत्यै गङ्गा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्द्रयै सहस्रनामन्यै देव्यै भवान्यै। अभ्यङ्करी देव्यै क्षेमङ्करी भगवत्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इह राष्ट्रधिपतये अमुक भैरवाय। इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैर्ऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजाहस्ताय कुबेराय गदाहस्ताय ईशानाय त्रिशूलहस्ताय ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनाग देवताभ्यः अग्न्यादित्याभ्यां वरुण चन्द्रमोभ्यां कुमारभौमाभ्यां विष्णुबुधाभ्यां इन्द्राब्रहस्पतिभ्यां सरस्वतीशुक्राभ्यां प्रजापतिशनैश्चराभ्यां गणपतिराहुभ्यां रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कुर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पंञ्चचत्वारिंश्द्वा- स्तोष्पति यागदेवताभ्यः ब्रह्मयादिभ्यो मातृभ्यः गोर्या दिभ्यो मातृभ्यः, ललिता दिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका देवताभ्यः सिनीवाली देवताभ्यः यामी देवताभ्यः रौद्री देवताभ्यः वारुणी देवताभ्यः ब्राहस्पत्यै देवताभ्यः ओं भू देवताभ्यः ओं भुवो देवताभ्यः ओं स्वर्देवताभ्यः ओं भूः भुवः स्वर्देवताभ्यः अखण्ड ब्रह्माण्डयाग देवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः।

उत्पन्नम् अमृतं दिव्यं प्राक्क्षीरो दधि मन्थनात् अन्नम्
अमृत रूपेण नैवेधं प्रति गृह्यताम्।

(इष्ट देवता का ध्यान करते हुए पढ़ें)

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत तिथै अद्य अमुक मासस्य
आमुक पक्षस्य, तिथौ अमुकायां आत्मनो वाङ्मन कायो
पार्जित पाप निवारणार्थ ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः

(मातृकायों को बलि) "चुट देना"

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा खेचरी
भूचरीं रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा
आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः समालभनं गन्धो नमः अर्घो
नमः पुष्पं नमः

(प्रेप्युन की थाली चुटू के साथ सात म्याचियां अथवा
सात छोटे-छोटे प्रसाद के भाग रखे हुए होते हैं)

(पहली म्यची अथवा भाग को हाथ से स्पर्श करते हुए पढ़ें)

भगवते वासदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन समर्पयामि नमः

(दूसरी म्यची को स्पर्श करते हुए पढ़ें)

भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः

(तीसरी म्यची को स्पर्श करते हुए पढ़ें)

भगवते विनायकाय अन्नं समर्पयामि नमः

(चौथी म्यची को स्पर्श करते हुए पढ़ें)

ह्रां ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः

(पांचवी म्यची को स्पर्श करते हुए पढ़ें)

इष्ट देवी भवत्यै अन्नं मोद कान् मिष्ठान्न क्षीरं समर्पयामि नमः

(अंतिम दो भागों या दो म्यचयों पर अर्घ पानी डालते हुए पढ़ें)

यस्मिन् निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम क्षां क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः सर्वाभय वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति दधातु।।

१. लक्ष्मी राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीम अध्वनि
क्रव्याद द्विपसर्प भाजि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत-प्रेत-पिशाच-जम्बुक-भये, स्मृत्वा महा भैरवीं।
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय प्लवे।।

२. प्रातः काले कुमारी कुमुद कलिकया जप्यमालां जपन्ती।
मध्याह्ने प्रौड रूपा विकसित वदना चारुनेत्रा विशाला
सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलित कुचयुगे मुण्डमाला वहन्ती।
सा देवी दिव्यदेहा हरिहर नमिता पातु नो ह्यादिमुद्रा।।

३. संसारा र्णवतारिणीं रविशशि कोटि प्रभां सुप्रभां।
पापा तङ्कनिवारिणीं हरिहर ब्रह्मादिभिः सुंस्तुताम।
दारिद्रस्य विनाशिनीं सुकृतिनां जाड्यं हरन्तीं भृशम
ज्ञानान्धमतेः कवित्व जननीं ज्वाला मुखीं नौयहम।।

४. भक्तानां सिद्धिदात्री नलिनयुग करा श्वेतपद्म सनस्था।
लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना सर्व दैत्येन्द्रहर्त्रीं।
वागीशी सिद्धिकर्त्री सकलमुनि जनैः सेविता या भवानी, नौम्यहं नौम्यहं त्वां हरिहर प्रणतां शरिकां नौमि नौमि।

५. मार्तनमामि कमले कमलायताक्षि श्री विष्णु हृत्कमल वासिनि विश्वमातः।
क्षीरोदजे कमलको-मलगर्भ गौरि लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये।।

६. उत्तप्त हेम रुचिरे त्रिपुरे पुनीहि।
चेत-श्चिरन्तनं-अघौघवनं लुनीहि, कारागृहे निगड-बन्धन-पीडितस्य, त्वत् संस्मृतौ झट् इति म निगड़ा स्त्रटयन्तु।।

७. आनन्द सुन्दर पुरन्दर, मुक्त माल्यं।
मौ लौ हठेन निहितं, महिषा सुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जुं।
मञ्जीर-शिञ्जित-मनोहरम् अम्बिकायाः।।

८. सौन्दर्य-विभ्रम-भुवो भुवनाधि-पत्य।
सम्पति कल्पतरव स्त्रिपुरे जयन्ति।
एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध।
पुर्णेन्दव स्त्वयि जगत् जननि प्रणामाः।।

९. ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र रश्मि,
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै,
वागीश्वरी ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमातः
अन्त् बहिश्च कृतं संस्थितये नमस्ते।।

१०. अजानन्तो यान्ति क्षयम् अवश्यम् अन्योन्य कलहे।
अमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः
जगत् मातर जन्म ज्वर भय तमः कौमुदि वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणम उपयामो भगवतीम्।।

११.ददातीष्टान्- भोगान क्षपयति रिपून् हन्ति विपदो,
दहत्याधीन व्याधीन शमयति सुखानि प्रतनुते,
हठात् अन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्ट विरहं।
सकृत् ध्याता देवी किम् इव निर अवद्यंन कुरुते।।

१२.पिता माता भ्राता सुहृत् अनुचरः सद्म गृहिणी।
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भय मोहान्ध तमसं महाज्योत्सने
! मात-भर्व करुणया सन्निधिकरी।।

१३.भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा, मितिस्तोतं
वांञ्छन्कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसा युज्य पदवीं, मुकन्द
ब्रह्मन्द्र स्फुट मुकुटनीरा जितपदम्।।

१४.त्वदन्यः पाणिभ्याम-भय वरदो दैवत गणः।
त्वमेका नैवासि प्रकटित वरा भीत्य भिनिया।
भ्यात त्रातुं दातुं वरमपि च वाञ्छा समधिकं,
शरणये लोकानां त्व हि चरणावेव निपुणौ।।

१५.न जानामि ध्यानं त्व चरणयो प्रीतिजननं।
न जानामि न्यासं मननं अपि मातर्न गिरिजे।
तदे तद क्षन्तव्यं न खलु स्तव रोषः समुचितं
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।

१६.काला भ्राभां कटाक्षैर रिकुल-भयदां मौलि बद्धेन्दु रेखां।
शंख चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करै रुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम।
सिंहस्कन्धा-धिरूढ़ां त्रिभुवनम-खिलं तेजसा पूरयन्तीं।
ध्यायेद् दुर्गा जयाख्यां त्रिदशपरिव्रतां सेवितां सिद्धिकामै।।

१७.देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मार्तजगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि
चराचरस्य।।

१८.किं किं दुःखं दनुजदलिनि, क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि ख्याप्यते न स्तुतायाम्।
का का सिद्धिः सुरवर-नुते प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिन्वते, चितम् आलम्बितायाम्।।

१९.ये देवि ! दुर्धर - कृतान्त - मुखान्तरस्था
ये कालि ! कालाघन - पाश - नितान्त बद्धाः
ये चण्डि ! चण्ड-गुरू-कल्मष-सिन्धुमग्ना
स्तान् पासि मोचयसि तारयसि - स्मृतैव।।

२०.शब्द-ब्रह्म-मयि स्वच्छे ! देवि ! त्रिपुर-सुन्दरि ! यथा
शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि।।

२१.नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषका अवस्था
शम्भवी मेस्तु प्रसन्नेस्तु गुरुः सदाः।।

२२.दर्शनात् पापशमनी जपात्-मृत्युविनाशिनी पुजिता
दुःख-दौर्भाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी।।

२३.नमामि यामिनी-नाथ-लेखा-लङ्कृत कुन्तलाम् भवानीं
भवसन्ताप-निर्वापण सुधानदीम्।।

२४.मन्त्रहीनं क्रिया हीनं विधिहीनं च यत्गतम् त्वया
तत्-क्षम्यतां देवि् कृपया परमेश्वरी।।

ॐ

१. माभर्मन्दमनो विचिन्त्य बहुधा यानिश्वरं यातना,
नार्मीन प्रभवन्ति पापरिश्वः स्वामीमनु श्रीधराः
आलस्यं व्यपनीय भक्ति सुलभं ध्यास्व नारायणं।
लोकस्य व्यसना पनोदनकरो दासस्य किं न क्षमः।

२. पूजितोऽसि मया भक्तया भगवन्कमलापते।।
सलक्षमी को मनस्यान्तविर्श्व विश्रन्ति हेतवे।।

३. ॐ चन्दन च महा पुण्यं पवित्रं पापनाशनम।
आपदा हरते नित्यं लक्ष्मी भवतु सम्पदा।।

देवि को पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा,
भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा गतम्।।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा
वचसा चोरसा मनसा च अष्टांग नमस्कारं करोमि नमः।।

क्षमा प्रार्थना

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया दासोऽयमिति
मां मत्वा क्षमत्व परमेश्वरि
आवाहन न जानामि न जानामि विसर्जनम्
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि,
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि,
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्ण तदस्तु मे

अपराध शतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिकै
इदानी-मनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा करु
अज्ञानाद्वि स्मृते भ्रान्त्यां यन्नयून-मधिकं कृतमं
तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि,
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्द विग्रहे
गृहाणा-र्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि,
गुह्यातिगुह्यगौप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्
सर्द्धिभवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।

तर्पणः सीधा हाथ रखते हुए पढ़ें

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नमः औषधिभ्यः नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते कृणोमि। इत्येतासामेव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यमाप्नोति य एवं विद्धान्स्वाध्यायमधीते।।

शुभ समाप्तम्

❖❖❖

भाग-२ (मध्य रात्री)

ॐ श्री गणेशाय नमः

गौरी पुत्रं त्रिनेत्रं गजमुखसहितं नागयज्ञोपवीतं
पद्माक्षं सर्वभक्षम सकलजनप्रियं सर्वगन्धर्विपूज्यम्
संपूर्ण भालचन्द्रं वरदमतिबलं हन्तृकं चासुराणां
हेरम्बमादिदेवं गणपतिममलं सिद्धिदातारमीडे ।।
नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्तधराय च ।
नमः ईश्वरपुत्राय श्री गणेशाय नमो नमः ।।
विष भयविनाशं दुःख दार्ध्रि नाशं ।
सकल सुखविकासं श्री गणेशं नमामि ।।
महागणपतिं देवं महासत्यं महाबलं ।
महाविघ्न हरंदेवं नमामि शृणा मुक्तये ।।

श्री गणेश स्तुति (आरती)

१. हेमज़ा सुतं भजं गणेशं ईशनन्दनम्
एक दन्त वक्रतुण्ड नागयज्ञोसूत्रकम्
रक्त गात्र धूम्रनेत्र शकुल वस्त्रमडितम्
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तु ते गजाननम्

२. पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणीम्
अग्निकोटि सूर्य ज्योति वज्र कोटिनिर्मलम्
चित्रमाल भक्ति जाल बालचन्द्र शोभितम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम्

३. विश्ववीर्य विश्वदीर्घ विश्वकर्म निर्मलम्
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र-तत्र पूजितम्
चतुर्मुखं चर्तुभुजं सेवितं चतुर्युगम्
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्

४. भूतभव्य हव्यकव्य भव भार्गव वन्दितम्
देव वहिन कालजाल लोकपाल वन्दितं
पूर्णब्रह्म सूर्य वर्ण पुरुषं पुरान्तकं
कल्पवृक्ष .....

५. ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधानदायकम्
यज्ञकर्म सर्वं धर्म वर्ण वर्णरुचितम्
भूतधूम्र दुष्ट मुष्ट दान्वै तर्दाचितं
कल्पवृक्ष .....

६. हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्
शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चंदन लीपितम
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टिदायकं
कल्पवृक्ष .....

७. नमोस्तु ते गणेश्वर्म नमोस्तु ते लम्बोदरं
कल्पवृक्ष .....

महागणेशः

पादन लगय पा'र्य पा'र्य ।
आनन्द गण टाठि म्याने ।।
आमित अनाथ छिय शरणय ।
पादन पेमत्य परनय ।
गओडञ करअ ब स्मरण चानीय ।। आनन्द ....
युस गोडअ ध्यान करि च्योनय ।
तस सिद्धि सपदानय ।
तस छुक दिवान पनिन माये ।। आनन्द .....
आदि दीव नाव छुय च्योनिये ।।
सिद्धि दाता च्य वनानिय ।
थावतम् पयठ पनुन साये ।। आनन्द .....
गौवरी पुत्र छिय च्य वनान ।
महा गणेशः दितम पननी जान ।
अदहा म्य संसार त्रयावे ।। आनन्द .....
वेद छिय ती वनानी ।
गोड़ कर पूजा गणेशसय ।।
पयठ कनि छुक च्यय हर जाये ।। आनन्द ....
गोढअ गच्छि हर कुनि कामे ।
महागणेश सुन्द नाव स्वरुनुय ।
शास्त्र वनान जाय जाये ।। आनन्द .....
युस न गोढ़ च्यान्य पूजा करी ।
तस कतयौ सिद्धी सपदी ।

पानय रोज़ि हा अडवाने।। आनन्द .....

गगरस पयट छुक सवारि।

महागणेश बोज़ सअन ज़आरी।

कुस न च्योन महिमा जाने।। आनन्द .....

महा गणेशः विनती बोजतम।

सन्न मुख हृदयस रोजतम।

युथ हा सपदयम म्य च्यान माये।। आनन्द ...

ॐ नमो भवानी

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणिमुकुटवतीं रत्नताटङ्करम्यां

हस्ताम्भोजैः सपाशाङ्कुशमदनधनुः सायकैर्विस्फुरन्तीम्

आपीनोन्तङ्गवक्षो रुहतटविलुठत्तारहारोज्वलाङ्गीं

ध्यायाम्यओंभोरहस्थामरुण, विवसनामीश्वरीमीश्वराणाम्

♦♦♦

महाराज्ञिनया नावस लगय पा'र्य-पा'र्य

आरहत्य व्यन बोज़ि म्यान्य ज़ारिये

पादि कमलन तल ब आसय,

करनि चाजिय अस्तुती।

मोक्ष दिम बोड वर्ग दिम हे, भर्ग शिखा भगवती।।

१. गोम नेत्रन खून जा'री,

छुस व्यय कुन ज़ारी करान।

भास प्रत्यक्ष कास ख्अ'री,

असि छि पापव वलिमती।। पादि ....

२. चाजि आशायि योत ब आसै,

ना उमेद नैरै नः ज़ांह।

या म्य वर दिम मोक्ष दामुक,
नतः छुसै प्रारान यती।। चरण .....

३. लोल बागस पोश फोलि म्य,
बेरि चाञे चा'र्य चा'र्य।
शेरि लागै भावः कोसम,
शोल. व. नि कारे प'ति।। चरण ...

४. क्या वनव अ'सि मंद छेमति।
चन्द छ'नि सोदा करान।
कर दया वोञ वुछ म तथकुन,
शर्मि सति अ'सि गलिमती।। पादि ..

५. चाञि गुण विस्तारनुक ताकत,
अनीय कुस कस वनिय।
छुय च्यय जय जय शाम सोंदरी,
जाम: शूभान छी छ'ती।। पादि .....

६. ज्ञान दाता मोक्ष दाता
छक जगत माता च्य छख।
हे भवानी कर म्य वाणी,
स्यद्ध मुखस दिम सरस्वती।। पादि .

७. पज़ि मन युस भक्ति चा'ञी,
करि निष्कल राथ दिन।
क्या छु संशय तसंदि बापत,
मोक्ष दामकि बर व'थी। पादि .....

८. चा'नि गुण छुस बो विचारन,
पन ओमकि खारान ब, छुस।

अबसनकि वर, दोन कुनय कर,
नत छु आछुर क'ति कती। पादि ....

९. सर्व व्यापक छख च़ो पारी,
अ'सि छि शारी क्या वुछव।
वोन्य च़्ये रुस्त कुस बोज़ि ज़ारी।
हाव मोख प्यठ पर'बती।। पादि .....

१०. कर्म हीनन धर्म हीनन,
कर्त्तव्यन म्यानयन म वुछ।
डाल स्योध अथ कर्म लानिस,
प्रक्रमस चा'निस खती।। पादि ....

११. वील. ज़ा'री बोज़ दासस,
रोज़ सन्तुष्ट सर्वदा।
छुय च़्यय रौशन छुस ब तोषण,
च़्यय म्य बखचुम थ'ज़ गती।। पादि ...

◆◆◆

किं किं दुखम दनुजदलनीय खीयते न समृतायां
का का कीर्ति कुलकमलनीय क्षापयते न सुत्तायां
का का सिद्ध सुरक्रनुते प्राप्तयते नार्चतायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चितमालम्बितायाम।।

अथ

कम सना दोख छि तिम ही दोखन गालवनि
यिम गलन चा'नि सुमरनि स'त्य।
कोस छि नेक ना'मी ही कोलस खार'वनि,
योस न बनि चाने तोतायि स'त्य।

को'स को'स छि से'दी ही से'दी दात्री,
योस न प्राप्त सपदि चानि पूज़ायि सूत्य।
कम कम छि तिम योग ही ज़गत अम्बा,
यिम न, स्यद बनन चानि च्यनतन स'त्य।।
(आय शरण)

लीला

ॐ श्रीमत ही भवा'नी छम में आशा चा'नी
छम मे आशा बेढ वोमेदा, केवल आशा चानीय
क्षणसय मंज़ दोख त संकट दूर करतय ़च्यय म्या'नी।।
छय ़च्यय अरदाह बो'ज़ भवा'नी,
छख सहस प्यठ च्य-सवार,
अन्दिय अन्दिय छी दीवता च्य सा'री
श्री करान ़च्यय ज़ारपार।
अष्ट सय्दी आदीन ़च्यय छी।
पाद चाजि न्याथ छला'नी।
क्षणसय मंज़ दोख त, संकट
दूर करतय, ़च्यय म्यानि।
सिर्ययि तय बेय' चन्द्रम छुय
प्रारान चेय हुकमस।
कर करि मा'ज भवान्य आज्ञां।
प्रकाश बनि ज़गतस।
़च्यानि प्रकाशि किन्य छु सन्तोष्ट
त्रोभुवन रोज़ा'नी।।
क्षणसय मंज़ दोख त संकट,
दूर करतम च म्यानि

ये'लि यन्द्राज़, बे'यि दीव.अन्य,
तंग महिशासोरनय।
यन्दराज़ ओय च़्यय शरनय,
पादन च़्यय प्योय परणय
पत, पत, तस - दीवताह आय,
फ्रक ह'त्य त दोरा'नी।
क्षणसय मन्ज़ दोख त संकट
दूर करतय च़्यय मयानि।।
बूजुथ तिहुन्द हाल सोरुय।
अद, महिशासोर, सय।
वात, नोवथन पाताल येलि,
ज़ीर दिचथस खोर, सूत्य
मोकला'व्यथक भयि निश दीव
करथक मेहरबा'नी।
क्षणसय मन्ज़ दोख त संकट,
दूर करतय च़्यय म्यानि
ॐ शबद, छख सर्वशक्तिमान,
महामाया च़्यय वनान।
काम, क्रूंध, लूभ, मोह त अन्धकार
भक्तयन छख च कासान।
च्यानि भक्तय छी शिव शक्ति रूप
ध्यान च्योन दारा'नी।।
क्षणसय मंज़ दोख त संकट
दूर करतय च़्यय म्यानि।
बोज़ान छख विनती च़्यय
ये'ति चोनुय छु दरबार,

च्यानि हुकम सू;'त्य सारि ज़गतुक
छु चलान अद कारबार।
अस्यति आमत्य विनती करने'
दोरान त लारानी
क्षणसय मंज़ दोख त संकट
दूर करतय च़्यय म्यानि।।
मा'ज बोज़तम छय में हाजथ,
अख भक्ती म्यय चा'नी।
गरि गरि रोज़तम में सन्मोख,
हृदयस मंज़ भवानी।
सरस्वती हुन्द प्रसाद युथ में बनि
नेरि अमृत वाणी।
क्षणसय मन्ज़ दोख त संकट
दूर करतय च़्य म्यानि।।

♦♦♦

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव
निवारय महामृत्युं मृत्युंजय नमोस्तुते !
मृत्युंजय महादेव पाहि मां शरणागतम्
जन्ममृत्यु ज़रारोगैः पीड़ितं भवबन्धनात् !

ॐ नमः शिवाय

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुज़गेन्द्र हारम।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।

अर्थ

काफूर रंग सफेद दयायि हुन्द युस अवतार
संसारुक सार वासुक हटि यस छु हार
हृदय कमलन मन्ज़ फेरवुन यूस भारं भार
भवानी सहित तस शिवस म्योन नमस्कार।

♦♦♦

आधीनाम अगदं दिव्यं व्याधीनां मुलकृन्तनम
उपद्रवाणां दलनं महादेवम् उपास्महे।

अर्थ

अधियन हुन्द युस अवषधि छु आसवुन
व्याधियन हुन्द युस मूल गालान
कठिञिण उपद्रवन द्रोत युस छु वायान्
तस महादेवस करः भु पूज़ा

♦♦♦

अहं पापी पाप क्षिपण निपुणाः शंकर भवान्
अहं भीतो भीताँभयवितरणे ते व्यसनिता
अहं दीनो दीनोद्धरण विधि सज्जस्त्वदितरत्
न जानेहं वक्तुं कुरू सकलशोच्ये मयि कृपाम्।

अर्थ

ही शंकर छुस ब पापी आसवुन चूय पापन छुक नाश करान
खूचमुत छुस ब भियि खोफ छुम म्य बासान
चय अभय दिवान चय भय कासान !

छुस ब दीन बियि आरत्येन हुन्द ओरुत,
आरुत्येंन भवसर चय तारान
कर दया म्य बुद्धिहीनस प्यठ च पानय
अमिखोत ज्याद़ छुस न क्येंहति ज़ानान

♦♦♦

जनस्त्वद्पादाब्जश्रवण मनन ध्याननिपुणः
स्वयं ते निस्तीर्णा न खलु करुणा तेषू करणा
भवे लीने दीने मयि मनन-हीने न करुणा
कथं नाथ ख्यात्तुमसि करुणा सागर इति !

अर्थ

ही शंकर च्यानि चरण कमलुक युस
करि श्रवण मनन ब्यइ निदि ध्यासन
तरि पाने सु भवसरह हाजत तस
चानिन कटाक्षण हुन्द कति रोज़न।
संसारस मन्ज़ फटिमतिस म्य दुखियस
विचार रुसतिस त म्य अनाथस
यलि करख न दया म्य मूढभाव सोस्तिस
नाव चोन दयासागरवन ब कस
कति सपदि नाव च्योन मशहूर जगतस
शंकर तारान छु भवसागरस।।

♦♦♦

शिव आरती

छुस शेवजियस कित्थ ब्यल त पोश चारान।
प्रारान लूसुम म्य दोह
लछिनाव्य च्येय कित्त अछि पोश चारान।
प्रारान .....

गुड बो दिमयो अशिके दारे प्यारे
दर्शुन म्य हाव
कालस त्रिशूल हथ्य पत छुख लारान।
प्रारान .....

ही शेव बोजतम म्यन लोल आर्थी
हा म्यानि पार्थीश्वरो
जटि छय गङ्गा अमृत सारान।
प्रारान .....

छुय नित्र म्योन झूल करयो ब गूर-गूर
ललवथ सूरमत्यो
प्राननाथा प्राण म्यान्य चेय पत लारान।
प्रारान .....

दूरि मत रोज़तम चूरि कोहन त बालन
सहन त शालन सूत्य
दूर्यर बुनो ज़रै छुसया खून हारान।
प्रारान .....

बुजिरच्य थर थर कासतम म्य मर मर
गछिनय च्यय ज़र ज़र शङ्कर जी
फुचिमचि नावि म्यानि नाव चोन तारान।
प्रारान .....

शेव लीला म्यानि गरि लागै गुलाब शेरि
यित म्यानि खाम लरि प्रकाश हाव
मुक्ति प्रावान नावचोन तारान।
प्रारान .....

गाश हावतम अनिगटि वल शेव अकि लटि
वासुख वलिथ हटि दशुर्न म्य हाव
भवसागरस मन्ज़ नाव चोन तारान। प्रारान ....

♦♦♦

(भवानी सहस्रनाम)

अथ भवानीनामसहस्रस्तुतिः

ॐ श्री गणेशाय नमः ।। ॐ नमो भवान्यै

ॐ हरि शंख कृपाण खेट बाणान्,
सुधनुः शुलक तर्जनीं दधाना ।
भवतां महिषोत्तमाङ्ग संस्थां,
नवदूर्वा सदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ।

ॐ शंख त्रिशूलशरचापकरां त्रिनेत्रां
तिग्मेतरांशुकलया विलसत्किरीटाम् ।
सिंहस्थितामसुरसिद्धनुतां च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितदुःखहरां नमामि ।१।

ॐ अकुलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फुरन्ती ।
मधुरमधुपिवन्ती कण्टाकान्भक्षयन्ती ।
दुरितमअपहरन्ती साधकान्पोषयन्ती ।
जयति जगति देवी सुन्दरी क्रीड्यन्ती ।२।

चर्तुभुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दुवदनप्रभाम् ।
खड्गशक्तिधरां देवीं वरदाभयपाणिकाम् ।३।

प्रेतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम्
भवानीं कालसंहारबद्धमुद्राविभूषिताम् ।४।

जगत्स्थितिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः ।
स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम् ।५।

ॐ नमो भवान्यै ।।

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् ।
ध्यानोपरतमासीनं प्रसन्नमुखपङ्कजम् ।६ ।
सुरासुरशिरोरत्नरञ्जितताङ्घ्रियुगं प्रभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धाञ्जलिरभाषत ।७ ।

ॐ श्री नन्दिकेश्वर उवाच

देवदेव जगतनाथ संशयोस्ति महान्म ।
रहस्मेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तवत्सलम् ।७ ।
देवतायास्त्व्या कस्याः स्तोत्रमेतद्दिवानिशम् ।
पठ्यतेऽविरतं नाथ ! त्वत्तः किमपरं परम्८ ।
इति पृष्टस्तदा देवो नन्दिकेन जगद्गुरूः ।
प्रोवाच भगवाने को विकसन्ने?पङ्कजः ।१० ।

श्री भगवानुवाच

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत् ।
स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यं कथयामि तत् ।११ ।
पुरा कल्पक्षये लोकान्सिसृक्षुर्मूढचेतसा ।
गुणत्रयमयी शक्तिर्मूलप्रकृतिसंज्ञिता ।१२ ।
तस्यामहं समुत्पन्नस्तत्त्वैस्तैर्महदादिभिः ।
चेतनेति ततः शक्तिर्मां काप्यालिङ्ग्य तस्थुषी ।१३ ।
हेतुः संकल्पजालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा ।
इच्छेति परमा शक्तिरुन्मिमील ततः परम् ।१४ ।
ततो वागिति विख्याता शाक्तिः शब्दमयी परा ।
प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती ।१५ ।

ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा।
सिद्धिदा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनी ।१६।
तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते।
तयैतत्पाल्यते सर्वं तस्यामेव प्रलीयते ।१७।
अर्चिता प्रणता ध्याता सर्वभावविनिश्चिता।
आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।१८।
तस्या अनुग्रहादेव तामेव स्तुतवानहम्
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैस्त्रैलोक्यप्राणिपूजितै ।१९।
स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा।
तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वरं पदमुत्तमम् ।२०।
तत्प्रभावान्मया सृष्टं जगदेतत् चराचरम्।
ससुरासुरगन्धर्व यक्षराक्षसमानवम् ।२१।
संपन्नंग स समुद्रं च सशैलवनकाननम्।
सराशिग्रहनक्षत्रं पंचभूतगुणान्वितम् ।२२।
नन्दिन्नामसहस्रेण स्तवेनानेन सर्वदा।
स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रहकारिणीम् ।२३।
इत्युक्तोपरतं देवं चराचरगुरूं विभुम्,
प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रोवाच परमेश्वरम् ।२४।

श्री नन्दिकेश्वर उवाच

भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्पते,
भक्तोऽस्मि तव दासोऽस्मि प्रसादः क्रियतां मयि ।२५।
देव्या स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि,
श्रोतुमिच्छाम्यहं देव प्रभावमपि चास्य तु ।२६।

श्री भगवान् उवाच

ृणु नन्दिन्महाभाग स्तवराजमिमं शुभम्,
हस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम्!२७।
ुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः,
त्रैकालं श्रद्धया युक्तैर्नातः परतरः स्तवः।२७।

ॐ अस्य श्री भवानीनामसहस्रस्तवराज्स्य,
महादेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, आद्या शक्तिः,
भगवती, भवानी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः,
क्लीं कीलंक, आत्मनो वाङ्मनः कायो- पार्जितपापनिवारणार्थे
सकलकामना सिद्यार्थे पाठे/होमे विनियोगः।

अथ करन्यासः

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ महामायायै तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ गिरीशप्रियायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ करालिन्यै करतलकरपृष्ठाम्यां नमः।

अथ षडङ्गन्यासः

ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः।
ॐ महामायायै शिरसे स्वाहा।
ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट्।
ॐ गिरीशप्रियायै कवचायहुम्।
ॐ गौर्यै नेत्राभ्यां वौषट्।
ॐ करालिन्यै अस्त्रायफट्।

ततः प्राणायामः

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं रां क्लीं सा भगवत्यै राज्ञयै ह्रीं स्वाहा
(इस मंत्र से प्राणायाम कीजिए)

अथ ध्यानम्

अर्धेन्दुमौलिमिममलाममराभिवन्द्याम-
म्भोजपाशसृणिरक्तकपालहस्ताम्।
रक्ताङ्गरागरशनाभरणां त्रिनेत्रां
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह्लाङ्गीम्।
बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे।

१) श्री शङ्कचक्र मुसलाम्बुजयुग्महसताम
नाग्रेन्द्रहार वलयाङ्कितकण्ठ मालाम्।
सिन्दूर कुङ्कुम सहस्त्रमरीचि दीप्तां
श्री शारिकां त्रिनयनां हृदये स्मिरामि।।

२) याद्वादर्शाक परिमण्डित मूर्तिरेका
सिंहासनास्थितिमर्तामुरगै वृतां च।
देवीमनक्षगतिमीश्वरितां प्रपन्नां,
तां नौमि भार्गवपुषीं परमार्थ राज्ञीम्।।

३) ज्वालापर्वत संस्थितां त्रिनयनां
पीठत्रयाधिष्ठितां ज्वलाडम्बर
भूषितां सुवदनां नित्याम दृश्यां जनै।
षटचक्रांम्बुजमध्यगां वरगदाम्भोजाभर्यान्बी

भ्रतीं चिद्रूपां सकर्लाथ
दीपनकरी ज्वला मुखीं नौम्यहम।।

४) गणेशवटुकस्तुता रतिसहाय कामान्विता
स्मरारिवरविषृरा कुसुमबाण बौणर्युता
अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च
सिद्धैस्त्रिभिः कदम्बवनमव्यगा त्रिपुर-सुन्दरी पातुनः।।

५) प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कुष्माण्डेति-
चर्तुथकम्।। पञ्चमं स्कन्दमतेति षष्ठं कात्यानीति
च सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्। नवमं
सिद्धिधात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिता।।

ॐ बीजत्रयायै विद्महे, तत्प्रधानायै धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।३।

मूलम् - ॐ श्री श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्री श्रीं भवानीं हुं फट् स्वाहा
।१०८।

ॐ सुभगाये विध्महे कामालिन्ये धीमहि।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात।।ॐ।।

श्री ईश्वर उवाच

ॐ महाविद्या जगन्माता महालक्ष्मीः शिवप्रिया,
विष्णुमाया शुभा शान्ता सिद्धा सिद्धसरस्वती।१।

क्षमा कान्तिः प्रभा ज्योत्सना पार्वती सर्वमङ्गला,
हिङ्गुला चण्डिका दान्ता पद्मा लक्ष्मीर्हरिप्रिया।२।

त्रिपुरा नन्दिनी नन्दा सुनन्दा सुरवन्दिता,
यज्ञविद्या महामाया वेदमाता सुधा धृतिः ।३ ।

प्रीतिर्प्रथा प्रसिद्धा च मृडानि विन्ध्यवासिनी,
सिद्धविद्या महाशक्तिः पृथ्वी नारदसेविता ।४ ।

पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पद्मलोचना,
प्रह्लादिनी महामाया दुर्गा दुगर्तिनाशिनी ।५ ।

ज्वालामुखी सुगोत्रा च ज्योतिः कुमुदहासिनी,
दुर्गमा दुर्लभा विद्या स्वर्गतिः पुरवासिनी ।६ ।

अपर्णा शाम्बरीमाया मदिरा मृदुहासिनी,
कुलवागीश्वरी नित्या नित्यक्लिन्ना कृशोदरी ।७ ।

कामेश्वरी च नीला च भीरुण्डा वाह्निवासिनी,
लम्वोदरी महाकाली विद्याविद्येश्वरी तथा ।८ ।

नरेश्वरी च सत्या च सर्वसौभाग्यवर्धिनी,
संकर्षणी नारसिंही वैष्णवी च महोदरी ।९ ।

कांत्यायनी च चम्पा च सर्वं सम्पत्तिकारिणी,
नारायणी महानिद्रा योगनिद्रा प्रभावती ।१० ।

प्रज्ञापारमिता प्रज्ञा तारा मधुमती मधुः,
क्षीरार्णवसुधाहारा कालिका सिंहवाहिनी ।११ ।

ओंकारा वसुधाकारा चेतना कोपनाकृतिः,
अर्धबिन्दुधरा धारा विश्वमाता कलावती ।१२ ।

पद्मावती सुवस्त्रा च प्रबुद्धा च सरस्वती,
कुण्डासना जगद्धात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी ।१३।

जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हंसवाहना,
राज्यलक्ष्मीर्वषट्कारा सुधाकारा सुधात्मिका ।१४।

राज्यनीतिस्त्रयी वार्ता दण्डनीतिः क्रियावती,
सद्भेतिस्तारिणी श्रद्धा सद्गतिः सत्परायणा ।१५।

सिन्धुर्मन्दाकिनी गंगा यमुना च सरस्वती,
गोदावरी विपाशा च कावेरी च शतद्रुका ।१६।

सरयूश्चन्द्रभागा च कौशिकी गण्डकी शुचिः,
नर्मदा कर्मनाशा च चर्मण्वत्यथदेविका ।१७।

वेत्रवती वितस्ता च वरदा नरवाहना,
सती पतिव्रता साध्वी सचुक्षुः कुण्डवासिनी ।१८।

एकचक्षुः सहस्राक्षी सुश्रोणिर्भगमालिनी,
सेना श्रेणिः पताका च सुव्यूहा युद्धकांक्षिणी ।१९।

पताकिनी दयारम्भा विपञ्चीपञ्चमप्रिया,
परापरकलाकान्ता त्रिशक्तिर्मोक्षदायिनी ।२०।

ऐन्द्री माहेश्वरी ब्राह्मी कौमारी कुलवासिनी,
इच्छा भगवती शक्तिः कामधेनुः कृपावती ।२१।

वज्रायुधा वज्रहस्ता चण्डी चण्डपराक्रमा,
गौरी सुवर्णवर्णा च स्थितिसंहारकारिणी ।२२।

एकानेका महेज्या च शतबाहुर्महाभुजा,
भुजङ्गभूषणा भूषा षट्चक्रक्रमवासिनी ।२३ ।

षट्चक्रभेदिनी श्यामा कायस्था कायवर्जिता,
सुस्मिता सुमुखी क्षामा मूलप्रकृतिरीश्वरी ।२४ ।

अजा च बहुवर्णा च पुरुषार्थप्रवर्तिनी,
रक्ता नीला सिता श्यामा कृष्णा पीता च कर्बुरा ।२५

क्षुधा तृष्णा जरावृद्धा तरुणी करुणालया,
कला काष्टा मुहूर्ता च निमेषा कालरूपिणी ।२६ ।

सुवर्णरसना नासा चक्षुःस्पर्शवती रसा,
गन्धप्रिया सुगन्धा च सुस्पर्शा च मनोगतिः!२७ ।

मृगनाभिर्मृगाक्षी च कर्पूरामोदधारिणी,
पद्मयोनिः सुकेशी च सुलिङ्गा भगरूपिणी ।२८ ।

योनिमुद्रा महामुद्रा खेचरी खगगामिनी,
मधुश्रीर्माधवीवल्ली मधुमत्ता मदोद्धता ।२९ ।

मातङ्गी शुकहस्ता च पुष्पबाणेक्षुचापिनी,
रक्ताम्बरधरा क्षीबा रक्तपुष्पावतंसिनी ।३० ।

शुभ्राम्बरधरा धीरा महाश्वेता वसुप्रिया,
सुवेणिः पद्महस्ता च मुक्ताहारविभूषणा ।३१ ।

कर्पूरामोदनिःश्ववासा पद्मिनी पद्ममन्दिरा,
खड्गिनी चक्रहस्ता च भुशुण्डी परिघायुधा ।३२ ।

ापिनी पाशहस्ता च त्रिशूलवरधारिनी,
ुबाणा शक्तिहस्ता च मयूरवरवाह्ना ।३३।

ायुधधरा वीरा वीरपानमदोत्कटा,
ासुधा वसुधारा च जया शाकम्भरी शिवा ।३४।

वेजया च जयन्ती च सुस्तनी शत्रुनाशिनी,
अन्तर्वत्नी वेदशक्तिर्वरदा वरधारिणी ।३५।

शीतला च सुशीला च वालग्रहविनाशिनी,
कुमारी च सुपर्वा च कामाख्या कामवन्दिता ।३६।

जालन्धरधराऽनन्ता कामरूपनिवासिनी,
कामबीजवती सत्या सत्यधर्मपरायणा ।३७।

स्थूलमार्गस्थिता सूक्ष्मा सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिनी,
षट्कोणा च त्रिकोणा च त्रिनेत्रा त्रिपुरसुन्दरी ।३८।

वृषप्रिया वृषारूढा महिषासुरघातिनी,
शुम्भदर्पहरा दीप्ता दीप्तपावकसन्निभा ।३९।

कपालकुण्डला दीर्घा शिवादूती घनध्वनिः ।४०।

सिद्धिदा बुद्धिदा नित्या सत्यमार्गप्रबोधिनी,
कम्बुग्रीवा वसुमती छत्रच्छायाकृतालया ।४१।

जगद्गर्भा कुण्डलिनो भुजकारशायिनी,
प्रोल्लसत्सप्तपद्मा च नाभिनालमृणालिनी ।४२।

मूलाधारा निराकारा वह्निकुण्डकृतालया,
वायुकुण्डसुखासीना निराधारा निराश्रया ।४३।

श्वासोच्छ्वासगतिर्जीवा ग्राहिणी वाह्निसंश्रया,
वह्निवल्लीतन्तुसमुत्थाना षड्रसास्वादलोलुपा ।४४।

तपस्विनी तपः सिद्धिः तापसी च तपः प्रिया,
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता तपसः सिद्धिदायिनी ।४५।

सप्तधातुमयीमूर्तिः सप्तधात्वन्तराश्रया,
देहपुष्टिर्मनस्तुष्टिरन्नपुष्टिर्बलोद्धता ।४६।

औषधिर्वैद्यमाता च द्रव्यशक्ति प्रभाविनी,
वैद्या वैद्याचिकित्सा च सुपथ्या रोगनाशिनी ।४७।

मृगया मृगमांसादा मृगत्वङ्मृगलोचना,
वागुरा बन्धरूपा च वंधरूपा वधोद्धता ।४८।

बन्दी बन्दिस्तुताकारा काराबन्धविमोचनी,
शृङ्खला खलहा विद्युद्दृढबन्धविमोचनी ।४९।

अम्बिकाऽम्बालिकाचाम्बा स्वक्षा साधुजनार्चिता,
कौलिकी कुलविद्या च सुकुला कुलपूजिता ।५०।

कालचक्रभ्रमि भ्रान्ता विभ्रमा भ्रमनाशिनी,
वात्यालि मेघमाला च सुवृष्टिः सस्यवर्द्धिनी ।५१।

अकारा च इकारा च उकारैकाररूपिणी,
ह्रींकारी बीजरूपा च क्लींकाराम्बरवासिनी ।५२।

सर्वाक्षरमयीशक्तिरक्षरा वर्णमालिनी,
सिन्दूरारुणवक्त्रा च सिन्दूरतिलकप्रिया ।५३।

वश्या च वश्यबीजा च लोकवश्यविभाविनी,
नृपवश्या नृपैःसेव्या नृपवश्यकरी प्रिया ।५४ ।

महिषा नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी,
नृपधर्ममयी धन्य धनधान्यविवर्द्धिनी ।५५ ।

चतुर्वर्णमयीमूर्तिश्चतुर्वर्णैश्चपूजिता,
सर्वधर्ममयीसिद्धिश्चतुराश्रमवासिनी ।५६ ।

ब्राह्मणी क्षत्रिया वेश्या शूद्राचावरवर्णजा,
वेदमार्गरता यज्ञा वेदविश्रववविभाविनी ।५७ ।

अस्त्रशस्त्रमयीविद्या वरशस्त्रास्त्रधारिणी,
सुमेधा सत्यमेधा च भद्रकाल्यऽपराजिता ।५७ ।

गायत्री सत्कृतिः सन्ध्या सावित्री त्रिपदाश्रया,
त्रिसन्ध्या त्रिपदी धात्री सुपर्वा सामगायनी ।५९ ।

पाञ्चाली बालिका बाला वालक्रीडा सनातनी,
गर्भाधारधरा शून्या गर्भाशयनिवासिनी ।६० ।

सुरारिघातिनीकृत्या पूतना च तिलोत्तमा,
लज्जा रसवती नन्दा भवानी पापनाशिनी ।६१ ।

पट्टाम्बरधरा गीतिः सुगीतिज्ञनिलोचना,
सप्तस्वरमयीतन्त्री षड्जमध्यमधैवता ।६२ ।

मूर्च्छनाग्रामसंस्थाना स्वस्था स्वस्थानवासिनी,
अट्टाहासिनी प्रेता प्रेतासननिवासिनी ।६३ ।

गीतनृत्यप्रियाऽकामा तुष्टिदा पुष्टिदाक्षया,
निष्ठा सत्यप्रिया प्रज्ञा लोकेशी च सुरोत्तमा ।६४।

सविषा ज्वालिनी ज्वाला विषमोहार्तिनाशिनी,
विषारिनार्गदमनी कुरुकुल्लाऽमृतोद्भवा ।६५।

भूतभीतिहरारक्षा भूतावेशविनाशिनी,
रक्षोघ्नी राक्षसी रात्रिर्दीर्घनिद्रा दिवागतिः ।६६।

चन्द्रिका चन्द्रकान्तिश्च सूर्यकान्तिर्निशाचरी,
डाकिनी शाकिनी शिष्या हाकिनी चक्रवाकिनी ।६७।

सितासितप्रिया स्वङ्गा सकला वनदेवता,
गुरुरूपधरा गुर्वी मृत्युर्मारी विशारदा ।६८।

महामारी विनिद्रा च तन्द्रा मृत्युविनाशनी,
चन्द्रमण्डलसंकाशा चन्द्रमण्डलवासिनि ।६९।

अणिमादिगुणोपेता सुस्पृहा कामरूपिणी,
अष्टसिद्धिप्रदा प्रौढा दुष्टदानवघातिनी ।७०।

अनादिनिधनापुष्टिश्चतुर्बाहुर्चतुर्मुखी,
चतुःसमुद्रशयना चतुर्वर्गफलप्रदा ।७१।

काशपुष्पप्रतीकाशा शरत्कुमुदलोचना,
भूता भव्या भविष्या च शैलजा शैलवासिनि ।७२।

वाममार्गरता वामा शिववामाङ्गवासिनी,
वामाचारप्रिया तुष्टा लोपामुद्रा प्रबोधिनी ।७३।

भूतात्मा परमात्मा च भूतभावविविभाविनी,
मङ्गला च सुशीला च परमार्थप्रबोधिका ॥७४ ।

दक्षिणा दक्षिणामूर्तिः सुदक्षिणा हरिप्रिया,
योगिनी योगयुक्ता, च योगाङ्गगा ध्यानशालिनी ॥७५ ।

योगपट्टधरा मुक्ता मुक्तानां परमागतिः,
नारसिंही सुजन्मा च त्रिवर्गफलदायिनी ॥७६ ।

धर्मदा धनदा चैव कामदा मोक्षदा द्युतिः,
साक्षिणी क्षणदा दक्षा दक्षजा कोटिरूपिणी ॥७७ ।

क्रतुः कात्यायनीं स्वच्छा स्वच्छन्दा च कविप्रिया,
सत्यागमा बहिःस्था च काव्यशक्तिः कवित्वदा ॥७८ ।

मेनापुत्री सती माता मैनाकभगिनी तडित्,
सौदामिनी सुधामा च सुधामा धामशालिनी ॥७९ ।

सौभाग्यदायिनीद्यौश्च सुभगा द्युतिवर्द्धिनी,
श्रीः कृत्तिवसना चैव कङ्काली कलिनाशिनी ।८० ।

रक्तबीजवधोद्द्रप्ता सुतनतुर्बीजसन्ततिः,
जगज्जीवा जगद्बीजा जगत्त्रयहितैषिणी ।८१ ।

चामीकररुचिश्चान्द्रीसाक्षयाषोडशीकला,
यत्तत्पदानुबन्धा च यक्षिणी धनदार्चिता ।८२ ।

चित्रिणी चित्रमाया च विचित्रा भुवनेश्वरी,
चामुण्डा मुण्डहस्ता च चण्डमुण्डवधोद्धुरा ।८३ ।

अष्टम्येकादशी पूर्णा नवमी च चतुर्दशी,
अमा कलशहस्ता च पूर्णकुम्भपयो धरा ।८४ ।

अभीरूभैरवी भीरू भीमा त्रिपुरभैरवी,
महारुण्डा च रौद्री च महाभैरवपूजिता ।८५ ।

निर्मुण्डा हस्तिनी चण्डा करालदशनानना,
कराला विकराला च घोरघुर्घुरनादिनी ।८६ ।

रक्तदन्तोर्ध्वकेशी च बन्धूककुसुमारुणा,
कादम्बरी पटासा च काश्मीरी कुङ्कुमप्रिया ।८७ ।

क्षान्तिर्बहुसुवर्णा च रतिर्बहुसुवर्णदा,
मातङ्गिनी वरारोहा मत्तमातङ्गगामिनी ।८८ ।

हंसा हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलशिरोरुहा,
पूर्णचन्द्रमुखी श्यामा स्मितास्या श्यामकुन्तला ।८९

मषी च लेखिनी लेखा सुलेखा लेखकप्रिया,
शङ्खिनी शङ्खहस्ता च जलस्था जलदेवता ।९०

कुरुक्षेत्रावनिः काशी मथुरा काञ्च्यवन्तिका,
अयोध्या द्वारका माया तीर्था तीर्थकरप्रिया ।९१ ।

त्रिपुष्कराऽप्रमेया च कोशस्था कोशवासिनी,
कौशिकी तु कुशावर्ता कौशाम्बी कोशवर्द्धिनी ।९२

कोशदा पद्मकोशाक्षीकुसुमा कुसुमप्रिया,
तोतुला च तुलाकोटिः कूटस्था कोटराश्रया ।९३ ।

स्वयम्भूश्च सुरूपा च स्वरूपा पुणयवर्द्धिनी,
तेजस्विनी सुभिक्षा च बलदा बलदायिनी ।९४ ।

महाकोशी महावर्ता बुद्धिः सदसदात्मिका,
महाग्रहहरा सौम्या विशोका शोकनाशिनी ।९५ ।

सात्त्विकी सत्त्वसंस्था च राजसी च रजोवृता,
तामसी च तमोयुक्ता गुणत्रयविभविनी ।९६ ।

अव्यक्ता व्यक्तरूपा च वेदविद्या च शाम्भवी,
शंकराकल्पिनीकल्पा मनः संकल्पसन्ततिः ।९७ ।

सर्वलोकमयी शक्तिः सर्वश्रवणगोचरा,
सर्वज्ञानवतीवाञ्छा सर्वतत्त्वानुबोधिनी ।९८ ।

जागृति च सुषुप्तिश्च स्वप्नावस्था तुरीयका,
सत्वरा मन्दगतिर्मन्दा मदिरामोदधारिणी ।९९ ।

पानभूमिः पानपात्रा पानदानकरोद्यता,
अघूर्णा रुणनेत्रा च किञ्चिदव्यक्तभाषिणी ।१०० ।

आशापूरा च दीक्षा च दक्षा दीक्षितपूजिता,
नागवल्ली नागकन्या भोगिनी भोगवल्लभा ।१०१ ।

सर्वशास्त्रवती विद्या सुस्मृतिधर्मवादिनि,
श्रुतिः श्रुतिधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा पातालवासिनी ।१०२ ।

मीमांसा तर्कविद्या च सुभक्तिर्भक्तवत्सला,
सुनाभिर्यातना जातिर्गम्भीरा भाववर्जिता ।१०३ ।

नागपाशधरामूर्तिरगाधा नागकुण्डला,
सुचक्रा चक्रमध्यस्था चक्रकोणनिवासिनी ।१०४ ।

सर्वमन्त्रमयी विद्या सर्वमन्त्राक्षारावलिः,
मधुस्रवा स्रवन्ती च भ्रामरी भ्रमरालका ।१०५ ।

मातृमण्डलमध्यस्था मातृमण्डलवासिनी,
कुमारजननी क्रूरा सुमुखी ज्वरनाशिनी ।१०६ ।

अतीता विद्यमना च भाविनी प्रीतिमञ्जरी,
सर्वसौख्यवती युक्तिराहारपरिणामिनी ।१०७ ।

निद्यानं पञ्चभूतानां भवसागरतारिणी,
अक्रूरा च ग्रहवती विग्रहा ग्रहवर्जिता ।१०८ ।

रोहिणी भूमिगर्भा च कालभूः कालवर्तिनी,
कलंकरहिता नारी चतुष्षष्ट्यभिद्यावती ।१०९ ।

जीर्णा च जीर्णवस्त्रा च नूतना नववल्लभा,
अजरा च रतिः प्रीतिः रतिरागविवर्द्धिनी ।११० ।

पञ्चवातगतिभिन्ना पञ्चश्लेष्माशयाधरा,
पञ्चपित्तवती शक्तिः पञ्चस्थानविबोधिनी ।१११ ।

उदक्या च वृषस्यन्ती बहिः प्रस्रविणी त्र्यहम्,
रजः शुक्रधरा शक्तिर्जरायुर्गर्भधारिणी ।११२ ।

त्रिकालज्ञा त्रिलिङ्गा च त्रिमूर्तिः त्रिपुरवासिनी,
अरागा शिवतत्त्वा च कामतत्त्वानुरागिणी ।११३ ।

प्राच्यवाची प्रतीचीदिक् उदीचीदिक् विदिग्दिशाम्,
अहंकृतिरहंकारा बलिमाया बलिप्रिया ।११४।

स्रुकस्रुवा सामिधेनी च सश्रद्धा श्राद्धदेवता,
माता मातामहि तृप्तिः पितृमाता पितामही ।११५।

स्नुषा दौहित्रिणी पुत्री पौत्री नप्त्री शिशुप्रिया,
स्तनदा स्तनधारा च विश्वयोनिः स्तनन्धयी ।११६।

शिशूत्सङ्गधरा दोला दोलाक्रीडाभिनन्दिनी,
उर्वशी कदली केका विशिखा शिखिवर्तिनी ।११७।

खट्वाङ्गधारिणी खट्वा बाणपुङ्खानुवर्तिनी,
लक्ष्यप्राप्तिः कलाऽलक्षा लक्ष्या च शुभलक्षणा ।११८।

वर्तिनी सुपथाचारा परिखा च खनिर्वृतिः,
प्राकारवलया वेला मर्यादा च महोदधौ ।११९।

पौषणीशोषणीशक्तिदीर्घकेशी सुलोमश,
ललिता मांसला तन्वी वेदवेदाङ्गधारिणी ।१२०।

नरासृक्पानमत्ता च नरमुण्डास्थिभूषणा,
अक्षक्रीडारतिः शारी शारिका शुकभाषिणी ।१२१।

शाम्बरी गारुडीविद्या वारुणी वरुणार्चिता,
वाराही मुण्डहस्ता च दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरा ।१२२।

मीनमूर्तिधरा मूर्त्ता वदान्या प्रतिमाश्रया,
अमूर्ता निधिरूपा च सालिग्रामशिलाशुचिः ।१२३।

स्मृतिः संस्काररूपा च सुसंस्कारा च संस्कृतिः,
प्राकृता देशभाषा च गाथा गीतिः प्रहेलिका ।१२४।

इडा च पिङ्गला पिङ्गा सुषुम्णा सूर्यवाहिनी,
शशिस्रवा च तालुस्था काकिन्यमृतजीविनी ।१२५।

अणुरूपा बृहद्रूपा लघुरूपा गुरुस्थिरा,
स्थावरा जङ्गमा देवी कृतकर्मफलप्रदा ।१२६।

विषयाक्रान्तदेहा च निर्विशेषा जितेन्द्रिया,
विश्वरूपा चिदानन्दा परब्रह्मप्रबोधिनी ।१२७।

निर्विकारा च निर्वैरा विरतिः सत्यवर्धिनी,
पुरुषाज्ञा च भिन्ना च क्षान्तिः कैवल्यदायिनी ।१२८।

विविक्तसेविनी प्रज्ञाजनयित्री बहुश्रुतिः,
निरीहा च समस्तैका सर्वलोकैकसेविता ।१२९।

सेवा सेवाप्रिया सेव्या सेवाफलविवर्द्धिनी,
कलौ कल्किप्रिया काली दुष्टम्लेच्छविनाशिनी ।१३०।

प्रत्यञ्चा च धनुर्यष्टिः खड्गधारा दुरानतिः,
अश्वप्लुचित्श्च वल्गाच सृणिः सन्मत्तवाराणा ।१३१।

वीरभूर्वीरमाता च वीरसूर्वीरनन्दिनी,
जयश्रीर्जयदीक्षा च जयदा जयवर्द्धिनी ।१३२।

सौभाग्यसुभगाकारा सर्वसौभाग्यवर्द्धिनी,
क्षेमङ्करी सिद्धिरूपा सत्कीर्तिः पथिदेवता । १३३।

सर्वतीर्थमयीमूर्तिः सर्वदेवमयीप्रभा,
सर्वसिद्धिप्रदाशक्तिः सर्वमङ्गलमङ्गला ।१३४।

सर्वमङ्गलमङ्गले शिवे सवार्थसाधिके। शरण्ये त्र्याम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्त ते।। शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणे सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते। सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते भयेम्यस्त्राहिनो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।। सर्वाबाधा प्रशमन त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि एवमेवत्वयाकार्य मस्मद्वैरि विनाशनम्।। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि त्राहिमां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्द्धिनि। स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट संश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता। करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।। रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तुकामान् सकलानभीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।। देविप्रसीद परिपालय नोऽरिभोतेर्नित्यं यथा सुरवधादधुनैव सद्यः। पापानि सर्व जगतां प्रशभं नयाशुउत्पातपाकजनितांश्च महीप सर्गान्।। देविप्रपन्नातहरें प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेरिपाहिविश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य। यासाम्प्रतं चैदूत दैत्यतापितैरस्मिाभिरीशा च सरैर्नमस्यते। या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदा भक्ति विनम्र-मूर्तिभिः।। प्रणतानां प्रसीदत्वं देवि विश्वार्ति हारिणि त्रैलोक्य वासिनामीड्ये लोकानां वरदाभव।।

❖❖❖

फल श्रुतिः

पुण्यं सहस्रनामेदमम्बाया रुद्रभाषितम्।
चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम् ।१३५।

नातः परतरो मन्त्रो नाता परतरः स्तवः।
नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परात्परम्। १३६।

ते धन्याः कृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः।
एकवारं मुदा नित्यं येर्चयन्ति महेश्वरीम् ।१३७।

देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता।
भूयात्सा वरदा लोके साधूनां विश्वमङ्गला ।१३८।

एतामेव पुराऽऽराध्य विद्यां त्रिपुरभैरवीम्।
त्रैलोक्यमोहनं रूपमकार्षीद्भगवद्धरिः ।१३९।

इति रुद्रयामले तन्त्रे नन्दिकेश्वरसंवादे महाप्रभावो भवानीनामसहस्रस्तवराजः सम्पूर्णं ।।

अथ इन्द्राक्षीस्तोत्रम्
श्री गणेशाय नमः

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य पुरन्दर ऋषि। अनुष्टुप् छन्दः श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता। ह्रीं बीजम् श्रीं शक्तिः। क्लीं कीलकम्। गायत्री, सावित्री, सरस्वती कवचम्। आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थे सकलकामनासिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ करन्यासः

ॐ लक्ष्म्यै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वज्रहस्तायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ सहस्त्रनयनायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ इन्द्राक्षी भगवत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

अथ षडंगन्यासः

ॐ लक्ष्म्यै हृदयाय नमः। ? भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा। ॐ माहेश्वर्यै शिखायै वषट्। वज्रहस्तायै कवचाय हुं। ॐ सहस्त्रनयनायै नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ इन्द्राक्षी भगवत्यै अस्त्राय फट्।

ततः प्रणायामः

(इस मंत्र से प्राणायाम कीजिए)

मंत्र –ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कलीं इन्द्राखी क्लीं
श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।।

अथ ध्यानम

ॐ इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभाम्।
वामेहस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभयप्रदाम्।।
सहस्त्रनेत्रां सूर्याभं नानालङ्कारभूषिताम्।
प्रसन्नवदनां नित्यामप्सरोगणसेविताम्।।
श्री दुर्गां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम्।
त्रैलोक्यमोहनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।।
इन्दुग्रिसूर्यनयनां पाशाङ्कुशधरां परां।
द्विभुजां सिंहमध्यस्थां भजेहमऽभयङ्करीम्।।

गायत्री

ॐ शचीपतये विद्महे, पाकशासनाय धीमहि,
तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् ।३।

मूल मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं पें स्वाहा ।।

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता ।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नीतिविश्रुता ।१।

कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा ।
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मविदिनी ।२।

नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिङ्गला ।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिः तपस्विनी ।३।

मेघश्यामा सहस्त्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ।४।

आनन्दा भद्रजानन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।५।

इन्द्राणी चंद्ररूपा च इन्द्रशक्तिपरायणा ।
महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।६।

वारही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।७।

अनन्ता विजया पूर्णा मनस्तोषाऽपराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिाऽशिवा ।
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्धशरीरिणी ।८।

सदा सम्मोहनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी।
सर्वमङ्गल मङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौर्रि नारायणि नमोस्तुते।९।

फलश्रुतिः

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता।
आयुरारोग्यमैश्वर्य सुखसम्पत्तिकारकम्।१०।

क्षयापस्मारकुष्ठादि तापज्वरनिवारकम्।
शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात्।११।

आवर्तयेत्सहस्रेण लभते वाञ्छितं फलम्।
राजावश्यामवाप्नोति सत्यमेव न संशयः।१२।
लक्षमेकं जपेद्यस्तु साक्षाद्देवी स पश्यति।
त्रिकालं पठते नित्यं धनधान्य विवर्धनम्।१३।

अर्धरात्रे पठेत् नित्यं मुच्यते कर्मबन्धनात्।
ऐन्द्र-स्तोत्रमिदं पुण्यं जपे तु फलवर्धनम्।१४।

विनाशाय तु रोगाणामपमृत्यु हरत्युत।
राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपलुं धनम्।१५।

इच्छाकामं तु कामार्थी धमार्थी धर्ममव्ययम्।
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम्।१६।

इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः।
।।इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

◆◆◆

या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षण चण्ड मुण्ड मथिनी या रक्तबीजाशनी।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भ दैत्य दलिनी या सिद्धलक्ष्मीः परा
सा देवी नवकोटि मूर्ति सहिता मां पातु महेश्वरी ज
पापहरं नतुं बलकरं सम्पूजितं श्रीकरं।
ध्यांत मानकरं स्तुतं धनकरं सम्भाषितं सिद्धिदम्।
गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुते ते पाद पद्मद्वयं।
भक्तानां भव भीति भञ्जनकरं सिद्धयषृदं पातुनः।
माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्ति शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी।
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी त्यसि।।
अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपा
निवारणार्थं श्रीइष्टदेवीप्रीत्यर्थं भगवती आमा का
चार्वङ्गी टङ्कधारिणी तारा पार्वती याक्षिण
श्रीशारिकाभगवती श्रीशारदाभगवती श्रीमहाराज्ञी भगव
श्रीज्वालाभगवती व्रीडाभगवती वैखारीभगव
वितस्ताभगवती गङ्गाभगवती यमुनाभगव
कालिकाभगवती सिद्धलक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुरसुन्द
सहस्रनाम्नीं देवी भवानी
सपरिवारा सवाहना सायुधा साङ्गा प्रीयतां प्रीता स्तु

❖❖❖

भगवती लीला

श्री राज़-राजे़श्वरी आम.ति शरण छिय।
पुज़यि लागोय पम्पोश गुलाब मादल त. हिय।।
गौरी अम्बा अम्बुराक्षीम अहं ईडे

१. ज़गत अम्बा च़य छख मंज़ वदनस असनाव
निष्बुद्ध शुर्यन दयायि हुंद दामान प्यठ. त्राव
कल्याण. सोरत थाव स.ति अेश. फ्यरन भरन छिय -पू०

२. बाहन सिर्यन ज़चन चान्यन हुन्द प्रकाश
चरण चा'नी करान संकट. गटे छि नाश
तिह.न्ज़े गर.दि स.ति देव मुकट.जरन छिय -पू०

३. लोका लोकन ह.न्दि सत.जन कारण देव. गण
सिंहासनस चा'निस दिवान छिय प्रदिक्षण
परम दाम.कि पुरुष प्यवान परन छिय -पू०

४. षट्चक्र. रूपी च़क्र नागस छि न'नि नेरन
तेज़चि रेखायि च़ोपा'र्य त्रिकोणस फेरन
योगी ज्ञा'नी प्राणी सुय ध्यान धरन छिय -पू०

५. बुद्ध छन. वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी च्यय मन. कामनायन मंगन छिय
यछि चानि श्रद्धायि स'रित आयि स्तुतायि परन छिय -पू०

६. पनन्यन भक्तियन दासन हुंदुय प्ययनय पास
तिहन्दे पासै कुकर्मन हन्ज़ गटय म्य कास
ज्योति-स्वरूप हाव छय च्य भूतेश्वर.ञ द्र.य -पू०

७. भगवत् मायायि हं.दि रंग चा'नी छि़ रंगा रंग
चाने स.ती छुय योग छिय भोग छुय संत्संग
तप ज़प समाध क्रिया कर्म करन छिय -पू०

८. महा माया च.य छख चट असि मायां ज़ाल
असि वो.लमुत छुय गृहस्थ.कि काल. सर्पन नाल
ल'गिम.ति सा'रिय पनन्यन पनन्यन घरन छिय -पू०
९. कम भक्तियि किञ भक्तावारन खरन छिय
कथ कामि लगव क्या तगि जिन्दै मरन छिय
च.इ टेठ स'च़ चाञि स.ति अ'सि दिन दिन भरन छिय -पू०
१०.प्रसाद कर गाल ज़न्मा ज़न्मन ह.न्दि अपराध
सब्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश. पाद
इम तिम स्वरण यथ भव.सरस तरन छिय -पू०
११.चाने सूती सृष्टि गयि न'ञी जय भ'विनय
मंज़ शून्य. उत्पत्त स्थित सां'प.नी जय भ'विनय
कलर जु.गच महाराज. रा'नी शरण छिय -पू०
१२.कुनुय यलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस
ज़गत यस ज़ाव मा'जा मोला तस कुस ओस
च़ित शक्ती चाञे एक अनेक स्वरण छिय -पू०
१३.च्यय अज़पा गायत्री पांछ कारण ग्यवन छि गीत
निरित्रिगुण छख गुणन चान्यन स.ति परतीत
चाने स.तिकार अन्तःकरण करन छिय -पू०
१४.अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेष, नागस विष्णु रुपय छख भासन
सा'रिय गुण चा'नि महा पुरुषय वरन छिय -पू०
१५.च्यय किति नाना रंगै भोजन रनन छिय
च्यय निश सुवर्ण बानन ल'दित अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल भरन छिय -पू०
१६.चाञे दयायि स.ति क'डि बडयूव ब'डि-ब'डि नाव
निष्बुद्ध 'कृष्णस' निश वा'णी हुंद अमृत द्राव
परण वाल्यन ज़न्मन हन्दि दुख हरण छिय -पू०

♦♦♦

हे दयालु छुस ब. चञ्चल. लोलो।
अनुग्रह. चानि बेमार बल. लोलो।।

१. कर्म.हीन छुस आमुत संसारस
चन्द. छोन छुस लुोगमुत व्यवहारस
अविद्यायि ह'न्ज़ छम गांगल. लोलो अनु०

२. लय विक्षेप भय. स.ति छुम आवरण
मल खो.तमुत छुम अन्तः करणन
विवेक. पाञि पान बो छल लोलो अनु०

३. जान ज़ा'नि ज़ांह तिनो ज़ोनमख च़य
ज़ान दिम तिछ ज़ा'नित तव गलि दुय
दिम निश्चय युथन. ज़ांह डल. लोलो अनु०

४. छुस ब. लो.गमुत संसार. सर. सय मंज़
रोवमुत छुस पननिस घर.सय मंज़
ध्यान स.ति ज़ाल ज्ञान. मशअल. लोलो अनु०

५. प्योमुत छुस गटि मंज़ अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो.न छु सिर्यि प्रकाश
का'फी छम चा'ञ अख वुज़मल. लोलो अनु०

६. बान. हीन बो द्रास खान. गदाये
अंग हीन छुस फेर. कोत जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह. खल. लोलो अनु०

७. यम्बर ज़ल बो.म्बरो छय यो प्रारान
वेरि चाञ पान छस पा'रावान
वन वन. छस व्र'च आरवल. लोलो अनु०

८. लोल. बागस फ'लिमो गुल त. गुलज़ार
पोशनलो अज़ वलो छावु सब्ज़ार
होश दिम युथ पोश. वा'र फो.ल लोलो अनु०
९. हा 'विष्णो' पननुय पान ज़ानतन
यलि ज़ानक त्यलि बनि सरतलि सो'न
चित आ'नस करत. स-कल लोलो अनु०

♦♦♦

शिव आरती

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृतताडन परिपीडन मरणागम समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्
शिवशंकर शिवजी शंकर हर मे हर दुरितम।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसंचय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते।
शिवया सह मस चेतसि शशिशेखर निवसन्
शिवशंकर ....
भवभञ्जन सुररञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशंकर ....
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुबर्ल समये
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशु दरकम्पित हृदये
शिवशंकर ....

भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं
दयितात्मज ममतांभर कलुषींकृत हृदयम्।
कुरू मां निज चरणार्चिन निरतं भव सततं
शिवशंकर .....

♦♦♦

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मातंगचरमाम्बर-भूषणाय समस्तगीर्वाण-गणार्चिताय,
त्रैलोक्य-नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।
शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय
चन्द्रार्क-वैश्वानरलोचनाय, तस्मै-शिकाराय नमः शिवाय।।
वशिष्ठकुम्भोत्‌भवगौतमादि मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यज्ञस्वरूपाय जटाधाराय पिनाकहस्ताय सनातनाय,
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।
वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम - इदं - जन्मनि पुरा।
पुरारे ! नैवाहं क्वचित् - अपि भवन्तं प्रणतवान्।।
नमन्मुक्तः सम्प्र-त्यतनुर-अहम-अग्रे प्यनतिमान्-महेश !
क्षन्तव्यं तत्-इदम्अपराध-द्वयम्-अपि
करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा श्रवण-नयनजं वा
मानसं वा पराधम्।
विदितम्-अविदितं-वा सर्वम्-एतत्-क्षमस्व जय जय
करणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

♦♦♦

विष्णु स्तुति

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।

♦♦♦

ॐ जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे
उद्धर मामऽसुरेशविनाशिन् पतितोऽहं संसारे।
घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं
मामऽनुकम्प्य दीनमऽनाथं कुरु भव-सागरपारं।

घोरं हर .....

जय जय देव जयासुरसूदन जय केशव जय विष्णो
जय लक्ष्मी मुखकमलमधुव्रत जय दशकन्धर जिष्णो।

घोरं हर .....

पुनरऽपि जननं पुनरऽपि मरणं पुनरऽपि गर्भनिवासं
सोढुम-ऽलपुनरऽस्मिन्माधव मामुद्धुर निजदासम्।

घोरं हर .....

त्वं जननी जनकः प्रभुरऽच्युत त्वं सुहृतकुलमित्रम्
त्वं शरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधिवहित्रम्।

घोरं हर .....

जनकसुतापति चरणपरायण शंकर मुनिवर गीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम वारय संसृतिभीतिम्।

घोरं हर .....

♦♦♦

भैरव स्तुति

व्याप्तचराचर भावविशेषं
        चिन्मयमेकम् अनन्तम् अनादिम्।
भैरवनाथम् अनाथ शरण्यं
        तन्मयचित्तंतया हृदि वंदे।।
त्वन्मयमेतदऽशेषम् इदांनीं
        भाति मम त्वद् अनुग्रह-शक्त्या।
त्वं च महेश ! सदैव ममात्मा
        स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्।।
स्वात्मनि विश्वगते त्वयि नाथे
        तेन न संसृतिभीतिः कथाऽतरस्ति।
सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह
        त्रास विधायिषु कर्मगणेषु।।
अन्तक ! मां प्रति मा दृशमैतां
        क्रोध करातल मां विदधीहि।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो
        भीषण भैरव शक्तिमयोऽस्मि।।
इत्थमउपोद भवन्मय संविद्-
        दीधितिदारित भूरितमिस्रः।
मृत्यु यमान्तक कर्मपिशाचै-
        र्नाऽथ नमोस्तु न जात बिभेमि।।
प्रोदित सत्य विबोध मरीचि
        प्रोक्षित विश्वपदार्थ सतत्त्वः।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे
        त्वय्यऽहमात्मनि निर्वृतिमेमि।।
मानस गोचरमेति यदैव
        क्लेश दशाऽतनु ताप विधात्री।
नाथ ! तदैव ममत्वदभेद-

स्तोत्र परांमृतवृष्ट्रिर उदेति।।
शंकर ! सत्यमिदं व्रतदान-
स्नान तपो भवताप विनाशी
तावक शास्त्र परामृत चिन्ता
सिंध्यति चेतसि निर्वृतिंधारा।।
नृत्यति गायति हृषयति गाढं
संविदियं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं
दुर्लभम अन्यजनैः समयज्ञम्।।
वसुरसपौषे कृष्णदशम्या-
अभिनवगुप्तः स्तवमिम करोत्।
येन विभु र्भव मरुसन्तापं
शमयति झटिति जनस्य दयालुः।।

♦♦♦

बह्मेन्द्र-रुद्र-हरि-चन्द्र-सहस्र-रश्मि-
स्कन्द-द्विपानन-हुताशन-वन्दितायै।
वागीश्वरि ! त्रिभुनेश्वरि ! विश्वमातः
अर्न्त-वहिश्च कृत-संथितये नमस्ते।

अर्थ

सरस्वती त्रपुर सोन्दरी ज़गत माता,
बवनेश्वरी छख आसवन्य च्अय
ब्रह्मा रोदुर इन्द्र सिर्ययि चन्दरम कुमार
वेष्णु गणेश छुय पुज़ान चेय।
अन्दर ने'बर वातिथ त्रोबवनस सा'र्यसय,
गुल्य गन्डिथ म्योन प्रणाम वातिनय च्यय
अयि शरण च्य माता विन्य किन छीय नमिथय

♦♦♦

प्रातः कालस

आनन्द-सुन्दर-पुरन्दर मुक्त-माल्यं'
मौ-लौ हठेन निहितं, महिषा-सुरस्य
पादाम्बुज़ं भवतु म् विजयाय मञ्जु
मञ्जीर-शिञ्जित-मनोहरम्-अम्बिकायाः

अर्थ

पाद चा'न्य सोन्दर आनन्द दायक,
यन्द्राज़न त्राव यथ मोख्त माल,
ये'मि सू'त्य ज़ीर दिच़थ महिषासुरसय
क्षण मात्रस मंज़ वोत सु पाताल।
सुय रोनि पाद चोन रुज़्यतन में हृदयस,
युथब' अम्बिकाय बोज़ श्रोनि श्रोनि ताल।।
सुय मनोहर पाद ब'न्यतन में हीतो जै जै
कारुक मैं हाव्यतन कमाल।।

भजन

प्रातः काल आव म्य'ति अन्तय गाश माता
छम चा'ञ आश म्य'ति पूरण कर।
लटि मुख हाव, मोह गटि करत नाश माता,
छम चा'ञ आश म्य'ति पूरण कर। प्रात'।
जन्मादि जन्मन ग्यूर आम फेरान,
छुस हालि हा'रान डेंशन कर
जल हाव मुख पनुन छुम न बरदाश माता।। छम०
भक्ति भाव सतिन वति चाजि नेरय,
कति छख आसान पैगाम सोज़।
नतः दिम पननुय प्रोन यादाशत माता।। छम०

मोह गटि मंज़ छुस वथ छमन, ईवान,
सत्गुर हावतम सत चिय वथ
वथ हावि नो'न त्राव सूर्य प्रकाश माता।। छम०
हनि हनि फयूरूस हयथ मनि कामन,
शहरन त ग़ामन कति आसि म्यज।।
छखय पाताल किन छख च आकाश माता।। छम०
निर्वासन वनत कति चोन आसन,
अन्धकार कास्तम वन्दय्य प्राण।।
करतम सोदि वाञ्जि हिश बाश माता।। छम०
कल्पनाय रुसतुय कल हय वन्दयये,
कलि चाञि रा'वम न्यंदर त नेह'
वोल वोञ 'विष्णस चलि अभिलाष माता।। छम०

♦♦♦

माजि ज़ार'पार

राथ ग'यि सा'रय प्रकाश नोन द्राव।
मा'ज भवान्य आ'रतिस म्य दर्शुन च़ हाव।
लूसस वुछान वुछान रा'त्य रातस,
ज़ागान रुदुस बो ये'थ्य सातस
कर सना वुछि बो' चानि मोखकुय प्रभाव।।
मा'ज भाव'न्य आरितिस म्य दर्शुन च हाव।।
प्रारान वोतुम स्यठा यच्काल,
मा'ज भावन्य योद छख च दीन दयाल।
दासस म्य प्यठ थाव च अनुग्रेह स्वभाव।।
मा'ज भवान्य आर'तिस म्य दर्शुन च हाव।।
गाश आव चोपार सार्सय जगतस,
म्यय याच़ गट छम अन्दर हृदयस।

गट, कास अन प्रकाश हृदय म्य फोलनाव।।
माज़ भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।
कस वन च्य रोस माज कुस छु म्योनुय,
आशा वोमेद सथ डोख में चोनुय।
दित में भवसर तार, तार म्यान्य नाव।।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।
भवसागररस मंज़ छुस बो फोटमुत,
थफ़ करुम नत यिर छुस सपुदमुत।
कड न्यबर म्य अमि मन्ज़ वोन्य म्य मोकलाव।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शु न च हाव।।
छुस अनाथ मा'ज म्योन यीतनय चै आर,
चानि दयाये बापथ छुस बो बेमार
मिसकीनस दया दृष्टि म्य त्राव।।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।
छम म्य यन्द्रेय पननि करान छ्रट छ्रट
तंबलावान छम में वेषयन प्यठ।
सथ संगचे नावि वोन्य म्य बेहनावं।।
मा'ज भवान्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।
छुस मुसाफिर बो द्रामुत सफररस।
छुस दिवान कदम कदम बो यथ्य मज़िलस।।
वार, पा'ठय म्योन सफर अंद च वातनाव।।
मा'ज भवा'न्य आरतिस म्य दर्शुन च हाव।।
नावि छुस बिहिथ भवसागररस
पय छुमन, लग कोत त कथ तरफस।
परम पदसय कुन च लाग म्यान्य नाव।।
मा'ज भवान्य आ'रतिस म्य दर्शुन च हाव।।

◆◆◆

लीला

ब ज़ाअरी गोश थावतम ही भवानी
च्य रोस्तुय रछवुन छुय कॉंह न म्योनय।।
च्य दीवी सर वन्दय शेरस त पादन।
च़ माता गोश थावत्म फरियादन।।
छु चंचल मन म्य गोतम केन्च़काला।
बचुन मुशिकल यिवान छुम अमि हालय।।
दवाये दर्द दीवी कर म्य पानय।
तबीबन हन्ज़ तबाबत छम ब्रानय।।
व्यन्य दअदिस म्य वारतव छम्नअ कॉंह ब्रान्थः।
दिलस छुम राग चोनय दोह त रात।।
ब छुस चअनिस भरस तल हुन्य सअन्ध पअठ्य।
म्यअ छमना चअन्यि छ्यअटि लुकमय स्यठा टअठ्य।
दया युदवय करख मअज्य क्याह गछी कम।
च छख पानय बअ कुस छुस कासतम गम।।
च्य निश युस लोल ओश त्रावि दारि दारि।
तमिस छख पान हावान ब्रोन्ठ चारे।।
सतन बवनन् हिंज़ छख आदि शक्ति।
शरण आमुत छुस्य व्यन दी म्य मुक्ति।।
सु'री युस नाव च्योन गोड़िनियथ।
सु गच्छना शेव लोकस क्या छि बअड कथ।
ब छुस प्योमत पथर अथ रूट करखना।
म्य दिख दर्शुन शुभ वर्शुन करखना।।
ब छुस आन'ज़ाज मंज़ करतम गट् दूर।
दितम शन्ति कुठ्यन ताकत अच्छन नूर।।

मेय रुटमय दामनय चो'न सारी वान्से।
च्य रुसतिय पतय लारान छुस न क'न्से।।
हेमथ खोनिय मंज़ ठोकुर गोड़ दिमयना।
छल्य दोद् खउर चरण अमृत चमयना।।
म्य करिमय रअत रातस वील तू ज़ार।
ब छुसनय भक्त च्योनय यीतनय आर।।
कलम तुल कर्मलीखा म्यअन्य नव लेख।
ललाटस यथ म्य हिकारअक़ य अछर लेख।।
वुछख यिम हअल्य अछर तिम नहाव नावतम।
छिम यिम स्यद तिम ति सोबूत थावतम।।
छि यिम पअन्चय अछर लेखन्य न ज्यादय।
गुड़न्य मअज़्य दूर करतम भूमि प्यठ व्याध।।
दुयुम मअज्य शत्रु कांह पोरुन गुछ़म ना।
असर मारिथ त्रयुम रोशुन गुछम ना।।
छ चूरिम कथ यहय म्यअनिस मनस मंज़।
रछुम पनन्यन पादन तल छुम गोमुत क्रंज़।।
यि प'च्युम प्राण म्योन लारान पतय छुय।
शुभ दर्शुन अमृत वर्शुन करुम चअय।।
च्य छुय वोनमुत ब छस बोज़ान तिहन्दय ज़ार।
यमिस नय आसि वननस कां'सि निश वार।।
खबर छा, कोन छख अद म्योन बोज़ान।
गयम मा ज़्यव म्य कअज्य तव छख न बोज़ान।।
च्य कथसना जाय छख मऽज नख्बर नेर।
ब छुस सन्ताप सीत् दोदमुत मअ कर चेर।।
च्यनिश वअतिथ गच्छान छः कांह ति महरूम।
पनुन अथ ड़ालतम छुस ना बअ मासूम।।

म्य स्नच़यथ पननि वन्सें केंह करुम नः।
दितम दर्शुन अघ्य म्अज केंह गोछिमनेय।।
नियाज़ोनज़ीर म्यज क्या बअ थवाय।
पनुन अवहाल योत वसिथ पानय् बावय।।
मंगुन छुम नय तगान बोजुन तगान छुय।
लकुट शुर माजि यिथ पअठय दुध मंगान छुय।।
पराकन्दह छुसय च़अनिस बरस तल।
दिलक्य मुशिकल म्य माता करतम अज़ हल।।
बअ युदवे म्अज ज़ांह चीर वातय।
च मत् म'शरावतम् कुनि सातय।।
दया द्रष्टी मय करत्य मअज भवानी।
च छखना आसवज त्रयलूक़ सानी।।
म्य छम विनती कुनी वज्य ही भवानी।
बअ रटहय हृदयस मंज़ पाद च्यअनी।।
बअ करहय लोल अशि सूत्य यिमन श्रान।
छलय वथरय तअ वथरावय पनुन प्राण।।
करान रोज़हय बअ न्यथ सुमरण यि च्यनी।
सुरान रोज़ह दुहय शिव शिव भवानी।।
यहअय विनती म्य माता करत मन्जूर।
दितम माता परम सोख करतस दोख दूर।।
कुलफ यिथ पाठय छिं मुचरान कादखानन।
ग़छान ब्योन ब्योन छि तिम पनन्यन मकानन।।
तिथय पाठय गम मज करतम मे आज़ाद।
छुनय फर्ययाध्य आमुत बोज़तम ज़ार।।

♦♦♦

शिवमह्मिनः स्तोत्रम्

कर्पूरं गौरं करुणावतारं
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम,
सदारमन्तं हृदयार विन्दे
भवं भवानी सहितं नमामि।।

ॐ नमः शिवाय।

आधीनामगद्यदिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम्
उपद्रुवानां दलनं महादेवमुपासमहे।।
अहं पापीपापक्षिपण निपुणाः शंकर भवान्
अहं भीतोऽभीता भय वितरणे ते व्यसनिता
अहं दीनो दीनो द्धरणविधिसज्जरस्त्वमितरन्न
जानेऽहं वक्त्वं करु सकल शोचे मयि कृपाम
जनास्त्वत्पादाब्जश्रवणमननध्यान निपुणः।
स्वयं ते निस्तीर्णा न खलु करुणा तेषु करणा
भवे लीने दीने मयिमनन हीने न करुणा
कथंनाथ ख्यातस्तुमसि करुणा सागर इति।।

♦♦♦

शिव महिम्ना स्तोत्रम्

पुष्प दन्त उवाच

ॐ महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्य सदृशी
स्तुतिर् ब्रह्मादीनाम् अपि तदवसन्नस्त्वयि गिरः
अथावाच्यः सर्वः स्वमति परिणामावधि गृणन्

ममाप्येषस्तोत्रे हर ! निर् अपवादः परिकरः (१)

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ् मनसयोर्-
अतत् व्यावृत्त्या यं चकितम् अभिधते श्रुतिर् अपि
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधेगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः (२)

मधु स्फीता वाचः परमम् अमृतं निर्मितवत
स्तव ब्रह्मन् किं वागऽपि सुरगुरोर्विस्मय पदम्
मम त्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन भवतः
पुनामीत्य,र्थेऽस्मिन् पुरमथन ! बुद्धि,र्व्यवसित (३)

तवैश्वर्य यत् तत् जगत् उदय रक्षा प्रलय कृत्
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण भिन्नासु तनुषु।
अभव्यानाम् अस्मिन् वरद रमणीयाम् अरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः (४)

किम् ईहः किं कायः स खुल किमुपाया,स्त्रिभुवनम्
किम् आधारो धाता सृजति किम् उपादनं इति च
अतर्कऽयै श्वर्य्ये त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चित् मुखरयति मोहाय जगतः (५)

अजन्मानो लोकाः किम् अवयम वन्तोपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भव विधिर् अनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्यात् भुवन जनने कः परिकरो
यतो मन्दारस्त्वां प्रत्यमरवर ! संशोरत इमे (६)

त्रयी सांख्यं योगः पशुपति मतं वैष्णवम् इति

प्रभिन्ने प्रस्थाने परम् इदम अदः पथ्यम् इति च
रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजु कुटिल नाना पथ जुषाम्
नृणाम् एको गम्यः त्वमसि पयसाम् अर्णव इव (७)

महोक्षः खट्वांगं परशुर् अजिनं भस्म फणिनः
कपालं च इति इयत तव वरद। तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्ता ताम् ऋद्धिं दधति तु भवतु भ्रू प्रणिहितां
नहि स्वात्मा रामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति। (८)

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलम् अपरस्त्व ध्रुवम् इदं
परो ध्रौव्या ध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
समस्ते,अपिएतस्मिन् पुरमथन ! तैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिगह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता (९)

तवै श्वर्यं यत्नात् यत् उपरि विरंचिः हरिर् अधः
परिच्छेत्तुं यातौ अनलम् अनलस्कन्ध वपुषः।
ततो भक्ति श्रद्धा भर गुरू गृणत् भ्यां गिरिश ! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम् अनुवृत्तिर्न फलति (१०)

अयत्नादासा त्रिभुवनम् अवैर व्यतिकरम्
दशास्यो यत् बाहून अभृत रण कण्डू पर वशान्
शिरः पद्म श्रेणी रचित चराणाम्भोरुह बलेः
स्थिरायास्तवत् भवतेः त्रिपुर हर ! विस्फूर्जितं इदम् (११)

अमुष्य त्वत् सेवा सम् अधिगत सारं भुजवनम्
बलात् कैलासेऽपि त्वत् अधि वसितौ विक्रम यतः
अलभ्या पातालेऽप्यलस चलितांगुष्ठ शिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवम् उपाचितो मुह्यति खलः (१२)

यत् ऋद्धिं सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैर् अपि सतीम
अधश्चक्रे बाणः परिजन ।विधेय त्रिभुवनः।
न तत् चित्रं तस्मिन् वरि वसितरि त्वत् चरणयोः
न कस्या प्युन्नत्यै भवति शिर सस्त्व्य्यवनतिः (१३)

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकित देवासुर कृपा
विधेयस्याऽऽसीत् यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रयम् अहो
विकारोऽपि श्लाध्यो भुवन भय भंग व्यसिननः (१४)

अंसिद्धार्थो नैव क्वचित् अपि सदेवासुर नरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः
स पश्यन् ईश त्वाम् इतर सुर साधारणम् अभूत
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः (१५)

मही पादाघातात् व्रजति सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोर् भ्राम्यत भुज परिघ रुग्ण ग्रह गणम्।
मुहुर् द्यौरद्यौर्स्थ्यं यात्यनिभृत जटा ताडित तटा
जगत् रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता (१६)

वियत् व्यापी तारागण गुणित फेनोत् गम रुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषत लघु दृष्टः शिरसि ते।
जगत् द्वीपाकारं जलधि वलयं तेन कृतमि-
त्येनेनै वौन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः (१७)

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिर् अगेन्द्रो धनु रथो
रथांगे चन्द्रार्को रथ चरण पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुर तृणम् आडम्बर सिधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खुल परतन्त्राः प्रभुधियः (१८)

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिम् आधाय पदयोः
यत् एकोने तस्मिन् निजम् उदहरत् नेत्र कमलम्
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिम् असौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षाये त्रिपुर हर ! जागर्ति जगताम्। (१९)

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्वमसि फल योगे क्रतुमताम्।
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधन मृते।।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवम्,
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरः कर्मसु जनः (२०)

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिर् अधीशस्तनु भृताम्-
ऋषीणाम् आर्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः
कृतृभ्रंशस्त्वतः क्रतुफल विधान स्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरम् अभिचाराय हि मरवाः (२१)

प्रजानाथं नाथ ! प्रसभमृभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहित् भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणेर्यातं दिवम् अपि सपत्रा कृतम् अमुम्
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याध्या रभसः (२२)

अपूर्वं लावण्यं विवसन तनोस्ते विमर्शतां
मुनीनां दाराणां समजनि सकोप व्यतिकरः
यतो भग्ने गुह्येसकृत् अपि सपर्यां विदधतां
ध्रुवं मोक्षोऽश्लीलं किम् अपि पुरुषार्थ प्रसवि ते (२३)

स्वलावण्या शंसा धृत धनुषम् अह्न् नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर मथन ! पुष्पायुधम् अपि
यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देहार्ध घटनात्
अवैति त्वाम् अद्धा वत वरद ! मुग्धा युवतयः (२४)

श्मशनेष्वा क्रीडा स्मर हर ! पिशाचाः सहचराः
चिता भस्मा लेपः स्रुक् अपि नृकरोटि परि करः
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद ! परमं मंगलम् असि (२५)

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधम् अभिधायात्त मरुतः
प्रहृष्यतरोमाणः प्रमद सलिलोत् संगित दृशः।
यतदा लोक्या ह्लादं ह्रद इव निमज्जया मृतमये
दध त्यन्त स्तत्त्वं किं अपि यमिनस्तत् किल भवान् (२६)

त्वम् अर्क स्त्वं सोम स्तवम् असि पवन स्त्वं हुतवहः
स्त्वम् आप स्त्वं व्योम त्वमु धरणिर् आत्मा त्वमिति च
परि च्छिन्नमेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम्
न विद्मस्तत् तत्वं वयमिह तु यत् त्वं न भवसि (२७)

त्रयीं तिस्रो वृत्ती स्त्रिभुवनम् अथो त्रीन् अपि सुरान्
अकारौ वर्णे स्त्रिभिर् अभि दधत्तीर्ण विकृति
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिर् अवरुन्धानम् अणुभिः
समस्त व्यस्तं त्वां शरणद ! गृणा त्योमिति पदम् (२८)

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिर् ऽथोग्रः सह महान्
तथा भीमेशानो इति यत् अभिधानाष्टकम् इदम्
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिर् अपि
प्रिया यास्मै धम्ने प्रणिहित नमस्योऽस्मि भवते (२९)

वपुष्प्रादु र्भावात् अनुमितम् इदं जन्मनि पुरा
पुरारे ! नैवाहं क्वचित् अपि भवन्नतं प्रणतवान्।
नमन् मुक्तः सम्प्र त्यतनुर् अहम अग्रे प्यनतिमान्
महेश ! क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयम अपि (३०)

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव ! दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मर हर ! महिष्ठाय च नम।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन् यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तत् इदम् इति शर्वाय च नमः (३१)

बहल रजसे विश्वो त्पतो भवाय नमो नमः
प्रबल तमसे तत् संहारे हराय नमोनमः
जनसुख कृते सत्वो द्रिक्तौ मृडाय नमोनमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमोनमः (३२)

कृश परिणति चेतः क्लेश वश्यं क्वचेदम्
क्व च तव गुण सीमो ल्लंघिनी शश्वत् ऋद्धिः।
इति चकितम् अमन्दीकृत्य मां ाक्तिराधाद्
वरद ! चरण्योरस्ते वाक्य पुष्पोप-हारम (३३)

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धु पात्रे
सुरतरुवरक्षाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति (३४)

असुरसुरमुनीन्द्रैर र्चितस्येन्दुमौले
ग्रथितगुणमहिम्नो ज्ञानकारुण्यमूर्ते।
सकलगुण वरिष्टः स्तोत्रमेतत् चकार (३५)

अहरहनवधं धूर्जटे स्तोत्रमेत
त्पठति परमभक्त्या शुद्धचितः पुमान्येः।
स भवति शिवलोके रुद्र तुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च (३६)

दीक्षा दानं तपस्तीर्थ ज्ञानं यागादिका क्रिया
महिनस्तवपाटस्य कलां नांहन्ति षोडशीम् (३७)

मेहशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्वं गुरो परम् (३८)

कुसमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुधरवरमौले देदेवस्य दासः
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषा-
त्स्तवनमिदमकार्षी द्दिव्यदिव्यं महिम्नः (३९)

सुखरमुनिपूज्यं स्वंग मोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेता
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम (४०)

श्री पुष्पदन्त मुख पंकज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विष हरेण हर प्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूत पतिर्महेशः (४१)

इत्येषा वाड्मयी पूजा श्रीमत्त्छकरपादयोः
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः (४२)

ॐ नमः शम्भवाय च, मयोभवाय, च, नमः, शंकराय च,
मयस्करायच नमः शिवाय च शिवतराय च

◆◆◆

शिवजी

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वा रुकम् इव बन्धनात्, मृत्यो मुक्षीय मामृतात्।।

१. चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि मां
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम्।।

♦♦♦

शंकर अस्तुती (रुद्राष्टक स्तोत्र)

१. नमामी शमीशान निर्वाण रुपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरुपं,
निजं निर्गुण निर्विकलपं निरीहं,
चिदाकाश माकाशवासं भजेऽहं।।

२. निराकार मोकार मूलं तुरीय,
गिरा ग्यान गोतीत मीशं गिरीहं,
करालं महाकाल कालं कृपालं,
गुणागार संसार पारं नतोऽहं।।

३. तुषाराद्रि संकोशगौरं गंभीरं,
मनो भूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा,
लयद्भाल बालेन्दु कंटे भुजन्गा।।

४. चलत्कुण्डलं भ्रसुनेत्रं विशालं,
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं,
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं,
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।

५. प्रचंडं प्रकष्टं प्रगल्भं परेशं,
अखण्डं अज भानु कोटि-प्रकाशं।
त्रयः शूल निर्मूलनं क्षुलापाणिं,
भजेऽहं भवानी पति भावगम्यं।।

६. कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी
चिदान्द संदोह महोपहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभोमन्मथारी।।

७. न्यावत् उमानाथ पादारविन्दं,
भजंतीह लोके परेवानराणां,
नतावत् सुखं शान्ति सन्ताप नाशं,
प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं।।

८. न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भू तुभ्यं।।
जरा जन्म दुःखो-धतात-प्यमानं,
प्रभो पाहि आसान्नमा मीश शम्भो।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये,
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

क्षमा मन्त्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

अथ ध्यानम

१. गौरीश्वराय भुवनस्त्रयकारणाय
भक्तिप्रियाय भवभीतिभिदे भवाय।

शर्ववाय दुःखशमनाय वृषध्वजाय
रुद्राय कालदहनाय नमः शिवाय।।

२. करचरणकृतं वात्रकायजं कर्मज वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विदितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणब्धे श्री महादेव शम्भो।।

३. आ किं न रक्षसि नयत्ययमन्तको मां
हेलावलेपसमयः किमयं महेश।
मा नाम भृत्करणया हृदयस्य पीड़ा
व्रीडापि नास्ति शरणागतमुज्झतस्ते।।

४. यदक्षर पदं भ्रष्ट मात्राहीनं चयद्भवेत
तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

♦♦♦

मन्त्र

१. ॐ शर्वाय नम २. ॐ भवाय नमः
३. ॐ रुद्राय नमः ४. ॐ उग्राय नमः
५. ॐ भीमाय नमः ६. ॐ पशुपतये नमः
७. ॐ महादेवाय नमः ८. ॐ ईशानाय नमः

♦♦♦

प्रभात आरती

१. शब्द ब्रह्य मयि स्वच्छे देवि त्रिपुर सुन्दरि !
यथा शक्ति जपं पूजा गृहाण परमेश्वरि !

अर्थ

ही शब्द रूपी नयरमल स्वरूपी
ही दीवी ही त्रिपोर सोन्दरी
कर यथा शक्ती में चान्य पूजा
कर स्वीकार ही परमीश्वरी

२. नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः
अवस्था शम्भवी मेस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरूः सदा

अर्थ

रुज़्यतन सुखी माज सादक सारी,
यिम दोष्ट आसन तिम सेदितन
शिवरूप अवस्था मेति माज बन्यतन
गोर दीव सदा मेप्यठ प्रसन्न रूज़्यतन

३. दर्शनात् पापशमनी जपात मृत्यु विनाशिनी
पूजिता दुःख दौभाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी

अर्थ

चानि दर्शन पाप सारी छि गलान्
चानि मृत्यू छु नाश सपदान
पूज़ायि किन्य चोन महिमा ग्यवन किन्य
ज़ीवस दो'ख त दअद दूर सपदान

४. नमामि यामिनीनाथ लेखा लङ्कृत कुन्तलाम
भवानी भवसन्ताप निर्वापण सुधानदीम

अर्थ

नमस्कार छुस करान येमिस केशस मंज़ चे
चंन्दरम प्रज़लान रात्रो द्यन।
सम्सार दोखन छख न्यवारान चय
अमृत नदी हन्दि प्रवाह सत्य ज़न

५. मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यदगतम्
त्वया तत्क्षम्यतां देवि कृपया परेश्वरी।।

अर्थ

मन्त्रहीन आसिथ क्रियाहीन आसिथ
विधिहीन आसिथ यि केंछा प्रोवुम
तथ सारियसय ही परमेश्वरी चय
कृपायि किन्य आरतिस में माज बखशुम
आय शरण चे पादन विनयि किन छि नामिथय
व्याकुल तायि मन्ज़ असि रछत चय।

♦♦♦

शांति पाठ

ॐ शंनो मित्रः शं वरुणः
शंनो भवर्त्वयमा
शंनो इन्द्रो बृहस्पतिः
शंनो विष्णुरुरुक्रमः
नमो ब्रह्मण नमो वायवे नमस्ते वायो
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदष्यामि,
ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु

तद्वक्तार भवऽतु अवतु मामऽवतु वक्तारं शान्तिः शान्तिः शान्तिः,

सह ना अवतु, सह नौ भुनक्तु

सहवीर्यकरवावहै, तेजस्विना अधित मस्तु मा विद्वषावहै

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योममित गमय

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूणमादाय पूणमेवावशिष्यते।

राज्य सोथ प्रजा सोस्त्ये
दीश सोस्तये तथ्य वचे
यजमान ग्रेह स्वस्थे
सोहत्य गो ब्रह्मन्यंस्यच
हा कृष्ण द्वारिका वासी
कवसी यादव नन्द नये
इमाम अवस्ताम सम प्राप्तम
अनाथम किं न रखसे
हा कृष्ण मनसा वासी
कासी यादव नन्द नये
इमाम अवस्ताम सम प्राप्तम
अनाथम किं न रखय्से
र्सवे भवनतु सुखिना
र्सवे संतु निरा मया
र्सवे भदरानि पशन्यतो
महा कश्चित दुखभाजयत

◆◆◆

अब दोनों हाथों में फूल लिए हुए प्रणाम करते हुए पढ़ें।

आपान्नोस्मि शरण्योसु सर्वावस्थातु सर्वदा
भगवन त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरंणागतम्
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा
वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नः

तर्पणः सीधा हाथ रखते हुए पढ़ें।

नमो ब्रह्मणै, नमो अरस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषधिभ्यः नमो वाचे, नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे बृहते कृणोमि इत्येतासाम् एव देवतानां सा रि ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम आप्नोति य एवं विद्यान् स्वाध्यायाम् अधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

♦♦♦

मार्भमन्दमनो चिचिन्त्य बहुधा यामिश्वरं यातना।
नामीन प्रभविन्त पापरिश्वः स्वामीननु श्रीधराः।।
आलस्यं व्यीपनीय भक्ति सुलभंध्यायस्य नारायणं।
लोकस्य व्यसन पनोदन करो दासस्य किं न क्षमः।।
पूजितोऽसि मया भक्तया भगवन्कमलापते स लक्ष्मी को
मनस्यान्तर्विश्वविियन्ति हेतवे।।
औं चंदन च महापुण्यं पवित्रं पापनाशनम
आपदा हरंते नित्यं लक्ष्मी भवतु सम्पदा
हरि ॐ तत् सत्।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तस्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
आहवानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम।
पूजाभागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।

♦♦♦

कुछ सर्वकामनासिद्ध मंत्र

१. सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्ध साधके।
शरण्ये त्र्यम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते।।
२. सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि। दुर्ग देवि नमोस्तुते।।
३. देहि सौभाग्यमरोग्यं देहि द्विषोजहि।।
४. सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्या खिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वरिविनाशनम।।
५. स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया तथा सुरेन्द्रेणदिनेषु सेविता
६. करोतु सा नः शुभहेतुरीश्ररी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः
७. अचिन्त्य रूपचरिते सर्वशत्रुविनाशनि।
रूपं देहि जय देहि यशो देहि द्विषोजहि
८. ॐ निर्गुणे। निष्कले। नित्ये। सच्चिदानन्द रूपिणि।

नमोस्तुते महाराज्ञि पहिमाम शरणागतम ।।

श्री शारिका सदा भगवते, भवतु प्रसन्नसा

९.रोगान अशेषान अपहंसि तुष्टा रुष्टा तु

कामान् सकलान् अभीष्टान्

त्वाम आश्रितानां न विपत नराणाम त्वमा

आश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।

१०.सर्बाधा विविर्मुक्तो धनधनान्य समन्वितः

मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः

११.शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे

सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते

१२.जयन्ती मण्घला काली भद्रकाली कपालिनी

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

१३.शूलेन पाहि नो देवि पाहि खडगेन चाम्बिके

घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च।।

१४.या श्री स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मी

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धि।।

श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा

तां त्वां नताः स्मः परिपालय देवि विश्वम्।।

♦♦♦

हे माता

१. भक्तनुग्रहकारिणी भगवती देवाधिदेवेश्वरी
दीनानाथकृपावती स्वजननी भक्तानुरक्ता सती।
ॐ काराक्षरवासिनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्वदा
भूयान्नो वरदा सदा ह्यभयदा कामेश्वरी कामदा।।

२. वराङ्कुशै पाशमभीतिमुद्रां
करैवहिन्तीं कमालासनस्थाम्।
बालार्ककोटि प्रतिमां त्रिनेत्रां
भजेहमाधयां भुवनेश्वरीं ताम्।।

३. माता भवानी च पिता भवानी
बन्धुर्भवानी च गुरू भवानी।
विधा भवानी द्रविणं भवानी
यतो यतो यामि ततो भवानी।।
निर्गुणे निष्क्रये नित्ये सच्चिदानन्दरूपिनी।
नमोस्तु ते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम्।।

♦♦♦

ॐ ध्यानम

१. ॐ कालाभ्रामां कटाक्षैरिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खचक्रं कृपाणंत्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढा त्रिभुवनखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गा जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां
सेवितां सिद्धिकामैः।।

२. ये देवि! दुधर्र कृतान्त मुखान्तरस्था
ये कालि कालधन पाश नितान्त बद्धा
ये चण्डि। चण्ड गुरू कलमष सिन्धुमग्ना
स्तान् पासि मोचयसि तारयसि स्मृतवै।।

३. देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

४. यस्याः प्रभावमतुलं भगवानन्तो
ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च
स चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभमयस्य मतिं करोतु

♦♦♦

महा गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितु वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् ॐ

५. मुक्ता - विद्रुम - हेम - नील - धवल, छाये - मूर्खैः
- त्रीक्षणैः युक्ताम् - इन्दु - निबाद्ध - रत्न - मुकटां,
तत्वात्म - वर्णात्मि - काम्।
शंख चक्रम - अथार - बिन्दु - युगलं हस्तै - वर्हन्तीं भजे।
आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि, गायत्रि छन्दसां
- मात - ब्रह्म - योने नमोस्तुते।
या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या श्वेतपद्मासना।

या वीणावर - दण्डमण्डितकरा या शुभ्रवस्त्रान्विता।
या ब्रह्माच्युतशङ्कर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सामां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।
भक्तानां सिद्धिर्कर्त्री सकलमुनिजनै सेविता या भवानी।
नौम्यहं नौम्यहं त्वां हरिहरप्रणतां शरिकां नौमि नौमि।

६. दुर्गा त्वां च सरस्वती भगवती ज्वालामुखीं शारदां।
राज्ञीं शरिकया युतामधहरी त्वां भद्रकाली शिवाम्
वागीशीं त्रिपुरां भजामि समयां पीठेश्वरी सिद्धिदां
गायत्रीं कमलासननस्य वनितां श्रीकुब्जिकां कालिकाम्।।

६. सिंहस्था शशिशेखरा मरकत प्रख्यै चतुर्भिभुजै।
शङ्खचक्र धनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्का-ञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतुनो रत्नोल्लसत्कुण्डला।।

♦♦♦

महा राज्ञा स्तोत्र

या द्वादशार्क परिमण्डित मुर्तिरेका
सिंहा सनस्थितिमतीमुरगैर्वृतां च
देवी मनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां
तां नौमि भार्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम्।।

उद्यद्दिवा कर सहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरि गतामुरगोपवीताम्।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारविन्दाम्।।

यत्पादपङ्कजतलेऽमरमूर्धमौलि
न्यसतेन्द्रनीलमणिसन्ततयः पतन्ति ।।
किञ्जल्कपानरतमुग्धमधव्रतत्वं
राज्ञीं सदा भगवती जननीव नोऽव्यात्
पत्तिद्युलोकपतिवैभवमाददाति
देवाधिपोऽपि ननु पत्त्यनुकारमेति
यत्प्रोल्लसत्त्रयनयोगवियोगभवाद्
राज्ञीं महोपपदरम्यतरां नमामि ।।
शीतांशुबालार्ककृशानुनेत्रां
चतुर्भुजामेनत्वदासनस्थाम् ।
शङ्खाब्जशूलासिधरां महेशीं
राज्ञीं भजेहं तुहिनाद्रिरूपाम् ।
स्मृतैवान्तर्गतं पुंसां हरन्ती सकलं मलम् ।
ज्यत्येषा महाराज्ञी भक्तानां कामदायिनी ।
त्रिजगन्मोहिनि ईड्ये मिहिरीभूतसद्गुणे ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम् ।
शेषाशेषमुखागण्यगुणे गुणगणप्रिये ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि० ।
सुरासुरनरसिद्धवन्दनीय पदाम्बुजे ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि० ।
चराचरजगत्सृष्टिस्थितिसंहारकारिणि ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि० ।
भक्तकल्पलत्तेऽनल्पवाङ् माधुर्यजितामृते ।
नमोस्तु ते महाराज्ञि० ।

ब्रह्मविष्णुमहेशानवन्दिते गिरिनन्दिनि।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।
भक्तानां भीमसंसारपारावारप्रतारिणि।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।
निगुर्णे निष्क्रिये नित्ये सच्चिदानन्दरूपिणि।
नमोस्तु ते महाराज्ञि०।
राज्ञीस्तोत्रमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत्।
असंशयमशेषैण वशयेदखिलं जगत्।

◆◆◆

बीजैः सप्तभिरुज्जवलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणताङ्–घ्रि पङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्
काश्मीरप्रवरेशमध्यनगरेप्रद्युन्मपीठे स्थिता
देवीसप्तकसंयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः।।

श्री राजराजेश्वरी स्तुतिः

ॐ नमो भवान्ये

१. ॐ छन्दः पादयुगा निरुक्तसुमुखा शिक्षा च जंघायुगा
ऋग्वेदोरुयुगा युजुः सुजघना या सामवेदोदरा।
तर्कन्यायकुचा श्रतिस्मृतियुक काव्यादिवेदानना।
वेदान्तामृतलोचना भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।

२. ईशाधीश्वरयोगिवृन्दविधृता स्वानन्दभूता परा
पश्यन्तीत्यनु मध्यमा विलसती श्रीवैखरीरूपिणी।
आत्मानात्मविचारिणी त्रिनयना विद्यावती भारती
श्रीचक्र प्रियबिन्दुतर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी।।

३. कल्याणायुत पूर्णबिम्बवदना पूर्णेश्वरी नन्दिनी
पूर्णा पूर्णतरा परेशमहिषी पूर्णा मृतास्वादिनी।
सम्पूर्णा परमोतामृतकला ·विद्यावती भारती।
श्री चक्र प्रियबिन्दुतर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी।।

४. एकाकारमनेकवर्ण विविधाकारैकचिद्रपिणौ
चैतन्यात्मकएकचक्ररचिता चक्रांगएकाकिनी।
भावाभावविभाविनी भयहरा सद्भक्तचिन्तामणिः
श्रीचक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी।।

५. लक्ष्यालक्ष्यनिरीक्षणा निरूपमा रुद्राक्षमालाधरा
साक्षात्कारणदक्षवंशकलिता दीर्घातिदीर्घेश्वरी।
भद्रा भद्रवरप्रदा भगवती भद्रेश्वरी भद्रदा।
श्री चक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी।।

६. ह्रीं बीजानलनाद बिन्दुभरता सत्कार (ओंकार) नादात्मिका
ब्रह्मानन्दघनोदरी गुणवती ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा,
इच्छा ज्ञानक्रियावती जितवती गंधर्वसंसेविता।
श्री चक्रप्रियबिन्दुतर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

७. हर्षोन्मत्तसुवर्ण पात्रभरिता पार्श्वोन्नता घुर्णिता
हकारप्रियशब्दब्रह्म (राशि) निरता स्वारस्वतोल्लासिनी,
सारासारविचारचारूचरिता वर्णाश्रमा कारिणी
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

८. सर्वज्ञानकलावती सकरूणा सन्नादिनी नन्दिनी,
सर्वान्तर्गतशालनी शिवतनूसन्दीपिनी दीपिनी,
संयोगप्रियरूपिणी प्रियवती प्रीता प्रतापोन्नता

श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

९. कर्माकर्मविवर्जिता कुलवती कर्मप्रदा कौलिनी,
कारुण्यावधि सर्वकर्मनिरतासिन्धुप्रिया शालिनी,
पूर्णब्रह्मसनातनान्तरगता ज्ञेया स्वयोगात्मिका,
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजजारेश्वरी।।

१०. हस्तिकुम्भसध्कूपयोधरावरा पीनोन्नता नमग्रा
हाराद्याभरणा सुरेन्द्र विनुता श्रङ्गारटपीठालया,
योन्याकार कयोनिमुद्रितकरा नित्यं सुर्वणात्मिका।।
श्री चक्रप्रियबिदु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

११. लक्ष्मीलक्षपूर्णकुम्भरवदा लीला विनोदस्थिता,
लाक्षारञ्जित पद्मपादयुगला ब्रह्माण्डसंसेविता,
लोकालोकित लोककामजयिनी लोकाश्रयाङ्काश्रया
श्रीचक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

१२. ह्रीं काराङ्कितशङ्कर प्रियतनुः श्री योगपीठश्वरी,
माङ्गल्यायुतपङ्कजा भनयना माङ्गल्यसिद्धिप्रदा।
तारुण्यात्तपसार्चिता तरुणिका तन्त्रोपमातन्विता
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

१३. सर्वेशाङ्गविहारिणी सकरुणा सर्वेश्वरी सर्वगा
सत्या सर्वमयी सहस्रदलगा सप्तार्णवोपस्थिता
सङ्गासङ्गविवर्जिता सुखकारी बालार्ककोटिप्रभा
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

१४. लक्ष्मीशादिविरञ्च चक्रमुकुटा द्यष्टाङ्गपीठार्चिता,
सूर्येन्द्वग्निमयैकपीठनिलया चिन्मात्रकौलेश्वरी।
गोप्त्री गुर्विणिगर्विता गगनगा गङ्गा गणेशप्रिया
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

१५. कादिक्षान्तसुर्वणबिन्दु सुतनुः स्वर्णादिसिंहासना,
नानारत्नविचित्र चित्ररचिता चातुर्यचिन्तामणिः
चित्तानन्द विद्यायिनी सुविपुला कोटित्रयीश्याम्बिका
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

१६. ह्रींकारत्रयरूपिणी समयिनी संसारिणी हंसिनी,
वामाचारपरायणा सुमुकुटा बीजावती मुद्रिणी।
कामाक्षी करुणाविचित्ररचिता श्री श्री त्रिमूर्त्यात्मिका
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

१७. सा बिम्बप्रति बिम्बलम्बित लसत् बिम्बाधरा याम्बिका
जम्बीरोत्पलकर्ण शोभितमुखा जम्बूफल श्री कुचा।
नानारत्नकिरीट दीप्तिलसिता प्रत्यक्षदीक्षात्मिका
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

१८. यत्तोजो निधिभिस्त्वनन्त् घृणिभिर्नोपाहयृते प्रेरितुं,
हार्दं ध्वान्तमपास्य सिक्षणंपि तद्ध्यान मात्रा दृशा।
यत्सद्भादनुभाति सर्वमुदितं भानुं यथा पद्मनी।।
प्रत्यग्दाम नमाम तत्तव वपुः।। श्री राजराजेश्वरी।
श्री चक्रप्रियबिन्दु तर्पणपरा श्री राजराजेश्वरी।।

◆◆◆

भगवती पोश पूजा

जय भगवती विन्ध्यवासिनि कैलासवासिनी श्मशानवासिनि हुङ्कारिणि कालायनि कात्यायनि हिमगिरितनये कुमारमातः गोविन्दभगिनि शितिकण्ठकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे भुजङ्गवलयवमण्डिते केयूरहाराभरणेअष्टादशभुजे भुज ववय नण्डिते केयूर हाराभरणोऽजेयखडगत्रिशूलडम-रूमुद्गरच-षककलशशर चापवराऽभयपाश-पुस्तककपालखट्वाङ्ग- गदामुसुलतोमरचक्रहस्ते कृपापरे प्रभूत विविधयुधे चण्डिके चण्डघटे किरातवेशे ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि ब्रह्माचारिणि दिव्यतापोविधायिनि वेदमातः गायत्रि सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरि विश्वकर्त्रि समाधिविश्रान्तिमये चिन्मये चिन्तामणिस्वरूष कैवल्ये शिवे निराश्रये निरुपाधिमये निरामयपदे ब्रह्मविष्णुमहेश्वरनमिते मोहिनि तोषिणि भरकरनाशिनि दितिसुतप्रमथिनि काले कालकिरमथिनि कालाग्निशिखे कालरात्रि अजे नित्ये सिंहस्थे योगरते योगेश्वरनमिते भक्तजनवत्सले सुरप्रियकारिणि दुर्गे दुर्जये हिरण्ये शरण्ये कुरु मां दयाम्।। प्रद्युमन्शिखरासीनां मातृचक्रोपशोभिताम्। पीटेश्वरीं शिलारूपां शरिकां प्रणमाम्यहम्।। अमा माऽवतु कामा च चाइङ्गी टङ्कधारिणो। तारा च पार्वती चैव यक्षिणी शरिकाष्टमी।।

♦♦♦

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

लीला

चराचर छुख परमेश्वरो
रछतम पनन्यन पादन तल

१. गज़ मुखत्र बाल. चन्द्र लम्बोदरो, वेनायको भ'विनय जय
हरमुख दर्शुन दितम ईश्वरो रछतम०

२. निष्कल नाव चोन निरंजनो सो, य कल धा'रित त्रिकारण
स्मरणि चाञि सति जन्म मृत हरो रछतम०

३. देवियि त. देवता सा'रिय स'मित
न'मित छिय क़रान चाञि स्मरण
स्मरणि चाञि सति सा'र्य पाप हरो रछतम०

◆◆◆

१. गो,डञ गणपत जियस कुन कर नमस्कार।
पतह रठ राजर्यञि हुंद खास दरबार।।

२. व'नित क्या ह्यक. ब. देवि चा'ञ लीला।
करै वोन्य मूर्खगियि किञ मूर्ख. खेला।।

३. च. माता शारिका संतुष्ट म्य' प्यठ रोज़।
गदा आमुत बदर्गाह छुस सदा बोज़।।

४. वहा'रित ज़ाल संसारन वो,लुम नाल।
करुम वो,ञ चार. नत. क्या म्योन छुय हाल।।

५. मदन लोभन मोहन क'रम.च छनम जाय।
कृपाये किञ करुम मो,कलावनुक पाय।।

६. अहंकारन स्यठाह ह्यो,तमुत छुनस तल।

इमन चो,न मुश्किलन माता करुम हल ।।
७. बदर्शन छुस न. वातान नित भवानी ।
क्षमा पापन म्य' करतम मा'जि भवानी ।।
८. को,ठ्यन शक्ती अ'छिन थावतै पनुन गाश ।
दरई दुनिया फक़्त चा'ञिय म्य' छम आश ।।
९. म्य' मूर्खंस गछ़त. बूज़ित मा'जि भवानी ।
सिवाये चानि वन. कुस छु म्यो'ञूय ।।
१०. दिलुक तमन्ना म्य' कडतं छुस ब. चोन दास ।
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तल्य आस ।।
११. कर्म फल. किञ अगर केंछा म्य' छुम पाप ।
क्षमा सागर च़. य'मि किञ छक करुम मुआफ ।।
१२. क़लम तुल पान. लेख म्या'ञ कर्म लेखा ।
करुम स्य'ज़ कांह अगर ह'जि छम म्य' रेखा ।।
१३. कृपा सागर ज़गत माता छु चोन नाव ।
शरण आसै पद्यन पनन्यन तल्य थाव ।।
१४. सिवाये चानि छुम नह कांह रछन वोल ।
च़. देवी म्या'ञ छखना मा'जि तय मोल ।।
१५. भुज़व अष्टदशव सूति कर च. रक्षपाल ।
च़. य'मि किञ आसव.ञ छक दीन दयाल ।
१६. च्य' रुस्तुय कस वनै कुस बोज़ि म्योनुय ।
ब. छुसना नाबकार संतान चोनुय ।।
१७. यि अक मशहूर कथ प्रथ कान्ह छु ज़ानन ।
कुपुत्र छुय कु माता छय न. आसन ।।

१८. मंगुन छुम नह तगान बोज़ुन तगान छुय।
चववुन शुर माजि इथ पा'ठि दो,थ मंगान छुय।।
१९. दिलस य'च़ कोल अमिकुय छुम म्य' हावस।
दितम दर्शन लगय पा'र्यं पा'र्यं ब. नावस।।
२०. ब. चान्यन पाद कमलन रथ वंदय ना।
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत करय ना।।
२१. पनुन जुव जान वा'लिंजि खोंठ वंदय ना।
पन.निं इम टा'ठि छिम सा'रिय वंदय ना।।
२२. लगय ना चाञि मायाये लगय ना।
लगय ना बजि दयाये लगय ना।।
२३. इमन पंपोश. नेत्रन च्यय लगय ना।
मुकट धारी सुन्दर शेरस लगय ना।।
२४. यि क़्रेंछ़ाह छुम चोनुय छुम वंदय ना।
क्षमा करतम क्षमा करतम च़. क्षमा।।
२५. च़. छकना राजर्येञ राजन दिवान राज्य।
अनीत आमुत छुस म्य' बख्शुम ज्ञानकुय ताज।।
२६. गछ़ान दित छक अमीरन च्रूच अमीरी।
दरईं दुनिया म्य' करतम दस्तगीरी।।
२७. च्य' निश शाहो गदा प्रत कांह बराबर।
म्य' पादन तल कृपाये पनञि किञ वर।।
२८. ब. ज़ा'री छुस करान च्य'य दस्त बस्तह।
करय अर्पन जिगर ज़न पोश. दस्तह।।
२९. दो,युम ब्याख्या च्य' ह्यु छुमन. कांह ति दाता।
बहर क़.स्मुक मदद कर म्योन माता।।

३०. गं'डत गुलि छुस करान च्यय ज़ार. पारह।
प'तिमि वक्तय मतय करतम अवारह।।
३१. परैशा'नी यि म्या'ञिय करत. वो,ञ दूर।
इच्छ़ाये दिल क'रित गछ़तम म्य' मन्जूर।।
३२. च़. छक म्या'ञ इष्ट देवि कष्ट कास्तम्।
सदा संतुष्ट रूज़ित मनि भास्तम।।
३३. वनान सा'री छि चाञे जायि सिद्ध पीठ।
सिद्धत करतं म्य' ह्यु व मो,कलित गछ़िय कीठ।।
३४. ब कश्मीर क्रूति व'थि नेकनाम सत्ज़न।
कृपाये चाञि किञ सरतलि बन्योक सो,न।।
३५. मूर्ख बो,ज़ किञ न छम शक्ती न भक्ती।
दयालु छक गछुम बख्शित म्य' मुक्ती।।
३६. ब. छुस आरुत बन्योमुत आरवल ज़न।
गछर च़लिहेम बनिहेम आ'न, ह्युव मन।।
३७. अगर रछहं पद्यन तल कुस म्य' पोर्यम।
तवै किञ चा'ञ भक्ती ज़ाह न. सोर्यम।।
३८. क़बूल गछ़तम क'रित वो,ञ म्या'ञ ज़ा'री।
वंदय रथ पाद कमलन मा'जि च़ो,पा'री।।
३९. यि लीला परि युस सुबहन त. शामन।
त'मिस देवी सफल करि मनि कामन।।
४०. दपान 'दासस' छ्य' चा'निस टा'ठ भक्ती।
ब दुनिया सुख ब ज़ुक़बा दिम म्य' मुक्ती।।

♦♦♦

कष्ट् कास्तम भगवान् हरे
सन्तुष्ट् रोज़तम गरि गरे
भ्रमचे वुनिरे वुन. रोवुस
मोह छ़टि अनि घटि वति रोवुस
च्यय रोस्त कुस म्य अथरो'ट करे। सन्तुष्ट०
भव स़र क्रमन'य रो'टम खोर
ज़ोरावार आ'सिथ गोस कमज़ोर
छांब'रि लो'गमुत छुस बांब'रे
सन्तुष्ट०
वेरि बो' लागय शेरि पम्पोश
गद गद वा'णीयन थावतम गोश
व'दि व'दि यच़ छम म्यच़ मा हरे सन्तुष्ट०
वैकुण्ठ प्यठ यित नन वोरुय
गरुडस खसिथ त्रा'वथ सवा'री
मो'कलावतम संकट चि थरे सन्तुष्ट०
संकट मंज तस प्रहलादस
कन थोवथस आर'च़र नादस
हरिणा कश्यप अद मद वुतरे सन्तुष्ट०
हंग आख द्रोपदी नंग रछिथस
नंग वुछनुस तस सामर्थ कस
रंग रंग आभरणा नाल्य तस हरे सन्तुष्ट०
'लक्षणो' छ़ारुन परमानन्द
चराचर युस पोशि अंद त वंद
लो लो करान नेरि वो'नि लोलरे सन्तुष्ट०

◆◆◆

श्याम सो'न्दुर मो'रली वोलुय
खेलि बना' रास मंडोलुय

काच़ जून ज़न चमकान द्राये
वाच़ बंधन याद छुयनाये
याच़नायन यच़ भरवि लोलुय खेलि०
कव लजि मच़ छव जंजालस
लज़ि वजि मच़ मोहनिस ज़ालस
शुरि त बा'च़ मा'जि तय मोलुय खेलि०
गंग ज़लय छलि वो तनय
कोंग मलिवी व्ययि च़दनय
लोल करोस लो'लि मंज़ोलुय खेलि०
रोशि करि वी पोशन मालय
पोशनूलस डा'लिवी नालय
पालवनि अज़ वाद सोन पुलय खेलि

♦♦♦

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र
शिवायि नमः ओं नमः शिवाये
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो
जटा मुकट छुय गडिथ च़्य दीवो
चन्द्र अर्द्ध शेखर त्रिलोचनाये शिवायि०
च़्य नील कंठो जटन छय गंगा
च़ मोक्षदायक गोसो'न्र्य नंगा
अलक्ष अगोचर छ़य्यन गो'फाये
शिवायि०

बिहित छय गौरी ़च्य सू'त्य नालय
व'लिथ छुय सर्फन हुंदुय दुशाले
सहस्र सिर्यि तीज़ ़च्य मंज़ जटाये

शिवायि०

बो'ज़न बिछन हन्ज ़च्य ना'लि मालय
़च्य योनि कनि छुय नाग कालय
अगौर यि रूप चोन इतम दयाये

शिवायि०

अथस ़च्य डाबर च़ बीन वायान
कपाल माल त्रिशूल धारान
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये शिवायि०

रटिथ चक्र अं कुश खडग धा'रिथ
धनुर धनन मंज पिनाक चा'रिथ
वो'दनि ब डंडवत करय हा माये

शिवायि०

भवायि दीवो शर्वायि दीवो
भस्मायि दीवो सोरान ़च्य जीवो
़च्य ज़ीव पूज़ान छी भावनाये शिवायि०

सम्सार सो'दरस म्य तार तारुम
अज़पा गायत्री म्य पान यारुम
वो'लुस कोकर्मव कोवासनाये शिवायि०

अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम
शिवो शिव अर्पण शिवय बनावुम
ही आष तोशो इतम दयाये

शिवायि०

भक्त यि चोनुय कटाक्ष चाञे
स्वरूप चोनुय च़ो'पारि ज़ानय
श्राधायि भक्ति इतम दयाये

शिवायि०

गणेशस मंज़ छि स्यठाह यि खूबी
न छुय सु यूगी न छुय सु भूगी
भक्ती म्य प्रावनावतम धारनाये

शिवायि०

अनाथ बन्धो दयायि सागर
संसारकी दो'ख म्य यिम छि तिम च़ठ
ज़गतस दया कर च़ ह्यथ ओमाये

शिवायि०

◆◆◆

होश दिम लगयो पंपोश. पादन।
हा साधन हं.दि साधो हो।।

१. योगियन हं.दि योग. प्रा'णियन हं.दि प्राण.
ज्ञानियन हं.दि ज्ञानो हो
चानि प्रसाद. सूति सिद्ध छि तप साधान .... हा०
२. अच्युत चानि सति चि़त.कुय चे़नुन
नत. गछ़ि मेनुन क्रंजल्यन पोञय
प्रेम. ज़ल छुय वुज़ान भाव. नाग.दादन ..... हा०
३. ब्रह्मण ज़न्मस इथ छुम न. ब्रह्म. स्मुर'च़
वुछ म. म्याञि राक्षस प्रकृ'च कुन
चानि सति भक्ति चा'ञ कर प्रहलादन ... .. हा०
४. पूर्ण पुरुष. छम चा'ञी लादन

प्रणव. पान वंद.होय दोन पादन
नाद. बिंद. कन थव सान्यन नादन ..... हा०

५. विचा़र. नेत्रन गाश अन आस्य छि अ'नि
हर. हरमुख. च्यय दिमहोय व'नि
निष्कल. मन. निष्काम. राम. रादन ..... हा०

६. अनुग्रह चोन गछ़ि आसुन साधन
क्या छु पापन कमन ज़्यादन प्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन ..... हा०

७. 'कृष्णय' चाञि कपटञि तल नेरिहे
अद. कति पा'रिहे जाम. न'वि न'वि
पुश. कति प्ययिहस होंज़न त. रादन . .... हा०

८. छो़,पि मंज़ै तस छो,चरा नेरिहे
अद. कति वनिहे ज़ेछर यूत
यादै प्ययिहस वुञि छस आदन .... . हा०

◆◆◆

बिल्व ता'य मादल व्यन. गुलाब पंपोश. दस्ता'य।
पूज़ायि लागस परम. शिवत त. शिवनाथस्थ'य।।

१. जटा मुकट. प्यठ गंगा वसान छसता'य
.देवियि त. देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्ता'य
.भक्ति भावुक जय जय कार आ'सिन तस ता'य
पू०

२. .दया सागर. लोल. विज़ययि को.रनस मस्त ता'य
.हा पोश. मते होश. ड'लिम.ति, थव. द्यान ह्यस ता'य
.असार संसार छ़'ल. रावान सोर रोज़ि कसता'य
पू०

३. .पंपोश. पादव स्रुति इतम अस्ता'य अस्ता'य

.चरणन ब. वदै जुव जान ह्यथ वा'र्लिज वस ता'य
.राग. चानि स्रतिन पोञ वुज्यम नाग. रादस ता'य

पू०

४. पार्य पार्य लगोय ना शिव शंकर शिव नावस ताये
दर्शन चान्युक छुम यंच़ लोल स्नति हावस तोय
टोठतम सदाशिव जगत ईश्वर छुस बेकस तोय

पू०

५. अमर नाथस नीलकंठस कल वंदस ताये
विचार स्रतिन "कृष्णस" प्यठ आर इयिनस ताये
यछ़ि पछ़ि स्रतिन गछि अर्पण ह्यथ भावस ताये

पू०

कीर्तन : जयति शिवा शिव जय जय जानकी राम।
जय जय लक्ष्मीनारायण जय जय राधे श्याम।।

♦♦♦

गौरी अस्तोती

अर्धह रातन गुलि गन्डित बोज़ ज़ार म्योन
मा'ज्य भवानी अज़ करख ना चार म्योन
आदि म्योन तय अन्त म्योन आधार म्योन
सायि म्योन तय सार म्योन शह जार म्योन
अ'हमका तय अनपढ़ा जा'हिला
गा'फिला तय शरमसारा ना'दिमा
होल जिगरुक कास अन्धकार म्योन

मा'ज्य०

जान निसारा दर्द दिल ह्यथ दरजिगर
पाप कर्मव आ'र क'रम'च़ छस मगर
पाप घटि अथरो'ट क'रयम सरदार म्योन

मा'ज्य०

हांगिना छस मो'ल म्योनुय छुय पता
अख कतरा चा'ञ्य नज़रा छम सय्ठा
च़य हय गोहर च़य दुरे शहवार म्योन

मा'ज्य०

रुसि क'टह नाफ हिय्थ छस दरबदर
असलची माता म्य मा छम कंह खबर
च़य ज्ञान तय च़य हय मो'ख्तयहार म्योन

मा'ज्य०

तन्गदस्ती शरमसा'री तय हच़्चर
सोरवञय दोह अन्त रो'स्तुय छुम सफ़र
आदिशक्ति जानवञ इसरार म्योन

मा'ज्य०

तौव कलस प्यठ योर वोतसय शमनइ
मुर दारियथ त्र'थ बल'यिथ जामनइ
खा'लि ब नेरा य'ति भ'रिथ दरबाद चोन

मा'ज्य०

साधव तय संतव तय योगियव
पंडितव तय पाटिव तय ज्ञानियव
माज्य ब़ लगय कांसि नय रोट बार म्योन

मा'ज्य०

दामनस तल माता रछतम परद सान
लुक पामन युथ न लगिहे म्योन पान
च़यय हय सम्पत च़य हय भवसर तार म्योन

मा'ज्य०

सा'यला छुस शान्त रूपी बोज़ सदा
अथ छो'न तय न्यथनोन आमुत गदा

शक्ति रूपी वो'ञ्य च़्य ईतनै आर म्योन

मा'ज्य०

सर पथर पादन तलय म्य त्रोवमय
होल जिगरुक हाल पननुय भोवमय
दयारूपी जय च़्य बारम्बार म्योन

मा'जय०

♦♦♦

ग्न्योमुत छुम मनस चोन भाव
जगत माता म्य' दर्शन हाव।
म्य' आमुत लोल. बानन छाव
जगत् माता म्य' दर्शन हाव।।

१. जगत माता च़ टेठान छ्क
भगत संताननय़ बेशक
ह्यवान युस लोल. स्तुति चोन नाव जगत०

२. म्य' वोल शानव प्यठै बोर्य
म्य' पुशरोव पान च्यय सोरुय
म्य' केवल चोन छुम चिक चाव जगत०

३. ब. छुस प'ज़ि किनि स्यठा नादान
करान छुस पाप छुस अनजान
करुम माफ छुय़ च्य' माता नाव जगत०

४. प्रयम नगरस अंदर चा़मुत
ब. चान्ने डेडि तल आमुत
प्रयम अमृत पनुन दो,ध मय चाव जगत०

५. त'मिस क्या गम य'मिस यावर
च़. आसक ताज दित बर सर
शत्रु सुंद पोरि तस कति दाव जगत०

६. वदान छुस चा'न्न घनेयम क्ल
द'लिस तल मा'जि ह्यतं जल-जल
म्य' सतचे प्रेम. न्यदरे साव जगत०

७. वनान छुस वील. ता'य जा'री
थेकुस यूत काल प्रा'र्य प्रा'री
म्य' लो,कचार गव बुजर वो'ञ आव जगत०

८. ज़गत माता म्य' संतुष्ट रोज़
वनान ज़ा'री छुसै च्र्य बोज़
पन.ञ दयगत दयालु हाव जगत०

९. ब. छुस हियि गों,दि च्य' किति सारान
प्रयम सान डेडि तल प्रारान
च. प्रेम. कि. भाव. हियि गों,दि छाव जगत०

१०. छु 'बाग़वान' च्यय परन प्योमुत
गं'डित गुलि च्यय शरण गोमुत
छु स्मराण चोन हर दम नाव जगत०

◆◆◆

अज़ वाति बूजुम मोल म्योन
कोसम वतन वथरावस'य।।

१. लछ़ ज़न डुवित संताप पाप
अंतः करण घर. नावसय
ठेकुर कुटिस मंज रंग. रुत

प्रंग आदरुक पा'रावसय०।। अज़ वाति०

२. सों, बरित र'सिलि रति कर्म. फल
मस ख'सि भ'र्य भ'र्य थावसय
अशि गंग. वान्ने खो,र छ्लस
रूमालि गुम. वथरावसय०।। अज़ वाति०

३. तिम पाद हृदयस प्यठ र'टित
दुख दा'दि ज़न्म. कि भावसय
को'छि क्यत रछुन लो,क. चारकुय
स्मृत चि़त्तस अज़ पावसय०।। अज़ वाति०

४. भावुक घन्यर लोलुक सन्यर
वा'लिंज़ मुचरित हावसय
नोव नागरादस सोंत ज़न
स्नेह मायि हुंद कुज़नावसय०।। अज़ वाति०

५. गुरू भावनाये सति शेर
नो,मरित खो,रन तल त्रावसय
घर. बार ता'य आसुन बसुन
सोरुय पनुन पुशरावसय०।। अज़ वाति०

६. गट. प'छि चन्द्र ज़न नाम रूप
अख अख कला व्य'गलावसै
सिर्यस अंदर लय प्रावि ज़ून
सार्यय बनन तिच मावसय०।। अज़ वाति०

♦♦♦

स्मरण पन.ञ दिचा'नम्
प्रेमुक् निशान. व्य'सिये।
र'छ़रुन तो,गुम न. रोवुम
ओसुम न. बान. व्य'सिये।।

१. पत कालि छुम न. द्युतमुत
सो'न मोक्त. दान व्य'सिये
अ'नि सारि क्या लभक वो,न्न
तिम मो,क्त दान. व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

२. वा'लिंजि मंज़ थवुन गो,छ
हावुन थो,वुम अथस प्यठ
राह कस छु को,र म्य' पानस
नुकसान पान. व्य'सिये० ।। स्मरण पन.ञ०

३. हावुन छु रावरावुन
चावुक समर छु खा'मी
थावान छि छाव. बापत
बानन ति टान. व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

४. यन. सुय निशान. रोवुम
तन. म'च गयस ब. फलवाल
न्युन ह्यो,न न. केंह ति फेरान
छस वान. वान. स्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

उत्तर

५. व्यसरुन पनुन वनस क्या
वननस ति वार मा छुम
बुथ मा सम्यम दो'हस त्युथ
गछ. को,त शबान व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

६. यछ़ पछ़ म. हार ब्याखा
ह्यत यूर्य. वाति कांछ़ाह
तस छा क'मी निशानन
भ'र्य भ'र्य खज़ान व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

७. डोलान कोहन वनन मंज
शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़
का'त्याह निशान. व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

८. व्यसरित ड'लित पथर पथ
बुथ क्या दिमव त'मिस निशि
पोत् फेरनुक पकान छा
युत ह्युव बहान. व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

९. मानव ज़िअ'सि ह्यमव गो,त
छोर्या तसुंद मुहब्बत
पैबंद यि आनदुक छा
शुर्य दोस्तान. व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

१०. दिल फुटिम त्यन छु तोशान
य'च़ गरि'मत्यन छु रोशन
गछ़ वर्यम.त्यन सुदामन
प्र.छ़ गा'यबान. व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

११. अंदि प'खि त'ति छुआसान
बो,द. ब्रोर सूर दासुन
बोज़ान छु माय ला'गित
लोल.कि तरान. व्य'सिये०।। स्मरण पन.ञ०

♦♦♦

मा'ज्य भवानी

मा'ज्य भवानी सहस प्यठ सवार
वन्तम च़ कोत दोरा'नी।
ठहराव कदम अख साथा
हाल म्योन गछ़तय बोज़ा'नी।।

यन प्यठ च़्य निशि मा'ज्य छेन ब गोस
त़न वोतुम च़्य प्रारा'नी।
चानि दादि च़टमय कोह त बाल
च़्य पथ ब गोस वा'न्न दिवा'नी।। मा'ज्य०

ओसुस वुछान चाने वतय
लूसुय च़्य पथ ब छ़ारा'नी।
छाय चा'ञ्य प्ययम ना बुथि म्य मा'ज्य
ओसुस त'थ्य ब प्रारा'नी। मा'ज्य०

आशायि हंज़ ग'र तय प'हर
ओसुस तथ्य बो गंज़रानी।
कर बनि म्य म्युल चोन, कर म्य हावख मोख
म्य बनि मेहबानी।। मा'ज्य०

चानि विरह-कि नारुक म्य ज़्यत
जिगरस ओसुम वुहानी।
कलि चानि सोर्य सोर्य को'र म्य सूर
अन्दरी गोम सो ज़ाला'नी।। मा'ज्य०

यन द्रास च़्य छ़ांडनि पत त ब्रोंठ
छ़ायि चानि गोस गथ दिवानी।
सनि कुस च़्य रोस माज्य क्याह म्य गोम
क्या ओसुय म्य गुज़रानी।। मा'ज्य०

चानि विरहकुय मा'य अन्दर भार

ओसुस बो व्यतरावानी।
दुशवार म्य गोम दूर्यर यि चोन
माज्य ओसुस न चालानी।। मा'ज्य०
लो'लि मंज मा'ज्य पाद ह्यथ
सोज ओसुस बो वाया'नी।
गांगलि करिथ तथ्य सा'त्य ब पान
ओसुस भ दम कडानी।। मा'ज्य०
विरह कि दोख दरियाव गोत
लग्य लग्य म्य तुज परेशा'नी
विरह आवलन्य चा'ञ रो'टनस तल
ओसुस न तति वो'तला'नी।। मा'ज्य०
चानि दादि व'द्य-व'द्य अछन लज म्य जून
खून ओसुस बो हारा'नी
चानि डेशन बापत ब मा'ज्य
पान ओसुस मारा'नी।। मा'ज्य०
ला'गिथ स्यठा संगदिल च्य मा'ज्य
अमि मंज च्य क्या छुय नेरा'नी।
क्या यिय छा माजि हुंद स्वभाव
छा दूर शुरिस सो त्रावा'नी।। मा'ज्य०
चाने ख्याल मा'ज्य चोन स्वरूप
ओसुस ब ठीकरावा'नी।
तथ कुन वुछ शेर करम
अज़ ताञ ब गोस ह्यन कडा'नी।। मा'ज्य०
वो'ञ गयोम मय मिलचार च्य सात्य
अड खोर च क्याजि ठहरानी
शोकसान बो आसय ब्रोंठ कुन

दिथ कोत छख चलानो।। मा'ज्य०

छुस वनान च्य मा'ज्य गुदरुन पनुन
बूज़िथ च ढाल कोत दिवा'नी
दक ज़द ब छुस प्योमुत पत्थर
फ्रक-होत च्य पथ ब लारानी।। मा'ज्य०

मया स्यठाह गोम मा'ज्य च्य पथ
'क्य.२ बो गोस वो'ञ थका'नी।
'ञ च्य रो'स अख क्षन यमि अपोर
हरिथ छुसस न केंह ह्यका'नि।। मा'ज्य०

वो'ञ म गछ़ म्य बालकस नज़रि दूर
ओरुत च्य छुस वना'नी।
बेकस त बेबस छुस ब मा'ज्य
च्यय रो'स छुसय ब तम्बला'नी।। मा'ज्य०

ा रोज़ म्य सा'त्य २ नत म्य निम
तो'त २ यो'त च फेरानी।
पादन तल रठ म्य युथ च्य सा'त्य
बति आस शोल मारानी।। मा'ज्य०

अद चल्यम चानि विरहुक म्य नार
शेहजार गछ्यम म्य वाता'नी।
चलनम दुःख त दाद्य दूर गछ़न
सर्व सुख रोज़य प्रावानी।। मा'ज्य०

बटवारि न्यथ च्य निश यिवान सराफ
आश्रम ह्यथ शरण यिवानी।
कासतम म्य दुःख त दाद्य भय त गम
सहायतस रोज़तम भवानी।। मा'ज्य०

♦♦♦

पंचस्तविः

१. पाद चाञ्य आनन्द दायक
इन्द्राज़न व्राव यथ भुक्तमाल
यम्य सूत्य ज़ीर दिचथ महिशासुरसय
क्षन मात्रस मन्ज वोत सु पाताल
सुय रोन्य पाद चोन रूज़ितन म्य हृदयस
युथ ब अम्बिकाय बोज़ श्रोणि श्रोणि ताल
सुय मनोहर पाद बनितन म्य हेतु
जय जय कारुक म्ये हावितन कमाल।।

२. माज्य भवान्य लक्ष्मी वश करनस प्यठ
पादच गर्द चान्य छि ताकत सोस
चानि प्रणाम विजि लगि यिमन ललाटस
पादच गर्द चान्नय बड़ि शान सोस
सुय पादच्च गर्द गालि दुर अक्षर तस
ज़गतस मन्ज बनि सु जय कार सुस।।

३. ही मूढ़ः क्याज़ि छुख बे फायदः तप किन्य
पननिस शरीरस तकलीफ दिवान
यज्ञ किन्न दान किन्न बजि दक्षिनाई किन्न
क्याजि छुक घर पनुन खाली करान
गछ शरण माजि शरिकाई प्राव च भक्ति
ह्यि करुण तसुन्दुय पाद सेवन
अद फुलमत्य पम्पोश नेत्रव सोस
लक्ष्मी च्य ब्रोंठ-ब्रोंठ ह्ययि दोरुण।।

४. माता प्रथिवि प्यठ सिठाः च्य सन्तान
तिमन मञ्ज़ बयि योत छुसय नाभकार
छख म्य व्रावन माता छुय न च्यि जायिज़
ही पार्वती कोनः छख विचारान
कुपुत्र छि जगतस मञ्ज पैदः सपदान
माता कुमाता जाहं ति छिनः बनान।

♦♦♦

आसय शरण च़्यय पादन विनय किञ नमिथय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च़्यय
व्याकुलतायि मंज़ ब'जि आपदायि मंज़
गृह पीडायि मंज़ माता रछतम च़्यय
सरस्वती त्रिपोर सोन्दरी ज़गतमाता
भवानीश्वरी छक आसवञ्य च़्यय
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्य च़न्द्रमा कुमार
विष्णु गणेश छि पूजान च़्यय
अन्दर न्यबर वातिथ त्रिभुवनस सा'रिसय
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम आ'सिनय च़्यय
आसय०

यमि सुन्द प्रभाव छुय हद रो'स्त आसवुन
भगवान त शेषनाग छिन वनिथ ह्यकान
ब्रह्मा त शंकर तिम ति छिय हा'रिथ
चाञि ताकतुक महिमा न ज़ानान
सोय चण्डी दीवी रछतन म्य
यो'स सा'रिसय ज़गतम छि पालान
दीतन म्य तिछ़ बो'द्ध यह'य ज़गतमाता
यमि सूत्य अशुभ भय छु नष्ट सपदान आसय०
ही दीवी छक च़ त्र्यम्बक पत्नी

ज़्यय वनान सती ज़्यय पार्वती
त्रैलोकी हन्ज़ माता भगवती
ज़्यय वर दिवान छख च़ मृडानी
ज़्यय त्रिपोर सोन्दरी ज़्यय रुद्राणी
ज़्यय भयानक रूप ज़्यय शरवरी
ज़्यय चंडी छक ज़्यय त्रिशूल धाराणी
कलि कालस नाश करानी। आसय०

ही दीवी चान्नि दर्शनुक म्य अभिलाष
प्रथ विज़ि नेत्रन मंज़ म्य रुज़ितन
चान्य गुण बोज़नुक तमन्ना म्य आस्यतन
प्रथ विज़ि रुज़ितन म्यान्यन कनन
चा'ऩ्य नाम स्मरण ज़्यतस मज़ म्य गरि गरि
चा'ऩ्य पादय पूज़ा म्यान्यन अथन
चा'ऩ्य कीर्तन कर वन्य रुज़ितन वाणी
उपासना चा'ऩ्य मत कम म्य गछ़ितन आसय०

युस पुरुष अकि लटि करि ज़्यय कुन प्रणाम
तसन्ज़ि ख़्रावि प्यठ छु इन्द्राज नमान
युस पुरुष करान आसि माता चा'ऩ्य पूज़ा
पूज़ान तस छि सा'रो दीवता
युस पुरुष करान आसि माता चाऩ्च स्तुता
तमि सन्ज़ अस्तुतिः छि दीवता करान
युस पुरुष करान आसि माता चोनुय ध्यान
स्वर्ग चि अछ़ रछ़ तस छि स्मारण आसय०

कम सना दुख छि तिम ही दुखन गालवन्य
यिम गलन न चाऩे स्मरिण सू'त्य
को'स छि नेकनामी यो'स कुलस खारव'न्य
योस न बनि चाऩे स्तुतायि सू'त्य
कोस को'स छि सिद्धि ही सिद्धिदात्री

यो'स न प्राप्त सपदि चाञे पूज़ायि सू'त्य
कम कम छि तिम यूग ही ज़गमाता
यिम न स्यद्ध बनन चाञि चिन्तन सू'त्य आसय०

मतलब छख दिवान दुश्मनन गालान
आपदायन छक नाश करान
मन किञ रुगन माता च़्यय गालान
दीह चन व्या'ज़न शोमरावान
संसारच्य यिम सुख संपदायि ब'जि
माता तिमन छय व्यास्तारान
अन्दररिम दुःख त दा'द्य जीवस च़्यय गालान
यिम हय अकि लटि माता नाव चोन सोरान
तिम कम सना पापव निशि छिन मो'कलान
यिम सदा च़्यय कुन गुलि गंडिथ छि रोज़ान आसय०

ही दुर्गे चाञ्य स्मरणि ज़ीवस
सा'री भय छि नाश सपदान
वा'र पा'ठय करय ब चा'ञ्य स्मरण
त्यलि छक ज्ञानच वथ हावान
दारिद्र भावय ब्ययि कठिन दो'ख त दा'द्य
च़्यय रो'स्त कुस छुम म्य दूर करान
उपकार छक करान तिमन सा'रिनय ज़ीवन
यिम सदा च़्यय कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान आसय०

मन्त्र त यन्त्र छुस न केह जानान
जानान छुस न माता चोन महिमा
आवाहन त ध्यान छुस न केंह ति जानान
जानान छुस न माता चानी तुताः
मुधरायि चानी माज्य छुस न केंह ति जानान
चेय पत पत पकित कलीशस नाश सपदान।

◆◆◆

माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर

१. बन्द छुस चन्दपोरि कर हयबन्दगी-
माज्य भवनैश्वेरी अनुग्रह कर।।

२. जाल वोलमत छम संसार छलगरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

३. दर्शन चानिच छमलादन
पम्पोशि पादन वन्दहय प्राण
मौनि फलय माल थवहय कर करी
माजय भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

४. उपलदन्ध दन्ध बो वेरिचानि आसय
प्रभात द्रासय हयथ चोन नावा
गुपकारय बैयि निशात वोतुस यिशबरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

५. छख चोतुर बोज़ मोज भक्तयन पालान
पाप छख गालान बागरावान सौखा
चानि कृपायि भवसर कमकम तेरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

६. चय सर्वरूपी चय सर्व शक्ति
ही भय हरन्त्री चेय नमस्कार
रागिन्या दुर्गा च्रय अष्ट सैदी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

७. आंकाशी चय चण्डिका दीवी
पाताली चय भवनैश्वरी
मृत्यु लूकी छख चय जया दीवी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

८. पादर सह चोन वाहन शूबवुन
रूप चोन लूबवुन शान्त सोखकर
आरत्य आमुत्य यिन कडख मुर्य छरी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

९. कर्तव्य मशराव्य नेति नेम कर्म उल्य
धर्म उल्य तन छैट मन आस छयाट
सान्यन नेत्रन पान्य पान कर शेंदी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

१०. मुह् अनिगाटि तय अन्धि हरि नालवोल
आचर व्यचार डाले लूभन मार्य
श्रान ध्यान स्मरणा जाहं मा असि करी
माज्य भवनैश्वरी अनुग्रह कर।।

११. सायिल वनि तय चय वनित क्योह
माज्य दीवी चय छख त्रिपोन सोन्दरी
माज्य भवनौश्वरी अनुग्रह कर।।

◆◆◆

सुख त सम्पदा दादिन दवा, माज्य भग्रान वुन्किनस
दादिन दवा रोगन शफा माता भग्रान वुन्किनस

१. क्या छु गम यस नखि आसख
सपदन्स मुशिकिलन हल
यीर गमितन भव सागरस
माज्य तारान वुन्किनस।।०।।

सुख०

२. पूर्व पच्छिम किन दक्षिणी उत्तर किन
माज्य रच्छवुँय पानय

असवुँज्ञ मुख खसवुज्ञ सहस
माता फेरान वुन्किनस।।०।।

सुख०

३. गुल्य गंडित आमुत गदा लायान ड़ेड़ितल सदा
ज्ञानिक तअरि पनन्वि अथव
माज्य मुचरान वुन्किनस।।०।। सुख०

४. साहसि बज़ नरि यस छि दार्वुन्य
रच्छवुन्य यस छः दासन
क्षण क्षण माज्य कर्मक न्याय
माज्य अंजरान वुन्किनस।।०।। सुख०

५. यस करान छक पर्दपूशी
वुच्छि कति सुय सख़ती
शर्णा गत्न रोन्यि दामान
माज्य त्रावान वुन्किनस।।०।।

सुख०

६. छक चः आसवन्य ज्ञानरूपी
मुखय दाता ईशरी
त्रयशी हत्यनय यूग अमृत
माता चावान वुन्किनस।।०।।

सुख०

७. भय हॅवनय छक चय माता
पापमोचन चण्डिका
खोफजदनय खोफ ज़न्मक
माज्य कासान वुन्किनस।।०।।

सुख०

८. त्रशूल सतिय खड़क सातिन
माज्य रच्छवुन्य भक्तिन

ज़ार सान्य पनन्वि कनव
माज्य बोज़ान वुन्किनस।।०।।
सुख०

९. रंग रंग मातां तंग आसयै
अज़ बासयोम डुख चोन
पान पुशिरत च्य बु अर्पन
माज्य गंज़रान वुन्किनस।।०।। सुख०

१०. वारे वारे सरी ईवान
दुःख त ददय् माज्यि भावान
सर त्रावान तल पादन
माज्य टोठान वुन्किनस।।०।।
सुख०

११. कर्मच्य वदल जन्मच्य हान
विज़ि विज़ि करान नीमज़ान
साकिया मुय फिर म्य बानन
माज्य चावान वुन्किनस।।०।।
सुख०

१२. कोमल आमुत छु पोश हित
हुर अठम दुहो सु योर
पोशमोत तिम च्यार चारी
माज्यि लागान वुन्किनस।।०।। सुख०

◆◆◆

नव दुर्गा लीला

कांसि वननस रुदुम नय वारय
नव दुर्गा करि सोन चारय।।

१. लगिमित छय चेनिस जप सय
सिद्धि करतय म्यानिस तपसय
प्रथ कारस माज्व दितम तारिय।। नव दुर्गा०

२. शैलपुत्री कनथव नादन
प्राण वन्दय न चानन पादन
कन थावतम बोज़तम ज़ार पारय।। नव दुर्गा०

३. ब्रहचारिणी ब्रह्मनिश रछतम
सनमुख म्य दर्शन हावतम
मतय त्रावतम यमि संसार।। नव दुर्गा०

४. चन्द्रघण्टी कास्तम खैरी
लोल मन सीत करहय ज़ारी
जूयूठ संसार क्रूठ व्याहारय।। नव दुर्गा०

५. कुषमाण्डी लगहय नावसय
अर्पन छुसय चयानिस नावस
मुकलाव तम नरकनिय नारय।। नव दुर्गा०

६. सकन्दमात्री शरण बय आसय
काम क्रोध लोभ अन्धकार कासतम
नाव चानि सीत नावि लगम तारेय।। नव दुर्गा०

७. कात्यॉयनी मुशकिलन करुम हल
अहंकारन रोटमुत छुनस तल
चारह करतम बह गछय मारय।। नव दुर्गा०

८. कालरात्रि कालबय कासतम
परि पूरण मनस मन्ज़ म्याबासतम
गाश हावतम मंज़ अन्धकारस।। नव दुर्गा०

९. महागौरी शरण बय आसय
पाप म्यानी माता चय कासतम
मोकलाव तम नरकनि नारय।। नव दुर्गा०

१०. सिद्धिदात्री सिद्धी म्य करतम
इनि गछननिश माज्य मोकलावतम
असय सारी करान छय ज़ार पारय।। नव दुर्गा०

११. दास चोनुय वुलमुत छु गमनय
पोशि चमनय छुय सगनावान
चमनस मज़ मुशकिन धारय।। नव दुर्गा०
माज्य कॉसि नय रोट म्योनुय बारय नव दुर्गा०

♦♦♦

पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय

वीरबद्र कासवुन छुख असि भय
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।
भक्त्यन छि गरि गरि चानी लय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।०।।

यति आसि श्री राम सुन्द कीर्तन
तति आसि बलवीर सुन्द वर्णन
दर्शन चानि गछि पापन क्षय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।०।।
चानि डेडि तल युस लायान नाद

बोज़ान तस छुख चय फर्याद।
सोख, मोख तस गछ़ान मंज़िल तय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।०।।

पज़ि मन येछि पछि आयि लारान
राम राम कर्यथय ध्यान धारान।
पनुनि भक्ती हुंद दित असि पय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।०।।

छालि अकि चेय कौरुथ समन्दर पार
रावनस त लंकायि कोरुथ लुर पार।
राक्षसन प्रलय गव चानि ग्रजनय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।०।।

नाम स्मरणि चानि मन छु हर्शान
दोख चलान अंद वंद सोख छु सपदान।
शांती छे वोपदान स्यज़र पज़रय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।०।।

चानि दरबाद कुस खाली द्राव
यम्य योछ़ यी तस ती बदस आव।
येम्य थव क्षन क्षन चानी शय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय।०।।

बति आस चानी आशाय योर
ज्ञानचन बरन्यन मुचराव तोर।
श्रदायि म्यानि द्यव नेरि न्यरनय।।

पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय ।०।।

दर्शन चानि फोलि मन पम्पोशे
गट चॖलि गाश फोलि लयि यियि होश।
प्रेयम सेतारस अद वोथि खय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय ।०।।

दामन चोन रौट मटि छी चेॖय
चॖय छुख रक्षिपाल रयम छय चेॖय।
अर्पन जुव करय त प्राण आलवय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय ।०।।

चॖरनन हटिकुय रथवंदहय
आंगनच गर्द अछेवय बे डुवहय।
सुब शाम प्रयम पूज़ा ब करहय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय ।०।।

भाव कोसम ह्यथ हलमस क्यथ
छुय यिवान सांयिल ननवोरन्यथ।
मोख हाव अद वुछत क्याह ब-तोशय।।
पवन पुत्र हनुमान भव्यनय जय ।०।।

♦♦♦

"ओम"

माज्य भवानय सथ छम मय चानी
वथ मय असलिच़ हावतम
कूत काला रोज़ बेज़ान
ज़ानि हुन्द मस मय चावतम ।।०।।
बोजते क्रयाद ज़ारी
सोज़तम धादन दवा
रोज़ तम हर दम मेहरबान
ज़ाँह तिय पर् मत पावतम ।।०।।
काहिली कम हिम्मती
वसवास निश थावतम मय दूर
वलवला जोशा तय अरमानना
दिलस मन्ज़ त्रावतम ।।०।।
शबनमिक पाठ्य् आफताबस
कूत काल करय इन्तिज़ार
गोडनिचे अनिवारि पोशन सीतं
सुलि वुज़नावतम ।।०।।
शकलि छुस इन्सान मगर
इन्सानियत निश बेखबर
हयाव तम मतं इमतिहान
यमि शकलि मत मन्दछावतम ।।०।।

इम सोखन पैदा करण
खलकन अन्दर उलफत त् लोल
दूर यमि सीत गछ़ि नफरत
तीय वनुन हछिनावतम ।।०।।
दूर छुस प्योमित लुकव निश
छुम तवय महजूर नाव
तिम अगर दूरन मयनिश
चति दूर ज़ाह मत त्रावतम ।।०।।
माज्य भवनाय सथ छम मय चानी
वथ मय असलिच़ हावतम
कूत काला रोज़ बेज़ान
जानि हुन्द मस मय चावतम ।।०।।

◆◆◆

शिव चतुर्दशी

(महिम्नः पार किस छन्दसप्यठ)

महादेवस मंत्रव तनमन्
त धन युस क्षण सुरे
तमिस शंकर टूठिथ जन्म
मरनक दुःख त भय हरे।
१. ब्याहिथ कैलासस प्यठ
हिम गिरि सुता ह्यथ खुनि गणेश
तिथिस स्थानस तस रूस
परमब्रह्म योगी कुसो धरे। महादेवस०
२. तमिस छा काहं ति पोशान

अमर ज़गतक देव छि तसि शारण
छि आसान तिम ति प्रारान
कमि क्षन महेश्वर असि वरे। महादेवस०
३. खसिथ काहं ति-क्रम डालुन,
कुनि विज़ि छु तस तान्य प्रभवरस
छु टोठ सुय तस युस काहं
शिवमय बनिथ शिव शिव परे। महादेवस०
४. छु भक्तस शिव शंकर शम सुख
वरान बडि अनुग्रहय
जगत मुक्ति तस दिथ, रचि वति
निवान गरि पथ गरे। महादेवस०
५. प्रभो चिन्तामय केवल चर अचर
जगतकि भव महेश
छु फुलरावुन चेय तान्य रसरहित
हुछिमचि कुलि थरे। महादेवस०
६. प्रभो गौरी शंकर, अनुग्रह
करखना असि वरख
मनक्य संताप दुःख त दाध
जन्म मरनकि यति तति हरख। महादेवस०
७. म्य दिख तार तारनहार, शिव शिव
परान युथ ब तर अपोर,
सुमन मा सत मार्ग सुकृत कर्मन
हुन्द म्य फल व्यचोर। महादेवस०
८. अपज़्य संसारक्य सुख, गुडप्यठ
म्य भास्येय प्रियवन्ययि

विषय सुख तिम भोगित, मनुष्य
मन वछिम्य दयिक्न्ययि। महादेवस०

९. चे यिम् भाव शेरि भावनय, कमल
तुलसीदल त् व्यन गुलाब
तिमन छुख पूरान आश, मनुष्य
जन्मक्य दिथ सुख त सुलाभ। महादेवस०

१०. चे छिय ब्यल त मादल टाठि
ननि तनि धतरि पोश फलिमतिय
खटिथ चोन भाव शैव, शिव क्रम
व्यचार्यथ छि डलिमतिय। महादेवस०

११. असि रटमित छ मायाज़ाल, शिव
वछित सोन हाल ज़्यनप्यठय
अपज़ि पज़ि भाव मोहक्य,
विजि रटिथ कमि मन खटय। महादेवस०

१२. करुन छुय चे काहं सोन पाय पज़ि
वतिम्य दिम (तार) तर नचीय
विनाशी देह प्राविथ
हर शिव महेश्वर परनचिय। महादेवस०

१३. मनुक सन्तोश प्राविथ असि लगि
सुखुक तार भवसरय
ब किथ चय निश दूरय यति तति
च्यय युदवय क्षण खरय। महादेवस०

◆◆◆

व्यनथ

अख अनुग्रेह चोन दरकार माजॉय,
दार अव्तार यीतनय आर माजॉय
वठ वॉलिंजि अशिस लॅज दार माजॉय।।
दार अवुतार यीतनय आर माजॉय।

१. मूल् मूर्खाह छुस दरमॉद् गोमुत,
सरि राह छुस बो उफताद्, प्योमुत।
आल्य बदनस वद्नस न् वार माजॉय।।
दार अव्तार योतनय आर माजॉय।

२. अन्दर्य अन्दरी हंद्रे यिलाश म्यॉनी,
दक् ज़द्स्य बस आशा चॉनी।
क्रूठ प्योमय कर्मुन बार माजॉय।।
दार अव्तार यीतनय आर माजॉय।

३. छुस फरियॉद्य आमुत चार् करतम,
यूग् अम्रेथ बानन पान् बर्तम।
ऑरतिस अज़ बोज़त्म ज़ार माजॉय।।
दार अवतार यीतनय आर माजॉय।

४. तार्य मुच़राव माता ज्ञान् गर्सॅय,
नोन प्रकाश त्राव ज़रस ज़र्सॉय।
कष्ट हर्तम छुय यखतियार माजॉय।।
दार अव्तार यीतनय आर माजॉय।

५. आशि चाने लारान आस बरतल,
कर्‌त माता मुशकिल म्योनुय हल।
न्याय ॲज़राव छख म्वखतार माजॉय।।
दार अव्‌तार यीतनय आर माजॉय।

६. परम पादन तल मॉज मेति वरतम,
नाश शापन क्षमा पापन कर्‌तम।
मंज़ आव्‌लन्य दिम वन्य तारमाजॉय।।
दार अव्‌तार यीतनय आर माजॉय।

७. त्राव नज़राह मॉजॉय बल् बेमार,
"प्यारि" लग्‌हय पादन बोज़तम ज़ार।
छोकन बानस करत् बुलगार माजॉय।।
दार अवतार यीजनय आर माजॉय।

◆◆◆

वचुन

हर् हर् स्वोरिथॅय गर् मॅशरावुन,
प्रावुन ज़िन्द् पान् गछ़ि परमदाम।

१. ग्वॅर् शब्दस सत्य लय गछ़ि कर्‌नी,
खय चॅलिपानय साद्‌नायि सत्य।
सूहम शब्दाह मनि लल्‌नावुन।।
प्रावुन ज़िन्द् पान् गछ़ि परम दाम।

२. अकुय ओंमकार न्येथ गछ़ि स्वरनुय,
परनुय, त् लेख्‌नुय छुन् दरकार।

चख शख दुँय हसद अथ मुरनावुन।।
प्रावुन ज़िन्द् पान् गछ़ि परम दाम।

३. नवन त प्रॉंच़न कॉम छय बियोनये ,
नोन्‍‍यये वॅन्‍‍नस छुम नो वार।
हम दियन राथ गछ़ि दम सोम्ब्रावन।।
प्रावुन ज़िन्द् पान् गछ़ि परमदाम।

४. ग्वॅर छुय सोरुय वार् प्रज़्नावुन,
थावुन दम् दम् ज़्वन बेदार।
स्वॅख्‍‍नन वातिथ माने छ़ारुन।।
प्रावुन ज़िन्द प्‍‍ान गछ़ि परमदाम।

५. दॉर मुचुरिथ गछ़ि हॉर बोल्‍‍नावॅन्य,
कॉर नोमरिथ कॅरुन्य ज़ाग्‍‍रथ।
सोरुय तमिस्‍‍य गछ़िपुशरॉवुन।।
प्रावुन ज़िन्द पान् गछ़ि परम दाम।

६. मन् पर्बत्सॅय सॉलॉह करुनुय,
गरुनुय पान गछ़ि क्रेयि बलसत्य।।
ओंमचे कुंनज़ि सत्य तौर मुचरावुन।।
प्रावुन ज़िन्द पॉन् गछ़ि परमदाम।

७. दिल्‍‍किस बागस गुल फोलरावतो,
सुल छय ज़ीवो गछ़ बेदार।
"प्यारे बानो "लाल म्वॅल् नावुन।।
प्रावुन ज़िन्द् पान् गछ़ि परमदाम।

♦♦♦

व्यनथ

दवाह दादयेन म्‌ दरकार, करत्‌ माजि कार मॉजॉय।
ॲछन ज्वय दिल बेकरार।। करत्‌ माजि कार मॉजॉय।

१. तुलमुलि थान चोनुय बोज़ अहवाल म्योनुय।
दरशन बल्‌ बेमार।। करत्‌ माजिकार मॉजॉय।

२. दक्‌ ज़द फ्रक लद आस, डेड्रि तल माता ब्‌ खास।
फ्वलराव म्योन दिहदार।। करत्‌ माजि कार मॉजॉय।

३. खॉल्य अथ्‌ चास दरबार, वन्‌ कस्‌ वॅननस न वार।
क्रूठ प्योम लानियुन बार।। करत्‌ माजि कार मॉजॉय।

४. अन्दरी हन्दरेयि म्‌ लाश, रोवुम होश तय बाश।
यीतनय म्योनुय आर।। करत्‌ माजि कार मॉजॉय।

५. ऑन्ज़राव न्याय म्यॉनी, पाय छम बस म्‌ चॉनी।
कारस दिम्‌ व्यस्तार।। करत्‌ माजिकार मॉजॉय।

६. करम लॉनिस मे अथ ड़ाल, अटि बार्य म्यान्य नखवाल।
अथ रठ नत्‌ गॅछ्‌खार।। करत्‌ माजिकार मॉजॉय।

७. पताह छुय हाल म्योनुय, कॉच़, जूनि लोग म्‌ ग्रहोनुय।
अनुग्रेह रुफाह दार।। करत्‌ माजिकार मॉजॉय।

८. लॅलुवुन म्‌ मनकलि नार, "प्यारे" बोज़तम ज़ार।
कॉह न्‌ "बानस" गमखार।। करत्‌ माजिकार मार्जाय।

भजन

पाठ तय पूजा केंह तिछुसन ज़ानान।
माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।
येलि छुम लोकचार च्यतस प्यवान,
तेलि छुम फेरान क्याह कोर मे।
कोन आसय सनमोख दोरान त लारान।।
माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।0।।
पननुय हालिदिल वोन्य बो व्यछनाव्य,
बावय माज भवान्य कन मे थावतम।
अछिव किन्य अशिकनि खून छुस बौहारान।।
माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।0।।
यिम जान्य म्य बाय बंदतिम द्रायि वोपरय
मतलब विजि आस्य सारी म्यानी।
मतलब नीरिथ कुनि काह न आसान।।
माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।0।।
क्याह वन मन पनुन सुति छुम न पननुय
इन्दरयि पनुन छुम ज़नति गार जान।
येलि कर द्यान चोन तेलि तिम ति कायान।।
माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।0।।
येलि येलि द्यान चोन माज ह्योत मे करुनय,
नफसन पननी फुरनम बुथ।
अज पगाह कर्य कर्य वाद ओस म्य थावान।।

माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।०।।

ओस वनान क्याह चेर गव आक बथ छु दूर असि

आकवथ सोरनस वुनि छुन वक्त।

ती वन्य वन्य ओस मे सुय ब्रोमरावान।।

माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।०।।

वोन्य बो ह्यास आसय प्योसय पायस

रोज वोन्य बो चान्यन चरनन तल।

करतम अनुग्रेह तथ छुस बो प्रारान।

माज भवान्य चेय शरन आमुत छुस।।०।।

♦♦♦

शलूक

१. न तातो न माता न बन्धोंन दाता

न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव

गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।

अर्थ

हे भवानि। पिता, माता, भाई, दाता, पुत्र, पुत्री, भृत्य, स्वामी, स्त्री, विद्या और वृत्ति - इनमें से कोई भी मेरा नहीं है, हे देवि ! एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो, तुम्हीं मेरी गति हो।।

२. भवाब्धावपारे महादुःखभीरूः

प्रपाप प्रकामी प्रलोभी प्रमतः।

कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं। गतिस्त्वं।।

मैं अपार भवसागर में पड़ा हुआ हूँ, महान् दुःखों से भयभीत हूँ, कामी, लोभी, मतवाला तथा घृणायोग्य संसार के बन्धनों में बंधा हुआ हूँ, हे भवानि ! अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

३. न जानामि दानं न च धानयोग
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम
न जानामि पूजां न च न्यासयोगा। गतिस्त्वं।।

हे देवि ! मैं न तो दान देना जानता हूँ और न ध्यानमार्ग का ही मुझे पता है, तन्त्र और स्तोत्र मन्त्रों का भी मुझे ज्ञान नहीं है, पूजा तथा न्यास आदि की क्रियाओं से तो मैं एकदम कोरा हूँ। अब एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

४. न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्
न जानामि भक्ति व्रतं वापि मात। गतिस्त्वं।।

न पुण्य जानता हूँ, न तीर्थ, न मुक्ति का पता है न लय का। हे मातः भक्ति और व्रत भी मुझे ज्ञात नहीं हैं, हे भवानि ! अब केवल तुम्हीं मेरा सहारा हो।

५. कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं गतिस्त्वं।।

मैं कुकर्मों, बुरी संगति में रहने वाला, दुर्बुद्धि, दुष्टदास, कुलाचित, सदाचार से हीन, दुराचार परायण, कुत्सित दृष्टि रखने वाला और सदा दुर्वचन बोलने वाला हूँ, हे

भवानि ! मुझे अधम की मात्र तुम्हीं गति हो।।

६. प्रजेशं रमेशं महेशं सरेशं
दिनेशं निशीथेश्वर वा कदाचित
न जाना मि चान्यत् सदाहं शरण्यो। गतिस्त्वं।।

मैं ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य किसी भी देवता को नहीं जानता, हे शरण देने वाली भवानि ! एक मात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

७. विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं।।

हे शरण्ये ! तुम विवाद, विषाद, प्रमाद, परदेश, जल, अनल, पर्वत, वन तथा शत्रुओं के मध्य में सदा ही मेरी रक्षा करो, हे भवानि ! एकमात्र तुम्हीं मेरी गति हो।

८. अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यववत्रः
विपतो प्रविष्टः प्रणाष्टः सदाहं। गतिस्त्वं।।

हे भानि ! मैं सदा से ही हनाथ, दरिद्र, जरां-जीर्ण, रोगी, अत्यन्त दुर्बल, दीन, गूँगा, विपदग्रस्त और नष्ट हूँ, अब तुम्हीं एकमात्र मेरी गति हो।

"श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं"

♦♦♦

अथ लघुस्तवः प्रथमः

नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै ।।

लघुस्तवः प्रथमोऽयमारभ्यते ।।

ऐन्द्रस्येव शरा, सनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदिद्यु तिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ।।१।।

या मात्रा त्रपुसीलतातनुलसत्तन्तूत्थिति स्पर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम्।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नरा ।।२।।

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तुसहसा ऐऐ इति व्याहृतम्
येनाऽकूतवशादऽपीह वरदे ! बिन्दुं विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाचःसूक्तिसुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ।।३।।

यन्नित्ये ! तव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलम्
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिदबुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्यतपसो यत्कीतर्यन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदप्रणयितां नीत्वोच्चरन्तिस्फुटम् ।।४।।

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्टप्रभावं बुधैः
तार्तोयीकमहं नमामि मनसा त्वद्बोजमिन्दु प्रभम्।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमनुगतो जाड्याम्बुविच्छित्तये
गौः शब्दो गिरि वर्तते सनियतं योगं विना सिद्धिदः ।।५।।

एकैकं तवदेवि ! बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली करोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम्।।६।।

वामे पुस्तक धारिणीमभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरां कर्पूर कुन्दो ज्जवलाम्।
उज्जृम्भाम्बुजपत्रकान्तनयन स्निग्ध प्रभा लोकिनीं
ये त्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः।।७।।

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीक पटलस्पष्टाभिरामप्रभां
सिञ्चन्तीममृतद्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्यात्ति वक्त्राम्बुजात्
तेषां भारति ! भारती सुरसरित्कल्लोललोलोर्मिवत्।।८।।

ये सिन्दूरपरागपुञ्जपिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमाम्
उर्वी चापि विलीन यावकरस प्रस्तार मग्नामिव।
पश्यन्ति क्षणमऽप्यऽनन्य मनस स्तेषामऽनङ्गज्वर-
कल्न्तास्त्रस्तकुरङ्ग शावक द्दशो वश्या भवन्ति स्फुटम्।।६।।

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाङ्गदधरामाऽऽबद्धकाञ्चीस्रजं
ये त्वां चेतसि तद्गतेक्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम्।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादहरहः स्फारी भवन्त्यश्चिरं
माद्यत्कुञ्जरकर्णतालतरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः।।१०।।

आर्भट्या शशिखण्डमण्डितजटाजूटांनृमुण्डस्रजं
बन्धूकप्रसवारुणाम्बरधरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽऽपीनतुङ्गस्तनीं
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्किततनुं त्वद्रूपसंवित्तये।।११।।

जातोऽप्यऽल्प परिच्छदे क्षितिभुजां सामान्य मात्रे कुले
निःशेषावनिचक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः।
यद्विद्याधरवृन्दवन्दित पदः श्रींवत्सराजोऽभवत्
देवी ! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयंप्रसादोदयः ।।१२।।

चण्डि ! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठन-
त्रुट्यत्कण्टककोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः।
ते दण्डाङ्कुशचक्रचापकुलिशश्रीवत्समत्सयाङ्कितैः
जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्भोजप्रभैः पाणिभिः।।१३।।

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्यमध्वासवैः
त्वां देवि ! त्रिपुरे ! पराऽपरमयीं सन्तर्प्य पूजाविधौ।
यां यां प्रार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नी कृताः।।१४।।

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
त्वत्तः केशववासवप्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्पविरमे ब्रह्‌ मादयस्तेऽप्यमी
सा त्वं काचिदचिन्त्यरूपमहिमा शक्तिः परा गीयसे।।१५।।

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्‌ म वर्णास्त्रयः।
यत्किञ्चज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः।।१६।।

लक्ष्मीं राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्‌ करीमध्वनि
क्रव्याददि्वपसर्पभाजि शवरीं कान्तारदुर्गे गिरौ।
भूतप्रेतपिशाचजम्बुकभये स्मृत्वा महाभैरवीं
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोयप्लवे।।१७।।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शम्भवी।
शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि।।१८।।

आई पल्लिवितैः परस्परयुतैर्द्वि त्रिक्रमाद्यक्षरैः
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैः सस्वरै।
नामानि त्रितुरे ! भवन्ति खलु यान्यत्यन्तगुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशतिसहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः।।१९।।

बोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं
भारत्यास्त्रिपुरेत्यनन्मनसो यत्राद्यवृते स्फुटम्।
एकद्वित्रिपदक्रमेण कथिस्ततपाद संख्याक्षरैः
मन्त्रेद्धारविधिर्विशेषसहितः सत्संप्रदायान्वितः।।२०।।

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वा नया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि।
सञ्चिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि स्फुटम्।।२१।।

◆◆◆

ॐ

अथ चर्चस्तवो द्वितीयः।।

नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै

आनन्दसुन्दरपुरन्दरमुक्तमाल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः।।१।।
सौन्दर्यविभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
सम्पत्तिकल्पतरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति।
एते कवित्वकुमुदप्रकरावबोध -
पूर्णेन्दवस्त्वयि जगज्जननि प्रणामः।।२।।
देवि ! स्तुतिव्यतिकरे कृतबुद्धयस्ते
वाचस्पतिप्रभृतयोपि जडीभवन्ति।
तस्मान्निसर्गजडिमा कतमोहमऽत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुरतापनपत्नि ! कर्तुम्।।३।।
मातस्तथापि भवतीं भवतीव्रताप-
विच्छित्तये स्तुतिमहार्णवकर्णधारः।
स्तोतुं भवनि ् स भवच्चरणारबिन्द -
भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरि करोति।।४।।
सूते जगान्ति भवनी भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणाद्धि
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः।।५।।
यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुजपत्रगौरि !

गौरि ! प्रसादमधुरां दृशमाऽदधासि।
तस्मिन्निरन्तरमनङ्गशरावकीर्ण
सीमन्तिनीनयनसन्ततयः पतन्ति।।६।।
पृथ्वीभुजोऽप्युदयनप्रवस्य तस्य
विद्याधरप्रणतिचुम्बितपाद पीठः।
यच्चक्रवर्तिपदवीप्रणयः कणजः प्रसादः।।७।।
कल्पद्रुमप्रसवकल्पितचित्रपूजा-
मुद्दपितप्रियतमामदरक्तगीमिम्।
नित्यं भवानि ! भवतीमुपपीणयन्ति
विद्याधराः करकशैलगुहागृहेषु।।७।।
लक्ष्मीवशीकरणकर्मणि कामिनीना-
माऽकर्षणव्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रः।
नीरन्ध्रमोतिमिरच्छिदुरप्रदीपो
देवि ! त्वदऽङ्घ्रिजनितो जयति प्रसादः।।६।।
देवि ! त्वदङ्घ्रिनरवरत्नभुवो मयूरवाः
प्रत्यग्रमौक्तिकरुचो मुदमुद्वहन्ति।
सेवानतिव्यतिकरे सुरसुन्दरींणां
सीमन्तसीम्नि कुसुमस्तवकायितं यैः।।१०।।
मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिनदिधितिदीप्तिदीप्तं
मध्ये ललाटममरायुधरश्मिचित्रम्।
हृच्चक्रचुम्बि हुतभुक्कणिकानुरूपं
ज्योतिर्यदेतदिदमम्ब ! तव स्वरूपम्।।११।।
रूपं तव स्फुरिचन्द्रमरीचिगौर-
माऽलोकते शिरसि वागधिदैवतं यः।
निः सीमासूक्तिरचनामृतनिर्भरस्य

तस्य प्रसादमधुराः प्रसरन्ति वाचः ।।१२।।

सिन्दूरपांसुपटलच्छुरितामिव द्यां
त्वत्तेसा जतुरसन्नपितामिवोर्वोम् ।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे ! विहाय
ब्रीडां मृडानि ! सुद्दशस्तमनुद्रवन्ति ।।१३।।

मातर्मुहूर्तमपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारसप्रसरतन्तुनिभं भवत्याः ।
ध्यायन्त्यनन्यमनसस्तमनङ्गतप्ताः
प्रद्युम्नसीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः ।।१४।।

योऽयं चकास्ति गगनार्णवरत्नमिन्दु-
योऽयं सुराऽसुरगुरुः पुरुषः पुराणः
यद्वाममर्धमिदमऽन्धकसूदनस्य
देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ।।१५।।

इच्छानुरूपमऽनुरूपगुणप्रकर्ष
सङ्कर्षणि ! त्वमनुसृत्य यदा बिभर्षि ।
जाग्रते स त्रिभुवनैक गुरुस्तदानी
देवः शिवोऽपि भुवनत्रयसूत्रधारः ।।१६।।

रुद्राणि ! विद्रममयीं प्रतिमामिव त्वां
ये चिन्तयन्त्यरूणकान्तिमऽनयन्यरूपाम् ।
तानेत्य पक्ष्मलद्दशः प्रसभं भजन्ते
कण्ठावसक्तमृदुबाहुलतास्तरुण्यः ।।१७।।

त्वद्रूपमुल्लसितदाडिमपुष्परक्त-
मुद्भावये मदनदैवतमक्षरं यः ।
तं रूपहीनमपि मन्मथनिर्विशेष-
मालोकयत्युरुनितम्बभरास्तरुण्यः ।।१८।।

ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरऽकल्मषमानसेन ।
तस्यऽविलम्बऽनवद्यमऽनल्पकल्प-
मल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम् ।।१६।।
आधारमारुतनिरोधवशेन येषां
सिन्दूररंजितसरोजगुणानुकारि ।
तीव्रहृदि स्फुरति देवि ! वपुस्त्वदीयं
ध्यायन्ति तानिह समीहितसिद्धसाध्याः ।।२०।।
त्वामैन्दवीमिव कलामनुभालदेश-
मुद्भासिताम्बरतलामऽवलोकयन्तः ।
सद्यो भवानि ! सुधियः कवयो भवन्ति
त्वं भावनाहितध्यियां कुल कामधेनुः ।।२१।।
त्वां व्यापिनीत समना इति कुण्डलीति ।
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितेत्यपराजितेति
देवि ! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ।।२२।।
ये चिन्तयन्त्यरुणमण्डलमध्यवर्ति
रूपं तवाम्ब ! नवयावकपङ्कपिङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसमायुधबाणभिन्न-
वक्षःस्थला मृगद्दशो वशगा भवन्ति ।।२३।।
उतप्तहेमरुचिरे त्रिपुरे ! पुनीहि
चेतश्चिरन्तनमघौघवनं लुनीहि ।
कारागृहे निगडबन्धनपीडितस्य
त्वसंस्मृतौ झटिति मे निगडास्त्रुटन्तु ।।२४।।
शर्वाणि ! सर्वजनवन्दितपादपद्मे ।

पदमच्छदच्छविविडम्बितनेत्रलक्ष्मि ।
निष्पापमूर्तिजनमानसराजहंसि ।
हंसि त्वमापदमऽनेकविधां जनस्य ।।२५।।
त्वत्पादपङ्कजरजः प्रणिपातपूतैः
पुण्यैरनल्पमतिभिः कृतिभिः कवीन्द्रैः ।
खीरक्षपाकरदुकूलहिमावदाता
कैरप्यवापि भुवनत्रितयेऽपि कीर्तिः ।।२६।।
त्वद्रूपैकनिरूपणप्रणयिताबन्यधो द्दशेस्त्वद्गुण-
ग्रामाकर्णनरागिता श्रवणंयोस्वत्संस्मृतिश्चेतसि ।
त्वत्पादार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि ! मा शम्यतु ।।२७।।
उद्दामकामपरमार्थसरोजषण्ड-
चण्डद्युतिद्युतिमुपासितषट्प्रकारम् ।
मोहद्विपेन्द्रकदनोद्यतबोधसिंह-
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ।।२८।।
गणेशवटुकस्तुता रतिसहायकामान्विता
स्मरारिवरविष्टरा कुसुमबाणबाणैर्युता ।
अनङ्गकुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः
कदम्बवनमध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु नः ।।२९।।
यः स्तोत्रमेतदनुवासरमीश्वरायाः
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा श्रृणोति ।
तस्येप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ
जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षाणानाम् ।।३०।।
ब्रह्मेन्द्र रुद्रहरिचन्द्रसहस्त्ररश्मि-
स्कन्दद्विपाननहुताशनवन्दितायै ।
वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वामात-
रन्तर्बहिश्च कृतसंस्थितये नमस्ते ।।३१।।

◆◆◆

ॐ

अथ तृतीयो घटस्वतः

ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दर्यै।।

दवि ! त्र्यम्बकपत्नि ! पार्वति ! सति ! त्रैलोक्यमातः ! शिवे ! शर्वाणि! त्रिपुरे ! मृडानि ! वरदे रुद्राणि ! कात्यायिनि ! भीमे ! भैरवि ! चण्डि! शर्वरि ! कले ! कालक्षये शूलिनि ! त्वत्पादप्रणतानऽनन्यमनसः पर्याकुलान्पाहि नः!!१!!

उन्मता इव सग्रहा इव विषव्यासक्तमूर्च्छा इव
प्राप्तप्रौढमदा इवाति विरहग्रस्ता इवार्ता इव।
ये ध्यायण्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधिविवृत्तरागमनसो धयायन्ति वामभ्रुवः।।२।।

देवि ! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृतस्तं नम-
न्त्याजन्मस्फुरदङ्घ्रिपीठबिलुठत्कोटीरकोटिच्छटाः।
यत्त्वामर्चचति सोऽर्च्यते सुरगणैर्यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्तिविधुरा ध्यायन्ति वामभ्रुवः।।३।।
ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे ! हृदि त्वां
लावण्ययौवनधनैरपि बिप्रयुक्ताः।
ते व्फुरन्ति ललितायतलोचनानां
चित्तैकभित्तिलिखितप्रतिमाः पुमांसः।।४।।

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
किं वामुं निगलाम्यनेन सहसा किं वैकतामाश्रये।
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटनाकूतेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि ! हृदये यस्य त्वमावर्तसे।।५।।

विश्वव्यापिनि यद्वदीश्वर इति स्थाणावनन्याश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि ! त्वय्येव तथ्यस्थितिः।
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रूपा तद्देवि ! चित्रं महत्।।६।।

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कसदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डुत्फुल्लसरोरुहासनगतां स्निग्धप्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीममृतं भवानि ! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन -
स्ते निर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झन्ति तान्दूरतः।।७।।

पूर्णेन्दोःशकलैरिवातिबहलैः पीयूषपूरैरिव
क्षीराब्धेर्लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव।
प्रालेयैरिव निर्मितं तव वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चित्तान्तर्निहतार्तितापविपदस्ते सम्पदं बिभ्रति।।८।।

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
त्वां ग्रन्थिपञ्चकभिदं तरुणार्कशोणाम्।
रागार्णवे बहलरागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद्दति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः।।९।।

लाक्षारसस्नपितङ्कजतन्तुतन्वी-
मऽन्तः स्मरत्यऽनुदिनं भवतीं भवानि।
यस्तं स्मरप्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति।।१०।।

स्तुमस्त्वां वाचमऽव्यक्तां
हिमकुन्देन्दुरोचिषम्।
कदम्बमालां बिभ्राणा-
माऽऽपादतललम्बिनीम्।।११।।

मूर्ध्नोन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
वर्षन्तीमऽमंतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपिरन्ध्रेऽपि च।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाऽतिप्रसन्नाऽपि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते ! वाक् सर्वतो बल्गति।।१२।।

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्यादीन्व्याधीञ्च्छमयति सुखानि प्रतनुते।
हठादन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्टविरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते।।१३।।

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय-
त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्रयत्यर्चति।
यश्च त्र्यम्बकवल्लभे ! तव गुणानाऽकर्णयत्यादरा-
त्तस्य श्रीने गृहादपैति विजयस्तस्याग्रतो धावती।।१४।।

किं किं दुःखं दनुजदलिनि ! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि ! ख्याप्यते न स्तुतायाम्।
का का सिद्धिः सुरवरनुते ! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम्।।१५।।

ये देवि ! दुर्धरकृतान्तमुखान्तरस्था
ये कालि ! कालघनपाशनितान्त बद्धाः।
ये चण्डि ! चण्डगुरूकल्मषसिन्धुमग्ना -
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव।।१६।।

लक्ष्मीवशीकरणचूर्णसहोदराणि

त्वत्पादपङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पंति दैवलिखितानि दुरक्षराणि।।१७।।

रे मूढ़ाः ! किमयं वृथैव तपसा कायः परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्तीक्रियन्ते गृहाः।
भक्तिश्चेदऽविनाशिनी भगवतीपादद्वयी सेव्यता-
मुन्निद्राम्बुरुहातपत्रसुभगा लक्ष्मीः पुरो धावती।।१८।।

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
सेवे न कंचन निरस्तसमस्तदैन्यः
श्लक्षणं वसे मधुरमइन भजे वरस्त्री-
देवि हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः।।१९।।

शब्दब्रह ममयि ! स्वच्छे देवि त्रिपुरसुन्दरि !
यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परेश्वरि।।२०।।

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः।
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा।।२१।।

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्युविनाशिनी।
पूजिता दुःखदौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी।।२२।।

नमामि यामिनीनाथलेखालङ्कृतकुन्तलाम्।
भवानीं भवसन्तापनिर्वाणसुधानदीम्।।२३।।

मन्त्रहीनंक्रियाहीनं विधिहीनं च यग्दतम्।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि ! कृपया परमेश्वरि।।२४।।

◆◆◆

ॐ

अथ पञ्स्तव्यामऽम्बस्तवश्चतुर्थः ।

ॐ

यामाऽऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यां श्रु तिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामऽर्धपल्लवितशङ्ररूपमुद्रां
देवीमऽनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये ।।१।।

अम्ब ! स्तवेषु तव तावदऽकर्तृ काणि
कुण्ठीभवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि ।
डिम्बस्य मे स्तुतिरसावऽसमञ्जसापि
वात्सल्यनिघ्नहृदयां भवतीं धिनोति ।।२।।

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा-
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।
निःष्यन्दमानसुखबोधसुधास्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ।।३।।

आविर्भवत्पुलकसन्ततिभिः शरीरैः-
र्निःष्यन्दमानसलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये
पादौ तवाम्ब ! हृदयेषु त एव धन्याः ।।४।।

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि ! शिरः करोति !
चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब ! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः ।।५ ।।

मूलालवालकुहरादुदिता भवानि !
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रु वमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमानपरमामृततोयरूपा ।।६ ।।

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते
मुग्धं कटाक्षविधिरङ्कुरयांचकार ।
धत्ते तदाप्रभृति देवि ! ललाटनेत्रं
सत्यं ह्रियेव मुकलीकृतमिन्दुमौलिः ।।७ ।।

अज्ञातसम्भवमनाकलितान्ववायं
भिक्षुं कपालिनमवाससमद्वितीयम् ।
पूर्वं परग्रहणमङ्गलतो भवत्याः
शुम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ।।७ ।।

चर्माम्बरं च शवभस्मविलेपनं च
भिक्षाटनं च नटनं च परेतभूमौ ।
वेतालसंहतिपरिग्रहता च शम्भोः
शोभां बिभर्ति गिरिजें ! तव साहचर्यात् ।।९ ।।

कल्पोपसंहरणकेलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्डपरशोरपि ताण्डवानि।
आलोकनेन तव कौमलितानि मात-
र्लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै।।१०।।

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेषपाशपटलच्छिदुरा निमेषात्।
कल्यानि ! दैशिककटाक्षसमाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भववेददीक्षा।।११।।

मुक्ताविभूषणवती नवविद्रुभाभा
यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
एकः स ऐव भुवनत्रयसुन्दरीणां
कन्दर्पतां ब्रजति पञ्चशरीं विनापि।।१२।।

ये भावयन्त्यमृतवाहिभिरंशुजालै-
राप्यायमानभुवनाममृतेश्वरीं त्वाम्।
ते लङ्घ्यन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां
ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्ष्याम्।।१३।।

यः स्फाटिकाक्षगुणपुस्तककुण्डिकाढ्यां
व्याख्यासुमद्यतकरां शरदिन्दुशुभ्राम्।
पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते
मातः स विश्वकवितार्किकचक्रवर्ती।।१४।।

बर्हावतसं युतबर्बरकेशपाशां
गुञ्जावलीकृतघ्नस्तनहारशोभाम् ।
श्यामां प्रवालवदनां सुकुमारहस्तां
त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् ।।१५ ।।

अर्धेन किं नवलताललितेन मुग्धे !
क्रीतं विभोः परुषमर्धमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहासवचांसि मन्ये
मन्दस्मितेन तव देवि ! जडी भवन्ति ।।१६ ।।

ब्रह्माण्ड बुद्बुदकदम्बकसंकुलोऽयं
मायोदधिर्विविधदुःखतरङ्गमालः ।
आश्चर्यमम्ब ! झटिति प्रलयं प्रयाति
त्वद्ध्यानसन्ततिमहावडवामुखाग्नौ ।।१७ ।।

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भवगती परमार्थतोऽपि
संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ।।१८ ।।

आनन्दलक्षणमनाहतनाम्नि देशे
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नेत्रसलिलैः पुलकैश्च धन्याः ।।१९ ।।

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम्।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात्।।२०।।

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्तियदन्तरिक्षं
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
यद्वाति वायुरनलो यदुदर्चिरास्ते
तत्सर्वमम्ब ! तव केवलमाज्ञयव।।२१।।

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे ! तदानीं
वाक्तर्कयोस्त्वमसि भूमिरनामरूपा।
यद्वा विकासमुपयासि यदा तदानीं
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरीभवन्ति।।२२।।

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
भ्रूकिङ्करीकृतसरोजगृहासहस्त्राः।
चिन्तामणिप्रचयकल्पितकेलिशैले
कल्पद्रुमोपवन एव चिरं रमन्ते।।२३।।

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे
संसारतापमखिलं दयया पशूनाम्।
वैकर्तनीकिरणसंहतिरेव शक्ता
घर्मं निजं शंययितुं निजयैव वृष्ट्या।।२४।।

शक्तिः शरीरमधिदैवतमन्तरात्मा
ज्ञानं क्रिया करणमासनजालमिच्छा।
ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं
किं तन्न यद्भवसि देवि शशाङ्कमौलेः।।२५।।

भूमौ निवृत्तिरुदिता पयसि प्रतिष्ठा
विद्याऽलने मरुति शान्तिरतीतशान्तिः।
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतरमम्ब ! पदं त्वदीयम्।।२६।।

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
नाङ्गीकरोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावद्विकल्प जटिलाः कुटिलप्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति।।२७।।

यद्देवयानपितृयानविहारमेके
कृत्वा मनः करणमण्डलसार्वभौमम्।
याने निवेश्य तव कारणपञ्चकस्य
पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम्।।२८।।

स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब यस्याः।
पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम्।।२९।।

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडऽध्वशुद्धा-
वाल्पावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम्।
श्यामां घनस्टतनटां सकलींकृतौ च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति।।३०।।

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब केचि-
दानन्दमेव कतिचित्कतिच्चि मायाम्।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव।।३१।।

कुवलयदलनीलं बर्बरस्निगग्धकेशं
पृथुतरकुचभाराक्रान्तकान्तावलग्नम्।
किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूपं परं नः
सकलभुवनमातः सन्ततं सन्निधत्ताम्।।३२।।

◆◆◆

ॐ

अथ सकलजननीस्तवः पञ्चमः।

।।ॐ।।

अजानन्तो यान्ति क्षयमवशमन्योन्यकलहै-
रमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मातर्जन्मज्वरभयतमः कौमुदि ! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्।।१।।

वचस्तर्कागम्यस्वरसपरमानन्दविभव-
प्रबोधाकाराय द्युतितुलितनीलोत्पलरुचे।
शिवस्याराध्याय स्तनभरविनम्राय सततं
नमो यस्मैचन भवतु मुग्धाय महसे।।२।।

लुठद्गुञ्जाहारस्तनभरमन्मध्यलतिका-
मुदञ्चर्माम्भः कणगुणितनीलोत्पलरुचम्।
शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकारगुणितं
शिवामन्वग्यान्तीं शवरमहमन्वेमि शवरीम्।।३।।

मिथः केशाकेशिप्रधननिधनास्तर्कघटना
बहुश्रद्धाभक्तिप्रणयविषयाश्वाप्तविधयः।
प्रसीद प्रत्यक्षीभव गिरिसुते ! देहि शरणं
निरालम्ब चेतः परिलुठति पारिप्लवमिदं।।४।।

शुनां वा वह्नेर्वा खगपरिषदो वा यदशनं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाहाय वपुषि
प्रपद्येथाश्चेतः सकलजननीमेव शरणम्।।५।।

अनाद्यन्ताभेदप्रणयरसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासीर्यत्त्वं परिणयविधौ देवि गृहिणी।
सवित्री भूतानामपि यदुदभूः शैलतनया
तदेतत्संसारप्रणयनमहानाटकसुखम्।।६।।

ब्रवन्त्येके तत्त्व भगवति ! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः।
परे नैतत्सर्वं समभिदधते देवि ! सुधिय-
स्तदेत्तत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे ! ।।७।।

तडित्कोटिज्योतिद्युर्तिदलितषड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टिवपुषा।
किमप्यष्टात्रिंशत्किरणसकलीभूतमनिशं
भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बर्बरकचम्।।८।।

चतुष्पत्रान्तः षड्दलभगपुटान्तस्त्रिवलय-
स्फुरद्विद्युद्वह्नि द्युमणिनियुताभद्युतियुते।
षडश्रंभित्त्वादौ दशदलमथ द्वादशदलं
कलाश्रं च द्व्यश्रं गतवति ! नमस्ते गिरिसुते ! ।।९।।

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः
परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमपरे।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमपि प्राहुरपरे
महामाये ! तत्त्वं तव कथममी निश्चिनुमहे।।१०।।

षडधवारण्यानीं प्रलयरविकोटिप्रतिरुचा
रुचा भस्मीकृत्य स्वपदकमलप्रह्व शिरसाम्।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः
कुचाभ्यामानम्रः शिवपुरुषकारो विजयते।।११।।

प्रकाशानन्दाभ्यामविदितचरीं मध्यपदवीं
प्रविश्यैतत्द्वन्द्वं रविशशिसमाख्यं कवलयन्।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लयदहनभस्मीकृतकुलः
प्रसदात्ते जन्तुः शिवमकुलमम्ब ! प्रविशति।।१२।।

प्रियङ्गश्यामाङ्गीमरुणतरवासःकिसलयां
समुन्मीलन्तुक्ताफलबहुलनपेथ्यकुसुमाम्।
स्तनद्वन्द्वस्फारस्तवकनमितां कल्पलतिकां
सकृद्ध्यायन्तस्तवां दधति शिवचिन्तामणिपदम्।।१३।।

षडाधारावर्तैरपरिमितमन्त्रोर्मिपटलै-
श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद्दैवतझषैः।
क्रमस्त्रोतोभिस्त्वं वहसि परनादामृतनदीं
भवानि ! प्रत्यग्रा शिवचिदमृताब्धिप्रणयिनी।।१४।।

महीपाथोवह्नि नश्वसनवियदात्मेन्दु रविभि-
र्वपुर्भिर्ग्रस्तांशैरपि तव कियानम्ब ! महिमा।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति ! न कुत्राप्यणुतरा-
मवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योमवपुषि।।१५।।

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौमग्नं त्रिगुणलहरीकोटिलुठितम्।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः ! करुणया
शरीरी सद्योऽयं ब्रजति परमानन्दतनुताम्।।१६।।

कलां प्रज्ञामाद्यां समयमनुभूतिं समरसां
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिभूतिं परगुहां
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मनुयः।।१७।।

प्रलीने शब्दौघे तदनु विरते बिन्दुविभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनिभिरनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलितचिन्मात्र गहनां
स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम्।।१८।।

परानन्दाकारां निरवधिशिवैश्वर्यवपुषं
निराकारज्ञान प्रकृतिमनवच्छिन्नकरुणाम्।
सवित्रीं भूतानां रितिशयधामास्पदपदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम्।।१९।।

जगत्काये कृत्वा तमपि हृदये तच्च पुरुषो
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्यगहने।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्दविभवे
महाव्योमाकारे ! त्वदनुभवशीलो विजयते।।२०।।

विधे विधे वेद्ये विविधसमये वेदजननि।
विचित्रे ! विश्वाद्ये ! विनयसुलभे वेदगुलके
शिवाज्ञे शीलस्थे ! शिवपदवदान्ये ! शिवनिधे !
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम्।।२१।।

विधेर्मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलप्रोतं यदऽगमयदंसाभरणताम्।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब ! गिरिशः
शिवस्थायाः शक्तेस्तदिदमखिलं ते विलसितम्।।२२।।

विरिञ्च्याख्या मातः ! सृजसि हरिसंज्ञा त्वमवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी
त्वमेवैकाऽनेका भवसि कृतभेदैर्गिरिसुते ! ।।२३।।

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायैरपि मनाग्
अशक्ये सुंस्प्रष्टुं चकितचकितैरम्ब ! सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृतिकठिनाः कामलतरे
कथं ते विन्दन्ते पदकिसलये पार्वति ! पदम्।।२४।।

तडिद्वल्लीं नित्याममृत सरितं पाररहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमगुणग्रन्थिगहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामविनतकुचां विश्वजननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो भगवतीम्।।२५।।

शरीरं क्षित्यभ्भः प्रभृतिरचितं केवलमिदं
सुखं दुःखं चायं कलयति पुमांश्चैतन इति।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देहि रहयितुं
शरीराहंकारं तव समयबाह्र् यो गिरिसुते ! ।।२६।।

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सझम गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं
महाज्योत्सने ! मातर्भव करुणया सन्निधिकरी।।२७।।

सुता दक्षस्यादौ किल सकलमातस्त्वमुदभूः
सदोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।
अनाद्यन्तां शम्भोरपृथगपि शक्तिर्भगवती
विवाहाज्जायतीत्यहह चतिरं वेत्ति तव कः।।२८।।

कणास्त्वद्दीप्तीनां रविशशिकृशनुप्रभृतयः
परं ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्दकणिका।
शिवादिक्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति।।२६।।

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य तनवः।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती
तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम्।।३०।।

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलंगुह्र यमगुहम्।
दवीयो नेदीयः सदसदिति विश्वं भगवतीं
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभजननीम्।।३१।।

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकणिकाः
पयोधौ कल्लोलप्रतिहरमहिम्नीव पृषतः।
उदेत्योदेत्याम्ब ! त्वयि सह निजैस्तात्त्विककुलै-
र्भजन्ते तत्त्वौधाः प्रशममनुकल्पं परवशाः।।३२।।

विधुर्विष्णुब्रह्‌ माप्रकृतिरणुरात्मादिनकरः
स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमनिलः।
शिवः शक्तिश्चेति श्रु तिविषयतां तामुपगतां
विकल्पैरेभिस्त्वामऽभिदधति सन्तो भगवतीम्।।३३।।

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदयया देशिकदृशा
षडध्वध्वान्तौघच्छिदुरगणनातीतकरुणाम्।
परानन्दाकारं सपदि शिवयन्तीमपि तनुं
स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम्।।३४।।

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखलं त्वं किमपरं
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे।।३५।।

असंख्यै प्राचीनैर्जननि जननैः कर्मविलया-
दगते जन्मन्यन्त गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवा-
न्नेययं त्वत्पूजास्तुतिविरचनेनैवदिवसान।।३६।।

यत्षट्पत्रं कमलमुदितं तस्य या कर्णिकाख्या
योनिस्तस्या प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नऽन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि।।३७।।

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकलजननि ! सा त्वं पाहि मामित्यवश्यम्।।३८।।

इति श्रीद्धर्माचार्यविरचितायां
पञ्चस्तव्यां
पञ्चमः सकलजननीस्तवः समाप्तः

♦♦♦

श्री स्वामी विद्याधर कृत राज्ञास्तोत्र

।।ॐ नमः श्री जगदम्बायै।।

ॐ विश्वेश्वरी निखिलदेव महर्षिपूज्या
सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता।
शङ्खाम्बुजास्यऽमृत कुम्भक पञ्चशाखा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।१।।

जन्माटवी प्रदहने दव वहिन-भूता
तत्पाद पंकज रजोगत चेतसां या।
श्रेयोव्रतां सुकृतिनां भवपाशभेत्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।२।।

देव्या यया दनुजराक्षसदुष्ट-चेतो
न्यग्भावितं चरणनूपुरशिञ्जितेन।
इन्द्रादि द्रवे हृदयं प्रविकासयन्ती
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।३।।

दुःखार्णवे हि पतितं शरणागतं या
चोद्धृत्य सा नयति द्याम परं दयाब्धि।
विष्णुगजेन्द्रमिव भीत भयपहर्त्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।४।।

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चम्
कुक्षौ विलीनमपि सृष्टि विसृष्टि रूपात्।
आविर्भवत्यविरतं चिदचित्सवभावम्
राज्ञी सदा भवगती भवतु प्रसन्ना।।५।।

यत्पाद पङ्कजरजः कणज प्रसादात्
योगीश्वरैर्विगत कल्मषमानसैस्तत्
प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।६।।

यत्पादपङ्कज रजांसि मनोमलानि
संमार्जयन्ति शिवविष्णु विरिञ्चदेवैः।
मृग्यान्यऽपश्चिमतनों प्रणुतानि माता
राज्ञाी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।७।।

यत्पाद चिन्तन दिवाकर रश्मिमाला
चान्तर्बहिष्करणवर्ग सरोजषण्डम्।
ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।८।।

यददर्शना मृतनदी महदोघयुक्ता
संप्लावयत्यखिल भेदगुहास्वऽनन्ता।
तृष्णाहरा सुकृतिनां भवतापहर्त्री
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।९।।

हसंस्थिता सकलशब्दमयी भवानी
वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया।
हंसीव हंसरजनीश्वर वह्निनेत्रा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।१०।।

या सोमसूर्यवपुषा सततं सरन्ती
मूलाश्रयातडिदिवाऽऽविधिरन्ध्रमीढया।
मध्यस्थिता सकलनाडिसमूहपूर्णो
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।११।।

चैतन्यपूरित समस्त जगद्विचित्रा
मातृप्रमेय परिमाणतया चकास्ति।
या पूर्णवृत्यहमिति स्वपदाधिरूढा
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।१२।।

या चित्क्रमाक्रमतया प्रविभातिनित्या
स्वातन्त्र्यशक्तिरमला गतभेदभावा।
स्वात्मस्वरूपसुविमर्शपरैः सुगम्या
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्नी।।१३।।
या कृत्यपञ्चक निभालन लालसैस्तैः

सन्दृश्यते निखिलवेद्यगतापि शश्वत्।
सान्तर्धृता परप्रमातृपदं विशन्ती
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना।।१४।।

याऽनुत्तरात्पमनि पदे परमाऽमृताब्धौ
स्वातन्त्र्यशक्ति लहरीव बहिः सरन्ती।
संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा
राज्ञी सदा भगवतीं भवतु प्रसन्ना।।१५।।

मेरोः सदैव हि दरीषुविचित्रवाग्भि
र्गायान्ति यां भगवतीं परिवादिनीभिः।
विद्याधरा हि पुलकाङ्कित विग्रहाः सा
राज्ञी सदा भवगतीं भवतु प्रसन्ना।।१६।।

राज्ञी सदा भगवतीं मनसा स्मरामि
राज्ञी सदा भगवतीं वचसा गृणामि।
राज्ञी सदा भगवतीं शिरसा नमामि
राज्ञी सदा भगवतीं शरण प्रपद्ये।।१७।।

राज्ञयाः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
नित्यं देव्याः प्रसादेन शिवंसायुज्यमाप्नुयात्।।१८।।

इति श्री जगदम्बास्तुति-राजानक-विद्याधर
विरचिता शुभदा बोभूयात्-इति शिवम्।।

♦♦♦

श्री दुर्गा पूजा
(नवरात्रों से संबंध)

ॐ अस्य श्रीआसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनशोधने विनियोगः।। ॐ प्रीं पृथ्वै आधारशक्तये समालभनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।। पृथ्वि त्वया ध्रता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। "नमस्कार करना"।। शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्ण चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये- त्सर्वविघनोपशान्तये।। अभिप्रेतार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि। सर्वविघनाच्छंदे तस्मै गणाधिपतये नमः।। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि। त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।। गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरूः साक्षान्महेश्वरः। गुरुरवे जगद्सर्वं तसमै श्री गुरवे नमः। गुरवे नमः, परमगुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आद्यसिद्धेभ्योनमः।। "करन्यास"।। ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, हूं मध्यमाभ्यां नमः, हैं अनमिकाभ्यां नमः, हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, हः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।। "षडङ्गयास"। ह्रां हृदयायनमः, ह्रीं शिरसे स्वाहा, ह्रूं शिखाये वपट्, ह्रैं कवचाय हुँ, ह्रौं नेत्राभ्यां वौषट्, हः अस्त्राय फट्।। "चारों तरफ तिल फेंकना"।। अपसर्पन्तु ते भूता ये

दिवि भुवि संस्थिताः। ये दिक्षु विघनकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।। प्राणायामः।। "मुख और पैरों को पानी छिड़कना"।। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति।। मा नः शंस्वो अरुरुषो धूर्ति' प्राणङ्ः मर्त्यस्य रक्षाणे ब्रह्मणस्पते।। "पवित्र धारना"।। वसोः पवित्रमिसि शतधारं वसूनां पवित्रमंसि सहस्त्रधारमयक्षमा वः प्रजाया संस्जृामि रायस्पोषण बहुला भवन्ति।। "अपने आप को गन्धादिक लगाना"।। स्वात्मने शक्तिस्वरूपाय समालभनं गन्धोनमः, अर्घोनमः पुष्पं नमः।। "दीपको"।। स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरपहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।। "धूप को"।। वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।। "सूरज को"।। नमो धर्मनिधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।। "पानी से संकल्प छोड़ना"।। यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर्भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तमात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।। स्वात्मने शक्तिस्वरूपाय दीपधूपसङ्कल्पात्सिद्धिरस्तु दीपो नमः धूपो नमः।। ॐ तत्सद्ब्रह्माऽतावत्तिथावद्यामुकमासस्वामुकपक्षस्य तिथामुकायामात्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवी प्रीत्यर्थं अमुककामनासिद्ध्यर्थं भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै व्रीडा भगवत्यै वैखरी भगवत्यै वितस्ता

भगवत्यै गङ्गा भगवत्यै यमुना भगवत्यै कालिका भगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै शैलपुत्र्यै, ब्रह्मचारिण्यै, कूष्माण्ड्यै, चण्डघण्टायै, स्कन्दमात्रे, सिद्धिदायै, महागौर्यै, कालरात्र्यै, कात्यायन्यै नवदुर्गा भगवत्यै सहस्त्रनाम्नये। दुर्गादेव्यै भवान्यै दीपोनमः धूपोनमः।। "अपसव्येन"।। ॐ तत्सद्ब्रह्माद्यतावत्०। पित्रे पितामहाय, त्रपितामहाय, मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै, मातामहाय प्रमातामहाय, वृद्धप्रमातामहाय, मातामह्यै वृद्धप्रमातामह्यै इत्यादि भ्यः दीपः स्वधा धूपः स्वधा।। "सव्येन"।। विष्टरसहित पानी में तीन बार फूल और गन्ध छोड़ना"।। संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः।१। संसृष्टास्तन्वःसन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।२। संय्या वः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु संप्रिय संप्रियास्तन्वो मम।।३।। "वह पानी प्रतिमा पर छोड़ना"।। अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीवन, मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणन्ददातु तेन जीव।। "देवी का न्यास" ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नम इतयादि।। अक्षत युक्त दो दर्भकाण्ड हाथ में रख कर। बीजत्रयाय विदम्हे, तत्प्रधानाय धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।३। ॐ तत्सद्भह्म०। भगवत्याः अमायाः कामायाः चार्वङ्ग्याः टङ्कधारिण्याः तारायाः पार्वत्याः यक्षिण्याः श्रीशारिकाभगवत्याः श्रीशारदाभगवत्याः श्रीमहाराज्ञी भगवत्याः श्रीज्वला भगवत्याः व्रीडा भगवत्याः

वेखरीभगवत्याः वितस्ता भगवत्याः गङ्गा भगवत्याः यमुना भगवत्याः कालिका भगवत्याः सिद्धलक्ष्म्याः महालक्ष्म्याः महात्रिपुरसुन्दर्याः शैलपुत्र्याः, ब्रह्मचारिण्याः, कूष्माण्ड्याः, चण्डघण्टायाः, स्कन्दमातुः, सिद्धिदायाः, महागौर्याः, कालरात्र्या, कात्यायन्याः नवदुर्गाभगवत्याः सहस्त्रनाम्नन्याः दुर्गादेव्याः भवान्याः आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवीप्रीत्यर्थं देवीपूजनमऽर्चामहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।। "तिल फेंक के आसन देना"।। आगच्छ त्वमादेवि ! भक्ताऽशयनिवासिनि ! प्रीत्या दत्तमासनं ते स्वास्यतां मम प्रीतये।। भगवत्याः अमायाः०। इदमासनं नमः। "आवाहन करना"।। भगवत्यै अमायै० युष्मान्वः पूजयामि ॐ पूजय। भवगतीं अमां कामां चार्वङ्गी टङ्कधारिणीं तारां पार्वतीं यक्षिणी श्रीशारिकाभगवतीं श्रीशारदा भगवतीं श्रीमहाराज्ञी भगवतीं श्रीज्वाला भगवतीं व्रीडा भगवतीं श्रीमहाराज्ञी भगवतीं श्रीज्वाला भगवतीं व्रीडा भगवतीं वैखरी भगवतीं वितस्ता भगवतीं गङ्गा भगवतीं यमुना भवगतीं कालिका भगवतीं सिद्धलक्ष्मीं महालक्ष्मीं महात्रिपुरसुन्दरीं शेलपुत्रीं, ब्रह्मचारिणीं कूष्माण्डीं, चण्डघण्टां, स्कन्दमातरं, सिद्धिदां, महागौरीं, कालरात्रीं, कात्यानीं, नवदुर्गा भवगतीं सहस्त्रनाम्नीं दुर्गा देवी भवानी आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय।। श्री शारिके त्रिपुरसुन्दरि शर्मासिन्धो ज्वालेऽत्र राज्ञि वरदेऽखिलविश्वमातः। शर्वार्धदेहनिलये धिपणे मदीयां पूजामिमां स्वपरिवारयुता गृहाण।। हे देवि त्वं पराशक्ते

भक्तानुग्रहकारिणि। अस्मद्दयानुरोधेन सन्निधि कुरु चात्र भोः।।३।। इत्याहूय च गायत्रीं त्रिःसमुच्चार्य तत्ववित्। मनसा चिन्तितैर्द्रव्यैर्देवीमात्मनि पूजयेत्।। तेजोरूपां ततः क्षिस्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्।। यवान्विकीर्य।। प्राणायामः। पाद्यर्थमुदंक नमः।। "पानी हाथ से पात्र में छोड़ना"।। शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।। शंय्यो स्त्रवन्तु नः। यह द्रव्य उसमें छोड़ना।। लाजाश्च कुङ्कुमं चैव सर्वौषधिसमन्वितम्। दर्भाङ्कुरं जलं चैव पञ्चाङ्गं पाद्यलक्षणम्।। भगवति पाद्य पाद्यम्।। एहि कामे कामहर्त्रि स्वेष्टकामदुघे शिवे। भक्तया पाद्यं मया दत्तं क्षाल्यतां पादपीठिकाम्।। भगवत्यै अमायै० पाद्यंनमः। शेषं निवारयेत्।। पुनः शन्नो देवी०।। "यह द्रव्य उसमें छोड़ना"। आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतं च दधि तण्डुलाः। यवाः सिद्धचार्थकाश्चेति ह्यर्घ्यमष्टाङ्गमुच्यते।। भगवति अर्घ्यं अर्घ्यं।। चार्वगङ्गत्वमिहागच्छ सतां चार्वगङ्गदायिनि। मयाऽऽनीतमर्घ्यमिदं शुद्धचेतां मुखहस्तकौ।। भगवती अमे कामे चार्वङ्गि टङ्कधारिणि तारे पार्वति यक्षिणि श्रीशारिका भगवति श्रीशारदा भगवति श्रीमहाराज्ञी भगति श्रीज्वालाभगवति व्रीडा भगवति वैखरीभवगति वितस्ताभगवति गङ्गाभगवति यमुनाभगवति कालिकाभगवति सिद्धलक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुरसुन्दरि शैलपुत्रि, ब्रह्मचारिणि, कुष्माण्डि, चण्डघण्टे, स्कन्तमातः, सिद्धिदे, महागौरि, कालरात्रि, कात्यायनि नवदुर्गाभगवति, सहस्त्रनाम्नि दुर्गादेवि भवानि इदं वोऽर्घ्यं नमः।। सफा

पानी से।। टङ्कधारिणि त्वमेहि दुष्टान् टङ्कैर्विधारिणि। गृहाणाचमनं दत्तं मुखान्तर्मलमृष्टये। भगवत्यै० आचमनीयं नमः।। और भी पानी से।। आगच्छ तारे स्तानेऽस्मिन् भवसागरतारिणि। मलोत्थापनकं देहात्मंत्रस्न्नानं च स्वीकुरु।। भगवत्यै० मन्त्रस्नानीयं नमः।। लाजागन्धवचः कुष्टं वालुकं शङ्खपुष्पकम्। कुङ्कुमागुरुकर्पूरान् स्ननें देव्याः प्रकल्पयेत्।। इदमपिच।। तामाग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीम वैरोचनीं कर्मफलेषु जुंष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसितरसे नमः।।१।। अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूश्व पृथ्वी बहुला न उवीं भवा तोकाय तनयाय शंव्योः।।२।। विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धु न नावा दुरितातिपार्षि। अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानोऽस्माकं वोध्यविता तनूनाम्।।३।। पृतनाजितं सहमानमुग्रमऽग्निं हुवेम परमात्सधस्यात्। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा क्षामाद्देवो अति दुरितात्याग्निः।।४।। प्रतोहि कमीड्यो अध्वरेपु सनाच्च होता नव्यश्व सत्सि। स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व।।५।। यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निपसाद मन्द्र। चसस्त्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि कस्विदऽस्याः परमं जगाम।।६।। देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पाशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।।७।। प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।। धीनामवित्र्यवतु।।८।। ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो

देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।।३।।६।। जात वेद से सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्याग्निः।।१०।। भगवत्यै० अष्टौ स्नानानि नमः।। ॐ नमो देवेभ्यः। "कंठोपवीती" स्वाहा ऋषिभ्यः। "अपसव्ये" स्वधा पितृभ्यः। "सव्येन" आ ब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माण्डं सचराचरं जगत् तृप्यतु तृप्यतु तृप्यतु एवमस्तु।। फिर पात्र में पानी 'ऐंक्लींसौः हसरक्षमलवयऊंह्रींश्रींरां' इस मन्त्र से सात बार मन्त्रित करके अपने माथे तक ले के अमृत से भरा हुआ ध्यान करके देवी के सिर पर छोड़ना। यह मन्त्र गुडक है।" "बाऐ करतल में अक्षत युक्त पानी रख के आरात्रिका निकालना (आलत)।" गृह्णन्तु चण्डिकाभक्ता भूताः प्रासादवात्तगाः। पञ्चभूतात्मकाः प्रेतास्ते तृप्यन्तु सदा वौष्ट्।। देवी के पादों का जल नेत्रों को मलना"। ऐहि देवि पराशक्ते भगवत्यमलाशये। प्रकाशय परं तेजो नेत्रस्पर्शेन वैष्णवि।। उत्तिष्ट देहि शरणं भुवि चित्रमाये ह्युत्तिष्ठ दुष्टकृतदुःखततिं कृणीहि। उत्तिष्ठि भक्तवरदायकमऽक्षि धेहि ह्युत्तिष्ठ शोकभयकुञ्चमिदं लुनीहि।। "देवी का बिछाना"।। आसनाय नम, सिंहासनाय नमः, शवासनाय नमः, मुञ्चासनाय नमः, ज्ञानासनाय नमः।। "अनुलेपन करना"।। सृष्टेरधिष्ठितिभुवः किमु चासनं ते, नानाचमत्कृतिकृतः किमु भूषणं वा। किं देयमस्ति भुवनासुप्रदायिकाया वार्च्य किमस्ति स्वयमेव त्रयीजनन्याः।। "ऐसे ही देवीस्तोत्र पढ़ते हुए देवी को

चन्दनादि द्रव्यों से अनुलेपन करना"।। "वस्त्र पहनना" एहि पार्वति शैलोत्थे वस्त्रं त्वग्रोमकोशजम्। नानावर्ण मयानीतं त्रियतां चारु भावजम्।। भगवत्यै० वस्त्रं परिकल्पयामिनमः।। "जनू पहनना"।। यक्षिण्येहि यज्ञमातः सुवर्णतन्तुनिर्मितम्। त्रिगुणात्म यज्ञसूत्रं मयानीतं सूवीष्ट्यताम्। भगवत्यै० यज्ञोपवीतं नमः "गन्ध चढ़ाना"।। शारिके तवं विद्रुमाभे चन्दनागुरुकुङ्कुमैः। संस्कृतं तिलकैं भाले त्क्रियतां मम प्रीतये।। भगवत्यै० समालभनं गन्धेनमः। लेपं निवारयेत्।। "अक्षत और फूल चढ़ाना" (पहले पुष्पाँजलि)।। हे शारदे शास्त्रदात्रि दूर्वार्घल्विपुष्पवत्। नानाविधं पुष्पजाति प्रीत्यानीतं सुमर्द्यताम्।। ॐ गांगणपतये नमः, भौभीमराजायानमः, कांकुमारायनमः। जुंजाङ्गलेश्वरायनमः। ओंले इन्द्रायनमः ॐ ह्रीं अग्नये नमः ॐ ह्रूंधर्मराजाय, नेर्ऋतये, वरुणाय, वायवेनमः, कुबेराय, ईशानायनमः, ब्रह्मणे, अनन्तायनमः। धूम्रार्चिषेनमः, ऊष्माय, ज्वलिन्यै, ज्वालिन्यै, विस्फुलिङ्गिन्यै, सुश्रिये, स्वरूपाय, कपिलायै, हव्यावाहनायै, कव्यवाहनाय, दशकलात्मने ब्रह्मये नमः। तपिन्यैनमः, तापिन्यै नमः, घम्रायै, मारीच्यै, जुलिन्यै, तथ्यै, सुषुम्णाये भौग्दाये विश्वायै, बोधिन्यै, धारिण्यै, क्षमायै, द्वादशकलात्मनेसूर्यायनमः। अमृतायै, आनन्दायै, पूषा यै, तुष्ट्यै, पुष्ट्यै, रत्यै, धृत्यै, शिशिन्यै, चण्डिकायै, कान्त्यै, ज्योत्स्नायै, श्रियै, प्रीत्यै, अङ्गदायै, पूर्णायै, पूर्णामृतायै, पोडशकलात्मनेशश्निनमः। अभिष्टसिद्धिं मे

देहि शरणागतवत्सले। भक्तया समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।। ॐ गुरवे नमः, परमगुरवेनमः, परमेष्ठिगुरवेनमः।। अभिष्टसि० द्वितीयावरणार्चनम्। अनन्तनागराजायनमः, वासुकिना०, कार्कोटना०, शङ्खपालना०, तक्षकना०, कलिकना०, पदमना०, महापद्मनागराजाय नमः।। अभीष्ट०, तृतीयावरणार्चनम्।। असिताङ्गभैरवयुत- ब्राहम्यैनमः, उन्मत्तभै० कौमार्यै, भीषणभै० चामुण्डायै, कपालेश्वरभै० वाराह्यै, संहारभै० महालक्ष्म्यै नमः।। अभीष्ट चतुर्थावरणार्चनम्।। दुर्गायैनमः, भगवत्यै, अमायै, कामायै, चार्वग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकायै, श्रीशारदायै, श्रीमहाराज्ञै, श्रीज्वालायै, व्रीडायै, वैखर्यै, वितस्तायै, गङ्गायै, यमुनायै, कालिकायै, सिद्धलक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यैनमः।। अभीष्ट० पञ्चमावरणार्चनम्।। गायत्र्यै, सावित्र्यै, सरस्वत्यै, बालायै, भुवनेश्वर्यै।। अभीष्ट० पष्ठावरणार्चनम्।। वज्राय, शक्तये, दण्डाय, खड्गाय, पाशाय, ध्वजाय, गदायै, त्रिशूलाय, पद्माय, चक्रायनमः।। अभीष्ट० सप्तमावरणार्चनम्।। अग्नयादित्याभ्यां, वरुणाचन्द्रमोभ्यां, कुमारभौमाभ्यां, विष्णुवुधाभ्यां, इन्द्राबृहस्पतिभ्यां, सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापतिशनैश्वराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्तागस्त्याभ्यां नमः।। पराशक्तये, चिछक्तये, सहस्त्रनाम्नयै, दुर्गादेव्यै, भवान्यै, अर्घोनमः, पुष्पंनमः।। "धूप चढ़ाना"। महाराज्ञि राजसेव्ये साज्यं गुग्गुलंस्कृतम्। अष्टगन्धयुतं धूपं मया नीतं सुजिध्रयताम्।

भगवत्यै० धूपं परिकल्पयामि नमः।। "कपूर व रत्नदीप"। एहि ज्वाले महाज्वाले कर्पूरपीठमण्डितमृ। नानावर्ति रत्नदीपं मया दत्तं प्रकाश्यताम्। भगवत्यै रत्नदीपं कर्पूरं समर्पयामि नमः।। "चामर"।। एहि व्रीडे वीतव्रीडे चामरं पिच्छलैर्युतम्। सुखवातप्रदं सम्यक् दत्तं स्वीक्रियतामिदम्।। "चामर स्तोत्र भी पढ़ कर"।। भगवत्यै० चामरं समर्पयामिनमः।। "अन्य उपकरण" एहि दुर्गे पराशक्ते भत्तया कंकतिकां शुभाम्। "ध्वजं छत्रं व्यञ्जनं च मया नीतं विभूष्यताम्। भगवत्यै० उपकरणानि समर्पयामि नमः।। "आईना"।। हे वैखरि विश्वमातस्त्वद्दृष्ट-याऽदर्शविम्बवत्। भाति विश्वं स्वयं त्वं साऽऽदर्श दत्तं सुपश्यताम्।। भगवत्यै० आदर्श समर्पयामि नमः।। एताभ्यो देवताभ्यः दीपोनमः धूपोनमः।। सपरिवारायाः पराशक्तेरर्घ्यदानाद्यर्चनविधिः सर्वः परिपूर्णोऽस्तु।। "मधुपक" हे वितस्ते पापहर्त्रि क्षीराज्यमधुशर्करम्। षड्रसास्वादितं भक्ष्यं चरुं न्यस्तं सुस्वाद्यताम्। भगवत्यै० चरुं। स०।। "फूलोकी अञ्जलि"।। एहि गङ्गे विष्णुपज्जे विल्वदूर्वाब्जमण्डिताम्। पुष्पाज्जलिमिमां भत्तया दत्तां नस्यां सुजिध्यताम्।। भगवत्यै० पुष्पाञ्जलि स०।। "फल"।। यमुने त्वं यमस्वसुर्भव्येखर्जूरदाडिमम्। द्राक्षारुकाम्बराम्भादि फलं प्रत्तं सुभक्ष्याताम्।। भगवत्यै० फलं स०।। "ताम्बूल"।। कालि केत्वं कोकिलाभे पूगताम्बूलपानकम्। मुखभागन्धदं दत्तं प्रीत्या श्वासं सुगन्ध्याताम्। भगवत्यै० ताम्बूलं सम०।। "एक प्रक्रम

देना"।। सिद्धलक्ष्मीः विष्णुतिन ज्ञाताज्ञातकृतानि मे। दशवेनांसि दह्यन्तां प्रत्र्कमैकविधानतः।। ॐ नमो भगवत्यै भगवति प्रसीद।। "स्तोत्रपाठादि पढ़कर अष्टाङ्गप्रणाम देना"। महालक्ष्मी मारमातर्भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्। भक्तया कृतं प्रणाम ते साष्टाङ्गं स्वीविधीयताम्।। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यामुरसा शिरसा मनसा वचसा च नमस्कारं करोमि नमः।। अन्नं नमः २ आज्यमाज्यमऽद्यदिनेऽ-द्ययथासङल्पात् सिद्धिरस्तु। अन्नहीनं क्रियाहीन विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीनं च चद्गतं तत्सर्वमऽच्छिन्द्रं सम्पूर्णमस्तु एवमस्तु।। शन्नो देवी०। भगवत्यै अपोशानं नमः।। "पुनः" शन्नोदेवी०। भगवत्यै० दक्षिणायै तिलहिरण्यरजतनिष्कर्ण ददानि। एता देवताः सदक्षिणाऽन्नेन प्रीयन्ता प्रीताः सन्तु।। "नैवेद्यः"।। अमृतेशमुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सावितः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे।। भगवत्यै अमायै० ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।। "योगिनीबलि- (चट्)"।। आकाशमातृभ्यो बलिंनमः, समालभनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।। "देवीको"।। दूर्गा भगवत्यै फलादिसमर्पयामिनमः।। "क्षेत्रपालको"।। क्षांक्षेत्राघिपतयेऽन्नं नमः रां राष्ट्राघिपतयेऽन्नं नमः सर्वाभयवरप्रद मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्ददातु।। "नित्यकर्म जपादि करके। पृच्छा करना"।। बीजत्रयाय विदमहे, तत्प्रधानाय धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।।३।। ॐ तत्सत्राद्याता-

वत्तिथावद्यामुकमासस्याऽमुकपक्षस्य तिथावमुकायां भगवत्याः अमायाः कामायाः० आत्मनो वाङ्गनः कायोपार्जितपापानिवारणार्थं श्रीदेवीप्रीत्यर्थं देवीपूजनमाच्छिद्रंसम्पूर्णमस्तु एवमस्तु।। "तर्पण करना" एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदकतर्पणंनमः।। "क्षमाफूलचढ़ाना" आपन्नोस्मि शरण्यासि सर्वावस्थासु सर्वदा। भवानि त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। "स्तोत्रादि पढ़कर" अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे। का परा सहते देवि केवलं स्वामिनं विना।। यद्दतं भक्तिमात्रेणा पत्रं पुष्पं फलं जलम्। निवेदितं च नैवेद्यं तगृदृहाणानुकम्पया।। आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्। पूजाभागं नजानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।। उभाभ्यामिति अष्टाङं प्रणामं करोमिनमः।। "तर्पण"। नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओपधीभ्यः।। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते कृ णोमि।।३।। इत्येतासामेव देवतानां सलोकतां सायुज्यं सार्ष्टिं सामीप्यमाप्नोति य एवं विद्वान् स्वाध्यायमधीते।। "माफी की प्रार्थना" स्वच्छस्वान्तेन ते भत्तया महात्रिपुरसुन्दरि। यथाभावं कृतां पूजां स्वीकृत्य विश स्वाश्रयम्।। मनस्यन्तर्गतं मन्त्रं मन्त्रस्यान्तर्गतं मनः। मनोमन्त्रमयं दिव्यमेकपुष्पं पराऽर्चनम्।। इति दुर्गापूजा सम्पूर्ण।।

◆◆◆

गौरी आरती

ओं जय जय जय जय जग माता,
शरण तुम्हारे आये हैं।
हंसासण पर बैठी हो माता,
ब्रह्म-स्वरूप घरायो है।
चार वेद भुज चार विराजे,
चार वेद बज गायो है। ओं जय०
गरुड़ासन पर बैठी हो माता,
विष्णु-स्वरूप धरायो है।
मोर-मुकट पीताम्बर साजे,
मुखधर बीन बजायो है। ओं जय०
भ्रष्भासन पर बैठी हो माता,
शंकर-स्वरूप धरायो है।
जटा-जूट सिर गंगा विराजे,
वासुक नाग लपटायो है। ओं जय०
सिंहासन पर बैठी हो माता,
शक्ति-स्वरूप धरायो है।
भक्त जनों की लेकर आरती
चरण कमल चितरायो है। ओं जय०

।। श्रीः ।।

देवीखड्गमालास्तोत्ररत्नम्

चेन्नपुयोण्य

वाविल रामखामिशस्त्रुलु अण्डु सन्क्ष्
इत्येतैः प्रकटितम्
ॐ श्री गणेशाय नमः

श्री गुरुपादुकावन्दनम्

ऐंकार-हींकार-रहस्युक्त
श्रींकारगुदुर्थ-महाविभूत्या ।
ओंकारमर्म-प्रतिपादिजीम्यां
नमो नमः श्री गुरुपादुकाश्याम् ।।

आत्म समर्पणम्

जपो जल्पः शिल्प सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमण-मशानाद्याहुति-विधिः ।
प्रणामः सबेशः सुख मखिल-मात्मार्पणदृशा
सपर्या पर्वाय-स्तव भवतु यन्मे विलसितम् ।।

श्रीबालात्रिपुरसुंदर्ये नमः

।। देवीखड्ङ्गमालास्तोत्रम् ।।

श्लो, ह्रींकारासनगर्भितानलशिखां सौं: क्ली कलां
विभ्रतीं
सौवर्णाबरधारिर्णी वरसुधाधैतां त्रिणोत्रोज्ज्वलाम।
वदे पुस्तकपाशमंकुशधरां स्त्रग्भूषितामुज्जवलां
त्वां गौरीं त्रिपुरा परत्पिरकलां श्रीचक्रसंचारिणीम्।।

अस्य श्रीशुद्धशक्तिमालामंत्रस्य, उपस्थेंद्रियाधिष्ठायी वरुणादित्यऋषिः, दैवीगायत्रीच्छंदः, सात्विककका-रभट्टारकपीठस्थितकामेश्वरांकनिलय महाकामेश्वरी श्रीललिता भट्टारिका देवता, ऐम बीजं, ल्की शक्तिः, सौः कीलकं, मम खड्ङ्गसिद्धयर्थे, सर्वाभीष्ठसिध्यर्थे जपे विनियोगः। मूलमंत्रेण षंडगन्यासं कुर्यात् ।।

मूल मंत्रः ओं ऐं ह्रें श्रीं ऐं ल्कीं सौः स्वाहाः

।।ध्यानम् ।।

तादृश खड्ङ्माप्रोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड्भोक्ता भविष्यति ।।
आरक्ताभां त्रिणेत्राममनिमुक्टवत्तीं रत्नताटङ्करम्यॉं
हस्ताम्भोजैस्सपाशाकुश मदनधनु स्सायकैविसफुंरतीम।
आपीनोत्तुगवक्षोरुहथटविलठत्तारहारोज्जवलांगीं
ध्यायेद्ंभेरुहस्थामरुणिवसनामीश्वरीमीश्वराणाम् ।।
ल मित्यादि पंचपूजां कुर्यात्-यथाशक्ति भूलमन्त्रं जपेत।।

ओं ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ल्कीं सौः, ओं नमस्त्रिपुरसुंदरि, हृदयदेवि, शिरोदेवि, शिखादेवि, कवचदेवि, नेत्रदेवि, अस्त्रदेवि, कामेश्वरि, भगमालिनि, नित्याकिल्न्ने, भेरुंडे, वह्निवासिनि, महावज्रेश्वरि, शिवदूति, त्वरिते, कुलसुंदरि, नित्ये, नीलपताके, विजये, सर्वमंगले ज्वालामालिनि, चित्रे, महानित्ये, परमेश्रवर परमेश्वरि, मित्रेशमयि, षष्टीशमयि, उड्डीशमयि, चर्यानाथमयि, लोपामुद्रामयि, अगस्यमयि, कालतापनमयि, धर्माचार्यमयि, मुक्तकेशीश्रवरमयि, दीपकलानाथमयि, विष्णुदेवमयि, प्रभाकरदेवमयि, तेजोदेवमयि, मनोजदेवमयि, कल्याणदेवमयि, वासुदेवमयि, रत्नदेवमयि, श्रीरामानंदमयि, अणिमासिद्धे, लघिमासिद्धे, गरिमासिद्धे, महिमासिद्धे, इशित्वसिद्धे, वशित्वसिद्ध, प्राकाम्यसिद्धे, भुक्तिसिद्धे, इच्छासिद्धे, प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे, ब्राह्मि, माहेश्रि, कौममारि, वैष्णवि, वाराहि, माहेंद्रि, चामुंडे, महालक्षमी,सर्वसंक्षोभिणि, सर्वविद्राविणि, सर्वाकर्षिणि, सर्ववशंकरि, सर्वोन्मादिनि, मर्वमहांकुशे, सर्वखेचरि, सर्वबीजे, सर्वयोने, सर्वत्रिखंडे, त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि, प्रकटयोगिनि, कामाकर्षिणि, बुंद्धन्राकर्षिणि, अहंकाराकर्षिणि, शब्दाकर्षिणि, स्फर्शाकर्षिणि, रुपाकर्षिणि, रसाकर्षिणि, गंधाकर्षिणि, चित्ताकर्षिणि, धैर्याकर्षिणि, स्मृत्याकर्षिणि, नामकर्षिणि, बीजाकर्षिणि, आत्माकर्षिणि, अमृताकर्षिणि, शरीराकर्षिणि, सर्वाशापरिपूरक चक्रस्वामिनि, गुप्तयोगिनि, अनंगाकुसुमे, अनंगमेखले, अनंगमदने, अनङ्गमदनातुरे, अनंगरेखे, अनंगवेगिनि,

अनंगाकुशे, अनगमालिनि, सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि, गुप्ततरयोगिनि, सर्वसंक्षोभिणि, सर्वविद्राविणि, सर्वाकर्षिणि, सर्वाह्लादिनि, सर्वसम्मोहिनि, सर्यस्तंभिनि, सर्वजृंभिणि, सर्ववशंकरि, सर्वरजंनि, सर्वोन्मादिनि, सर्वार्थसाधिके, सर्वसंपत्तिपूरणि, सर्वमत्रमयि, सर्वद्वंद्वक्षयंकरि, सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि, संप्रदाययोगिनि, सर्वसिद्धिप्रदे, सर्वसपत्प्रदे, सर्वप्रियंकरि, सर्वमंगलकारिणि, सर्वकामप्रदे, सर्वदुःखविमोचनि सर्वमृत्युप्रशमनि, सर्वविघ्ननिवारिणि, सर्वागंसुंदरि, सर्वसौभाग्यदायिनि, सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि, कुलोत्तीर्णयोगिनि, सर्वज्ञे, सर्वशक्ते, सर्वैश्रवर्यप्रदायिनि, सर्वज्ञानमयि, सर्वव्ययाधिविनाशिनि, सर्वाधारस्वरूपं, सर्वपापहरे, सर्वानंदमयि, सर्वरक्षास्वरूपिणि, सर्वेप्सितफलप्रदे, सर्वरक्षाकरचक्रस्वा-मिनि, निगर्भयोगिनि, वशिनि, कामेश्वरि, मोदिनि, विमले, अरुणे, जयिनि, सर्वेश्वरि, कौलिनि, सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि, रहस्योगिनि, बाणिनि, च पिनि, पाशिनि, अंकुशिनि, महाकामेश्वरि, महावज्रेश्वरि, महाभगमालिंनि, सर्वसिद्धिप्रदचकस्वामिनि, अतिरहस्योगिनि, श्रीश्रीमहाभट्टारिके, सर्वानंदमयचक्रस्वामिनि, परापररहस्ययोगिनि, त्रिपुरे, त्रिपुरेशि, त्रिपुरसुंदरि, त्रिपुरांबे, महात्रिपुरसुंदरि, महामहेश्वरि, महामहाराज्ञि, महामहाशक्ते, महामहागुप्ते, महामहाज्ञप्ते, महामहानंदे, महामहास्कधे, महामहाशये, महामहाश्रीचक्र नगरसामिनज्ञि नमस्ते नमस्ते नमः शक्ता एषा विद्या महासिद्धिदायिनी ग्मृतिमात्रतः।

अग्निवातमहाक्षोभे राजा राष्ट्रत्व विपक्वे।
लुंठने तस्करमये संग्रामे सलिलपक्वे।
समुद्रयानविक्षोभे भूतप्रेतादिके भवे।।
अपरमारज्वरब्याधिमृत्युक्षामादिजे भये।
शाकिनीपूतनायक्षरक्षः कुश्मांडजे भये।।
मित्रभेदे गृहभये ब्यसनेष्वामिचारिके।
अन्येष्वपिच दोषेपु मालामंत्र स्मरेन्नरः।।
सर्वोपद्रवनिर्मुक्तस्साक्षाच्छिबमयो भवेत्।
आपत्काले नित्यपूजां विस्नारात्कर्तुमारभेत्।।
एकवार जपध्यान सर्वपूजाफलं लभेत्।
नवावरणदेवीनां ललिताया महौज़सः।।
एकत्र गणनारूपो वेदवेदांगगोचरः।
सर्वागमरहस्यार्थ स्मरणात्पनाशिनी।।
ललिताया महोशान्या मालाविद्या महीयसी।।
नरवश्य नरेद्राणां वश्यं नारीवशकरम्।।
अणिमादिगुणैश्बर्य रंजन पापभंजनम्।
तत्तदाबरणस्थायि देवताबृंदमत्रकम्।।
मालामत्रं पर गुह्म परंधाम प्रकीर्तितं
तत्तदावरणस्थायि देवताबृं दमंत्रकम्।।
शक्तिमाला पचधा स्याच्छिवमाला च तादृशी।।
तस्माद्रोप्यतराद्रोप्यं रहसय भुक्तिमुक्तिदम्।

।।इति श्रीवामकेश्वरततें उमामहेश्वरसंवादे
देवीखडङ्गमालास्तरतम्।।

।। देवीखड्गमालास्तोत्रनामावलिः ।।

१. ओं त्रिपुरसुंदर्यै नमः
२. ओं हृदय देव्यै नमः
३. ओं शिरोदेव्यै नमः
४. ओं शिखादेव्यै नमः
५. ओं कवचदेव्यै नमः
६. ओं नेत्रदेव्यै नमः
७. ओं अस्त्र देव्यै नमः
८. ओं कामेश्वर्यै नमः
९. ओं भगमालिन्यै नमः
१०. ओं नित्यकिल्न्नायै नमः
११. ओं भेरुण्डायै नमः
१२. ओं वह्निवासिन्यै नमः
१३. ओं महावज्रेश्रवर्यै नमः
१४. ओं शिवदूत्यै नमः
१५. ओं त्वरितायै नमः
१६. ओं कुलसुंदर्यै नमः
१७. ओं नित्यायै नमः
१८. ओं नीलपताकायै नमः
१९. ओं विजायायै नमः
२०. ओं सर्वमंगलायै नमः
२१. ओं ज्वालामालिन्यै नमः
२२. ओं चित्रायै नमः
२३. ओं महानित्यायै नमः
२४. ओं परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः
२५. ओं मित्रेशमय्यै नमः
२६. ओं पष्ठीशमय्यै नमः
२७. ओं उडीशमय्यैं नमः
२८. ओं चर्यानाथमय्यै नमः
२९. ओं लोपामुद्रामय्यै नमः
३०. ओं अगस्त्यमय्यै नमः
३१. ओं कालतापनमय्यै नमः
३२. ओं धर्माचार्यमय्यै नमः
३३. ओं मुक्तकेश्वरमय्यै नमः
३४. ओं दीपकल्लानाथमय्यै नमः
३५. ओं विष्णुदेवमय्यै नमः
३६. ओं प्रभाकरदेवमय्यै नमः
३७. ओं तेजोदवेमय्यै नमः
३८. ओं मनोजदेवमय्यै नमः
३९. ओं कल्याणदेवमय्यै नमः
४०. ओं वासुदेवमय्यै नमः
४१. ओं रत्नदेवमय्यै नमः
४२. ओं श्रीरामानंदमय्यै नमः
४३. ओं अणिमासिद्धये नमः
४४. ओं लघिमासिद्धये नमः
४५. ओं गरिमासिद्धये नमः
४६. ओं महिमासिदये नमः
४७. ओं ईशित्वसिद्धये नमः
४८. ओं वशित्वसिद्धये नमः
४९. ओं प्राकाम्यसिद्धये नमः
५०. ओं भुक्तसिद्धये नमः

५१. ओं इच्छासिद्धये नमः ५२. ओं प्राप्तिसिद्धये नमः
५३. ओं सर्वकामसिद्धये नमः ५४. ओं ब्राह्मये नमः
५५. ओं माहेश्वर्यै नमः ५६. ओं कौमार्यै नमः
५७. ओं वैष्णव्यै नमः ५८. ओं वाराह्मे नमः
५९. ओं माहेंद्रये नमः ६०. ओं चामुंडाये नमः
६१. ओं महालक्ष्म्यै नमः ६२. ओं सर्वसाक्षोभिण्यै नमः
६३. ओं सर्वविद्राविण्ये नमः ६४. ओं सर्वोकर्षिण्यै नमः
६५. ओं सर्वोन्मादिन्यै नमः ६६. ओं सर्ववशकर्यै नमः
६७. ओं सर्वमहांकुशाये नमः ६८. ओं सर्वखेचर्यै नमः
६९. ओं सर्वबीजाये नमः ७०. ओं सर्वयोन्यै नमः
७१. ओं सर्वत्रिखडाये नमः ७२. ओं त्रैलोक्यमोहनच-क्रस्वा मिन्ये नमः
७३. ओं प्रकटयोगिन्यै नमः ७४. ओं कामाकर्षिण्यै नमः
७५. ओं बुदभ्याकर्षिण्यै नमः ७६. ओं अहकाराकर्षिण्यै नमः
७७. ओं शब्दाकर्षिण्यै नमः ७८. ओं स्पर्शाकर्षिण्यै नमः
७९. ओं रूपाकर्षिण्यै नमः ८०. ओं रसाकर्षिण्यै नमः
८१. ओं गंधाकर्षिण्यै नमः ८२. ओं चिताकर्षिण्ये नमः
८३. ओं धैर्याकर्षिण्यै नमः ८४. ओं स्मत्वाकर्षिण्यै नमः
८५. ओं नामाकर्षिण्यै नमः ८६. ओं बीजाकर्षिण्यै नमः
८७. ओं आत्माकर्षिण्यै नमः ८८. ओं अमुकर्बिण्यै नमः
८९. ओं शरीराकर्षिण्यै नमः ९०. ओं सर्वाशा परिपूरक चक्रस्वामिन्यैध्व नमः
९१. ओं गुप्तयोगिन्यै नमः ९२. ओं अनगकुसुमाये नमः
९३. ओं अन्नगमेखलाये नमः ९४. ओं अनगमदनाये नमः
९५. ओं अनंगमदनातुरीये नमः ९६. ओं अनंगरेखाये नमः
९७. ओं अनंगवेगिन्यै नमः ९८. ओं अनंगाकुशाये नमः

९९.ओं अनंगमालिन्यै नमः १००. ओं सर्वसंक्षोभणचक्र-स्वामिन्यै नमः

१०१.ओं गुप्तरयोगिन्यै नमः १०२.ओं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः

१०३.ओं सर्वविद्राविण्यै नमः १०४.ओं सर्वाकर्षिण्यै नमः

१०५.ओं सर्वाह्लदिन्यै नमः १०६.ओं सर्वसममोहिन्यै नमः

१०७.ओं सर्वस्वाभिन्यै नमः १०८.ओं सर्वजृंभिण्यै नमः

१०९.ओं सर्वबशकर्यै नमः ११०.ओं सर्वरजन्यै नमः

१११.ओं सर्वोन्मादिन्यै नमः ११२.ओं सर्वर्थसाधिकायै नमः

११३.ओं सर्वसंपतिपूरण्य ११४.ओं सर्वमत्रमऽयै नमः

११५.ओं सर्वद्वंद्वक्षयंकर्यै नमः ११६.ओं सर्वसोभाग्यदायक चस्वामिन्यै नमः

११७.ओं संप्रदाययोगिन्यै नमः ११८.ओं सर्वसिद्धिप्रदायै नमः

११९.ओं सर्वप्रियकर्ये नमः १२०.ओं सर्वमंगलकारिण्यै नमः

१२१.ओं सर्वकामप्रदायै नमः १२२.ओं सर्वदुःखविमोचन्यै नमः

१२३.ओं सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः १२४.ओं सर्वविघनिवारिण्यै नमः

१२५.ओं सर्वागसुंदर्यै नमः १२६.ओं सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः

१२७.ओं सर्वाथंसाधकचक्रखामिन्यै नमः १२८.ओं कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः

१२९.ओं सर्वज्ञायै नमः १३०.ओं सर्वक्षतयै नमः

१३१.ओं सवैश्वर्यप्रदायिन्ये नमः १३२.ओं सर्वज्ञानमय्यै नमः

१३३.ओं सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः १३४.ओं सर्वाधारस्वरूपायै नमः

१३५.ओं सर्वपापहरायै नमः १३६.ओं सर्वानंदमय्यै नमः

१३७.ओं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः १३८.ओं सवैप्सिलफलप्रद यै नमः

१३९.ओं सर्वरक्षाकरचकस्वाभिन्यै नमः १४०.ओं निगभैयोगिन्य नमः

१४१.ओं वशिन्यै नमः १४२.ओं कामेश्वर्यै नमः

१४३.ओं मोदिन्यै नमः १४४.ओं विमलायै नमः

१४५.ओं अरुणायै नमः १४६.ओं जयिन्यै नमः

१४७.ओं सर्वेश्वयै नमः १४८.ओं महामहेश्वर्यै नमः

१४९.ओं कौलिन्यै नमः
१५०.ओं सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः
१५१.ओं रहस्योगिन्यै नमः
१५२.ओं बाणिन्यै नमः
१५३.ओं चापिन्यै नमः
१५४.ओं पाशिन्यै नमः
१५५.ओं अंकुशिन्यै नमः
१५६.ओं महाकामे वर्यै नमः
१५७.ओं महावज्रेश्रवर्यै नमः
१५८.ओं महाभगमालिन्यै नमः
१५९.ओं सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै नमः
१६०.ओं अतिरहस्ययोगिन्यै नमः
१६१.ओं श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः
१६२.ओं सर्वानंदमयचक्रस्वामिन्यै नमः
१६३.ओं परापररहस्योगिन्यै नमः
१६४.ओं त्रिपुरायै नमः
१६५.ओं त्रिपुरे यै नमः
१६६.ओं त्रिपुरसु दर्यै नमः
१६७.ओं त्रिपुरव सिन्यै नमः
१६८.ओं त्रिपुराश्रितायै नमः
१६९.ओं त्रिपुरामालिन्यै नमः
१७०.ओं त्रिपुरासिद्धये नमः
१७१.ओं त्रिपुरांबायै नमः
१७२.ओं महात्रिपुरसुंदर्यै नमः
१७३.ओं महामहेश्वयै नमः
१७४.ओं ओं महामहाराज्ञयै नमः
१७५.ओं महामहाशक्तये नमः
१७६.ओं महामगागुप्तायै नमः
१७७.ओं हमाहमानदायै नमः
१७८.ओं महामहास्कधायै नमः
१७९.ओं महामहाशयायै नमः
१८०.ओं महामहा श्री चक्रनगर साम्राज्ञयै नमः
१८१.ओं नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमः

इति

देवीखडङ्गमालानामावलिः

।।समाप्ता।।

महाराज्ञीसहस्रनामकम्

श्री भैरव उवाच।

भगवन् वेदतत्वज्ञ मन्त्रतन्त्रविचक्षण।
शरण्य सर्वलोकेश शरणागतवत्सल।।
कथं श्रियमवाप्नोति लोके दारिद्र्यदुःखभाक्।
मान्त्रिको भैरवेशान तन्मे गदितुमर्हसि।।

श्री भैरव उवाच।

या देवी निष्कला राज्ञी भगवत्यमलेश्वरी।
सा सृजत्यवति व्यक्तं संहरिष्यति तामसी।।
तस्या नामसहस्त्रं ते वक्ष्ये स्नेहेन पार्वति।
अवाच्यं दुर्लभं लोके दुःखदारिद्र्यनाशनम्।।
परमार्थप्रदं नित्यं परमैश्वर्यकारणम्।
सर्वागमरहस्याढ्यं सकलार्थप्रदीपनम्।।
समस्तशोकशमनं महापातकनाशनम्।
सर्वमन्त्रमयं दिव्यं राज्ञीनामसहस्त्रकम्।।

अस्य श्री महाराज्ञीनामसहस्त्रस्य, ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रं छन्दः, श्रीभूतेश्वरीमहाराज्ञी देवता, ह्रीं बीजं, सौः शक्तिः, क्लीं कीलकं, महाराज्ञीसहस्रनामपाठे विनियोगः। ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे। श्री भूतेश्वरी-महाराज्ञीदेवतायै नमो हृदि। ह्रीं बीजाय नमो नाभौ। सौः

शक्तये नमो गुह्ये। क्लींकीलकाय नमः पादयोः। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु। ध्यानं कुर्यात्।

या द्वादशार्कपरिमण्डितमूर्तिरेका
सिंहासनस्थितिमतीमुरगैर्वृतां च।
देवीमनक्षगतिमीश्वरतां प्रपन्नां
तां नौमि भर्गवपुषीं परमार्थराज्ञीम्।।
चतुर्भुजां चन्द्रकलार्धशेखरां
सिंहासनस्थां भुजगोपवीतिनीम्।
पाशाङ्कुशाम्भोरुहखड्गधारिणीं
राज्ञीं भजे चेतसि राज्यदायिनीम्।।
ओंह्रींश्रींरांमहाराज्ञी क्लीं सौः पञ्चदशाक्षरी।
ह्रींस्वाहात्र्यक्षरीविद्या पराभगवती विभा।।
भास्वती भद्रिका भीमा भर्गरूपा महस्विनी।
माननीया मनीषा च मनोजा च मनोजवा।।
मानदा मन्त्रविद्या च महाविद्या षडक्षरी।
षट्कूटा च त्रिकूटा च त्रयी वेदत्रयी शिवा।।
शिवाकारा विरूपाक्षी शशिखण्डावतंसिनी।
महालक्ष्मीर्महोरस्का महौजस्का महोदया।।
मातङ्गी मोदकाहारा मदिरारुणलोचना।
साध्वी शीलवती शाला सुधाकलशधारिणी।।
खड्गिनी पद्मिनी पद्मा पद्मकिञ्जल्करञ्जिता।

हृत्पद्मवासिनी हृद्या पानपात्रधरा धरा।
धराधरेन्द्रतनया दक्षिणा दक्षजा दया।
दयावती महामेधा मोदिनी बोधिनी गदा।।
गदाधराचिंता गोधा गङ्गा गोधावरी गया।
महाप्रभावसहिता महोरगविभूषणा।
महामुनिकृतातिथ्या माध्वी मानवती मघा।
बाला सरस्वती लक्ष्मीर्दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।।
शारी शरीरमध्यस्था वैखरी खेचरेश्वरी।
शिवदा शिववक्षःस्था कालिका त्रिपुरापुरी।।
पुरारिकुक्षिमध्यस्था मुरारिहृदयेश्वरी।
बलारिराज्यदा चण्डी चामुण्डा मुण्डधारिणी।।
मुण्डमालाञ्चिता मुद्रा क्षोभणा कर्षणक्षमा।
ब्राह्मी नारायणीदेवी कौमारी चापराजिता।।
रुद्राणी च शचीन्द्राणी वाराही वीरसुन्दरी।
नारसिंही भैरवेशी भैरवाकारभीषणा।।
नागालङ्कारशोभाढ्या नागयज्ञोपवीतिनी।
नागकङ्कणकेयूरा (१००) नागहारा सुरेश्वरी।।
सुरारिघातिनी पूता पूतना डाकिनीक्रिया।
क्रियावती कुरी कृत्या डाकिनी लाकिनी लया।।
लीलावती रसाकीर्णा नागकन्यामनोहरा।
हारकङ्कणशोभाढ्या सदानन्दा शुभङ्करी।।

प्रहासिनी मधुमती सरसी स्मरमोहिनी।
महोग्रवपुषी वार्ता वामाचारप्रिया सिरा।।
सुधामयी वेणुकरा वैरिघ्नीवीरसुन्दरी।
वारिमध्यस्थिता वामा वामनेत्रा शशिप्रभा।।
शर्मदा शङ्करी सीता रवीन्दुशिखिलोचना।
मदिरा वारुणी वीणागीतिज्ञा मदिरावती।।
वटस्था वारुणीशक्तिर्वटजा वटवासिनी।
वटुकी वीरसूर्वन्द्या स्तम्भिनी मोहिनी च मुत्।।
मुद्गराङ्कुशहस्ता च वराभयकरा कुटी।
पाटीरद्रुमवल्ली च वटिका वटुकेश्वरी।।
इष्टदा कृषिभूः कीरी रेवतीरमणप्रिया।
रोहिणी रेवती रम्या रमणा रोमहर्षिणी।।
रसोल्लासा रसासारा सारिणी तारिणी तडित्।
तरीतरित्रहस्ता च तोतुला तरणिप्रभा।।
रत्नाकरप्रिया रम्भा रत्नालङ्कारशोभिता।
रुक्माङ्गदा गदाहस्ता गदाधरवरप्रदा।।
षड्रसा द्विरसा माला मालाभरणभूषिता।
मालती मल्लिकामोदा मोदकाहारवल्लभा।।
वल्लभी मथुरा माया काशी काञ्ची ललन्तिका।
हसन्तिका हसन्ती च भ्रमन्ती च वसन्तिका।।
क्षेमा क्षेमङ्करी क्षामा क्षोमवस्त्रा (२००) क्षणेश्वरी।

क्षणदा क्षेमदा सीरा सीरपाणिसमर्चिता ।।
क्रीता क्रीतातपा क्रूरा कमनीया कुलेश्वरी ।
कूर्चबीजा कुठाराढ्या कूर्मिणी कूर्मसुन्दरी ।।
कारुण्या चैव काश्मीरी दूती द्वारवती ध्रुवा ।
ध्रुवस्तुता ध्रुवगतिः पीठेशी बगलामुखी ।।
सुमुखी शोभनानीतिः रत्नज्वालामुखी नतिः ।
अलकोऽ्जयिनी भोग्या भङ्गी भोगावती बला ।।
धर्मराजपुरी पूता पूर्णासत्त्वाऽमरावती ।
अयोध्या योधनीया च युगमाता च यक्षिणी ।।
यज्ञेश्वरी योगगम्या योगिध्येया यशस्विनी ।
यशोवती च चार्वङ्गी चारुहासा चलाचला ।।
हरीश्वरी हरेर्माया मायिनी वायुवेगिनी ।
अम्बालिकाऽम्बा भर्गेशी भृगुकूटा महामतिः ।।
कोशेश्वरी च कमला कीर्तिदा कीर्तिवर्धिनी ।
कठोरवाक्कुहूमूर्तिः चन्द्रबिम्बसमानना ।।
चन्द्रकुङ्कुमलिप्ताङ्गी कनकाचलवासिनी ।
मलयाचलसानुस्था हिमाद्रितनयातनुः ।।
हिमाद्रिकुक्षिदेशस्था कुब्जिका कोसलेश्वरी ।
कारैकनिगडा गूढा गूढगुल्फातिगोपिता ।।
तनुजा तनुरूपा च बाणचापधरा नुतिः ।
धुरीणा धूम्रवाराही धूम्रकेशाऽरुणानना ।।

अरुणेशी रतिः स्वातिर्गरिष्टा च गरीयसी।
महानसी महाकारा सुरासुरभयङ्करी।।
अणुरूपा महज्जयोतिरनिरुद्धसरस्वती।
श्यामा श्याममुखी शान्ता श्रान्तसन्तापहारिणी।
गौर्गण्या गोमयी गुह्या गोमती गुरुवागऽया।
गीतसन्तोषसंसक्ता (३००) ग्राहिणी ग्रहिणी ग्रहा।।
गणप्रिया गजगतिर्गान्धारी गन्धमोदिनी।
गन्धमादनसानुस्था सह्याचलकृतालया।।
गजाननप्रिया गव्या ग्राहिका ग्राहवाहना।
गुहप्रसूर्गुहावासा ग्रहमालाविभूषणा।।
कौबेरी कुहका भ्रान्तिस्तर्कविद्या प्रियङ्करी।
पीताम्बरा पटाकारा पताका सृष्टिजा सुधा।।
दाक्षायणी दक्षसुता दक्षयज्ञविनाशिनी।
ताराचक्रस्तिथा तारा तुरी तुर्या तुटिस्तुला।।
सन्ध्यात्रयी सन्धिजरा सन्ध्यातारुण्यलालिता।
ललिता लोहिता लम्पा चम्पा कम्पाकुला सृणिः।।
सृतिः सत्यवती स्वस्था समाना मानवर्धिनी।
महोमयी मनस्तुष्टिः कामधेनुः सनातनी।।
सूक्ष्मरूपा सूक्ष्ममुखा स्थूलरूपा कलावती।
तलातलाश्रया सिन्धुस्त्र्यम्बिका लम्पिका जया।।
सौदामिनी सुधादेवी सनकर्षिसमर्चिता।

मन्दाकिनी च यमुना विपाशा नर्मदानदी ।।
गण्डक्यैरावती सिप्रा वितस्ता च सरस्वती।
रेवा चैरावती चेक्षुमती सागरवासिनी ।।
देवकी देवमाता च देवेशी देवसुन्दरी।
दैत्यघ्नी दमनी दात्री दितिर्दितिजसुन्दरी ।।
विद्याधरी च विद्येशी विद्याधरजसुन्दरी।
मेनका चित्रलेखा च चित्रिणी च तिलोत्तमा ।।
उर्वशी मोहिनी रम्भा चाप्सरोगणसुन्दरी।
यक्षिणी यक्षलोकेशी नरवाहनपूजिता ।।
यक्षेन्द्रतनया योग्या यक्षनायकसुन्दरी।
गन्धवती चिता गन्धा सुगन्धा गीततत्परा ।।
गन्धर्वतनया नम्रा (४००) गीतिर्गनधर्वसुन्दरी।
मन्दोरदी करालाक्षी मेघनादवरप्रदा ।।
मेघवाहनसन्तुष्टा मेघमूर्तिश्च राक्षसी।
रक्षोहन्त्री केकसी च रक्षोनायकसुन्दरी ।।
किंन्नरी कम्बुकण्ठी च कलकण्ठस्वना सुधा।
किंमुखी हयवक्त्रा च केला किन्नरसुन्दरी ।।
पिशाची राजमातङ्गी उच्छिष्टपदसंस्थिता।
महापिशाचिनी चान्द्री पिशाचकुलसुन्दरी ।।
गुह्येश्वरी गुह्यरूपा गुर्वी गुह्यकसुन्दरी।
सिद्धिप्रदा सिद्धवधूः सिद्धेशी सिद्धसुन्दरी।

भूतेश्वरी भूतालया भूतधात्री भयापहा।
भूतभीतिहरी भव्या भूतजा भूतसुन्दरी।।
पृथ्वी पार्थिवलोकेशी पृथा विष्णुसमर्चिता।
वसुन्धरा वसुनता पृथिवी भूमिसुन्दरी।।
अम्भोधितनयाऽलुप्ता जलजाक्षी जलेश्वरी।
अमूर्तिरम्मयी मारी जलस्था जलसुन्दरी।।
तेजस्विनी महोधात्री तैजसी सूर्यबिम्बगा।
सूर्यकान्तिः सूर्यतेजास्तेजोरूपैकसुन्दरी।।
वायुवाहा वायुमुखी वायुलोकैकसुन्दरी।
गगनस्था खेचरेशी शून्यरूपा निराकृतिः।।
निराभासा भासमाना द्युतिराकाशसुन्दरी।
क्षितिमूर्तिधराऽनन्ता क्षितिभृल्लोकसुन्दरी।।
अब्धियाना रत्नशोभा वरुणेशी वरायुधा।
प़ाशहस्ता पोषणा च वरुणेश्वरसुन्दरी।।
अनलैकरुचिज्योतिः पंचानिलगतिस्थितिः।
प्राणापानसमानेच्छा चोदानव्यानरूपिणी।।
पंचवातगतिर्नाडीरूपिणी वातसुन्दरी।
अग्निरूपा वह्निशिखा वडवानलसन्निभा।।
हेतिर्हविर्हुतज्योतिरग्निजा वह्निसुन्दरी।
सोमेश्वरी सोमला सोमपानपरायणा।।
सौम्यानना सौम्यरूपा सोमस्था सोमसुन्दरी।

सूर्यप्रभा सूर्यमुखी सूर्यजा सूर्यसुन्दरी।
याज्ञिकी यज्ञभगेच्दा यजमानवरप्रदा।
याजकी यज्ञविद्या च यजमानैकसुन्दरी (५००)।।
आकाशगामिनी वन्द्या शब्दजाकाशसुन्दरी।
मीनप्रिया मीननेत्रा मीनाशा मीनसुन्दरी।।
कूर्मपृष्ठगता कूर्मी कूर्मजा कूर्मरूपिणी।
वाराही वीरसूर्वह्यी वरारोहा मृगेक्षणा।।
वराहमूर्तिर्वाचाला दंष्ट्रा वराहसुन्दरी।
नरसिंहाकृतिर्देवी दुष्टदैत्यनिसूदिनी।।
प्रद्युम्नवरदा नारी नरसिंहैकसुन्दरी।
वामजा वामनाकारा नारायणपरायणा।।
बलिदानवदर्पघ्नी वाम्या वामनसुन्दरी।
रामप्रिया रामकीलिः क्षत्रवंशक्षयङ्करी।।
दनुपुत्री राजकन्या रामा परशुधारिणी।
भार्गवी भार्गवेष्टा च जामदग्न्यवरप्रदा।।
कुठाराधारिणी रात्रिर्जामदग्न्यैकसुन्दरी।
सीतालक्ष्मणसेव्या च रक्षःकुलविनाशिनी।।
रामप्रिया च शत्रुघ्नी शत्रुघ्नभरतेष्टदा।
लावण्यामृतधाराढ्या लवणासुरघातिनी।।
लोहितास्या प्रसन्नास्या स्वारामा रामसुन्दरी।
कृष्णकेशा कृष्णामुखी यादवान्तकरी लया।।

यादोगणार्चिता योज्या राधाश्रीकृष्णसुन्दरी।
बुद्धप्रसूर्बुद्धदेवी जिनमार्गपरायणा।।
जितक्रोधा जितालस्या जिनसेव्या जितेन्द्रिया।
जिनवंशधरोग्रा च नीलान्ता बुद्धसुन्दरी।।
काली कालाहलप्रीता प्रेतवाहा सुरेश्वरी।
कल्किप्रिया कम्बुधरा कलिकालैकसुन्दरी।।
विष्णुमाया ब्रह्ममाया शाम्भवी शववाहना।
इन्द्रावरजवक्षःस्था स्थाणुपत्नी पलालिनी।।
जृम्भिणी जृम्भहर्त्रीं च जृम्भमाणकचालका
कुलाकुलपदेशानी पददानफलप्रदा।।
कुलवागीश्वरी कुल्या कुलजा कुलसुन्दरी।
पुरन्रेष्टा तारुण्यालया पुण्यजनेश्वरी।।
पुण्योत्साहा पापहन्त्री पाकशासनसुन्दरी।
सूर्यकोटिप्रतीकाशा सूर्यतेजोमयी मषी।।
लेखिनी भ्राजिता रज्जुरूपिणी सूर्यसुन्दरी (६००)।
चन्द्रिका च सुधाधारा ज्योत्स्ना शीतांशुसुन्दरी।।
लोलाक्षी च शताक्षी सहस्राक्षी सहस्रपात्।
सहस्रशीर्षा चेन्द्राक्षी सहस्रभुजवल्लिका।।
कोटिरत्नांशुशोभा च शुभ्रवस्त्रा शतानना।
शतानन्दा श्रुतिधरा पिङ्गला चोग्रनादिनी।।
सुशुम्ना हारकेयूरनूपुरारावसङ्कुला।

घोरनादा घोरमुखी चोन्मुखी चोल्मुकायुधा।।
गोपिता गूर्जरी गाथा गायत्री वेदवल्लभा।
वल्लकीस्वननादा च नादविद्या नदीतटी।।
बिन्दुरूपा चक्रयोनिर्बिन्दुनादस्वरूपिणी।
चक्रश्वरी भैरवेशी महाभैरववल्लभ।।
कालभैरवभार्या च कल्पान्तरङ्गनर्तकी।
प्रलयानलधूम्राभा योनिमध्यकृतालया।।
भूचरी खेचरीमुद्रा नवमुद्राविलासिनी।
वियोगनी श्मशानस्था श्मशानार्चनतोषिता।।
भस्वाराङ्गी भर्गशिखा भर्गवामाङ्गवासिनी।
भद्रकाली विश्वकाली श्रीकाली मेघकालिका।।
नीरकाली कालरात्रिः काली कामेशकालिका।
इन्द्रकाली पूर्वकाली पश्चिमाम्नायकालिका।।
श्मशानकालिका भद्रकाली श्रीकृष्णकालिका।
क्रींकारोत्तरकाली श्रींहुंह्रींदक्षिणकालिका।
सुन्दरी त्रिपुरेशानी त्रिकुटा पुटभैरवी।।
त्रिलोकजननी त्रेता महात्रिपुरसुन्दरी।
कामेश्वरी कामकला कालकामेशसुन्दरी।।
त्र्यक्षरी त्र्यक्षरीदेवी भावना भुवनेश्वरी।
एकाक्षरी चतुष्कूटा त्रिकूटेशी लयेश्वरी।।
चतुर्वर्णा च वर्णेशी वर्णाढ्या चतुरक्षरी।

पंचाक्षरी च षड्वक्त्रा षटकूटा च षडक्षरी।।
सप्ताक्षरी नवानेवी परमाष्टाक्षरेश्वरी।
नवमी पश्चमी षष्ठी नागेशी च नवाक्षरी।।
दशाक्षरी दशास्येशी देविकैकादशाक्षरी।
द्वादशादित्यसङ्काशा (७००) द्वादशी द्वादशाक्षरी।
त्रयोदशी वेदगर्भा वाद्या त्रयोदशाक्षरी।
चतुर्दशाक्षरी विद्या विद्यापश्चदशाक्षरी।।
षोडशी सर्वविद्येशी महाश्रीषोडशाक्षरी।
महाश्रीषोडशीविद्या चिन्तामणिमनुप्रिया।।
द्वाविंशत्यक्षरी श्यामा महाकालकुटुम्बिनी।
वज्रतारा कालतारा नारी तारोग्रतारिणी।।
कामतारा शब्दतारा स्पर्शतारा रसाश्रया।
रूपतारा गन्धतारा महानीलसरस्वती।।
कालज्वाला वह्निज्वाला ब्रह्मज्वाला जटाकुला।
विष्णुज्वाला जिष्णुशिखा भद्रज्वाला करालिनी।।
विकरालमुखीदेवी कराली भूतिभूषणा।
चिताशयासना चिन्ता चितामण्डलमध्यगा।
भूतभैरवसेव्या च भूतभैरवपालिनी।।
बन्धकी बद्धसंमुद्रा भवबन्धविनाशिनी।।
भवानी देवदेवेशी दीक्षा दीक्षितपूजिता।
साधकेशी सिद्धिदात्री साधकानन्दवर्धिनी।।

साधकाश्रयभूता च साधकेष्टफलप्रदा।
रजोवती राजसी च रजकी च रजस्वला।।
पुष्पप्रिया पुष्पवती स्वयम्भूपुष्पमालिका।
स्वयम्भूपुष्पगन्धाढ्या पुलस्त्यसुतघातिनी।।
पात्रहस्ता सुता पौत्री पीतास्या पीतभूषणा।
पिङ्गानना पिङ्गकेशी पिङ्गला पिङ्गलेश्वरी।।
मङ्गला मङ्गलेशानी सर्वमङ्लमङ्गला।
पुरूरवेश्वरी पाशधरा चापधराऽधुरा।।
पुण्यधात्री पुण्यमयी पुण्यलोकनिवासिनी।
होतृसेव्या हकारस्था सकारस्था सुखावती।।
सखी शोभावती सत्या सत्याचारपरायणा।
सतीशानकलेशानी वामदेवकलाश्रिता।।
सद्योजातकलादेवी शिवाऽघोरकलाकृतिः।
शर्वरी क्षीरसदृशी क्षीरनीरविवेकिनी (८००)।।
वितर्कनिलया नित्या नित्यक्लिन्ना पराम्बिका।
पुरारिदयिता दीर्घा दीर्घनासाऽल्पभाषिणी।।
काशिका कौशिकी कोश्या कोशदा रूपवर्धिनी।
तुष्टिः पुष्टिः प्रजाप्रीता प्राजिका पूजकप्रिया।।
प्रजावती गर्भवती गर्भपोषणपोषिता।
शुक्लवासाः शुक्लरूपा शुचिवासा जयावहा।।
जानकी जन्यजनका जनतोषणतत्परा।

वादप्रिया वाद्यरता वादिता वादसुन्दरी।।
वाक्स्तम्भिनी कीरवाणी धीराधीरा धुरन्धरा।
स्तनन्धयी सामिधेनी निरानन्दा निरालया।।
समस्तसुखदा सारा वारांनिधिवरप्रदा।
वालुकी वीरपानेष्टा वसुधात्री वसुप्रिया।।
शुक्रनान्दा शुक्ररसा शुक्रपूज्या शुकप्रिया।
शुकी च शुकहस्ता च समस्तनरकान्तका।।
समस्ततत्त्वनिलया भगरूपा भगेश्वरी।
भगबिम्बा भगाह्वया भगलिङ्गस्वरूपिणी।।
भगालिङ्गेश्वरी श्रीदा भगलिङ्गामृतस्रवा।
क्षीराशना क्षीररुचिराज्यपानपरायणा।।
मधुपानपरा प्रौढ़ा पीवरांसा परंपरा।
पिलम्पिला पटोलेशा पाटलारुणलोचना।।
क्षीराम्बुधिप्रिया क्षीबा सरला सरलायुधा।
संग्रामा सुनया स्रस्ता संसृतिः सनकेश्वरी।।
कन्या कनकरेखा च कान्यकुब्जनिवासिनी।
काञ्चनाभतनुः काष्ठा कुष्ठरोगविनाशिनी।।
कठोरमूर्धजा कुन्ती कुन्तायुधधरा धृतिः।
चर्माम्बरा क्रूरनखा चकोराक्षी चतुर्भुजा।।
चतुर्वेदप्रिया चाट्वी चतुर्वर्गफलप्रदा।
ब्रह्माण्डचारिणी स्फूर्तिर्ब्रह्माणी ब्रह्मसंमता।।

सत्कारकारिणी सूतिः सूतिका लतिकालता (६००)।
कल्पवल्ली कृषाङ्गी च कल्पपादपवासिनी।।
कल्पपाशा महाविद्या विद्याराज्ञी सुखाश्रया।
भूतिराज्ञी विश्वराज्ञी रुद्रराज्ञी जटाश्रया।
नागराज्ञी वंशराज्ञी वीराज्ञी रजःप्रिया।।
सत्त्वराज्ञी तमोराज्ञी गुणाराज्ञी चलाचला।
वसुराज्ञी सत्यराज्ञी तपोराज्ञी जपप्रिया।।
मन्त्रराज्ञी वेदराज्ञी तन्त्रराज्ञी श्रुतिप्रिया।
वेदराज्ञी मन्त्रिराज्ञी दैत्यराज्ञी दयाकरा।।
कालराज्ञी प्रजाराज्ञी तेजोराज्ञी हराश्रया।
पृथ्वीराज्ञी पयोराज्ञी वायुराज्ञी मदालसा।।
सुधाराज्ञी सुराज्ञी भीमराज्ञी भयोज्झिता।
तथ्यराज्ञी जयाराज्ञी महाराज्ञी कुलाकृतिः।।
वामराज्ञी चीनराज्ञी हरिराज्ञी हलीश्वरी।
पराज्ञी यक्षाराज्ञी भूतराज्ञी शिवासना।।
वटुराज्ञी प्रेतराज्ञी शेषराज्ञी शमप्रदा।
आकाशराज्ञी राजेशी राज़राज्ञी रतिप्रिया।।
पातालराज्ञी भूराज्ञी प्रेतराज्ञी विषापहा।
सिद्धराज्ञी विभाराज्ञी तेजोराज्ञी विभामयी।।
भास्वद्राज्ञी चन्द्रराज्ञी ताराराज्ञी खवासिनी।
ग्रहराज्ञी लताराज्ञी वृक्षराज्ञी मतिप्रदा।।

धीरराज्ञी मनोराज्ञी मनुराज्ञी च काश्यपी।
मनुराज्ञी रत्नराज्ञी युगाराज्ञी मणिप्रभा।।
सिन्धुराज्ञी नदीराज्ञी नदराज्ञी दरीस्थिता।
बिन्दुराज्ञी नादराज्ञी लयराज्ञी सदीश्वरी।
ईशानराज्ञी राजेशी स्वाहाराज्ञी महत्तरा।।
वाह्निराज्ञी योगिराज्ञी यज्ञराज्ञी चिदाकृतिः।
जगद्राज्ञी तत्त्वराज्ञी वाग्राज्ञी विश्वरूपिणी।।
पश्चदशाक्षरीराज्ञी ओंह्रींभूतेश्वरेश्वरी।(१०००)

फलश्रुति

इतीदं मन्श्सर्वस्वं राज्ञीनामसहस्रकम्।।
पञ्चदशाक्षरीतत्त्वं मन्त्रसारं मनुप्रियम्।
सर्वतत्त्वमयं पुण्यं महापातकनाशनम्।।
सर्वसिद्धिप्रदं लोके सर्वरोगनिवर्हणम्।
सर्वोत्पातप्रशमनं ग्रहशान्तिकरं परम्।।
सर्वदेवप्रियं प्राज्यं सर्वशत्रुभयापहम्।
सर्वदुःखौघशमनं सर्वशोकविनाशनम्।।
पठेद्वा पाठयेन्नाम्नां सहस्रं शक्तिसंनिधौ।
दूरादेव पलायन्ते विपदः शत्रुभीतयः।।
राक्षसा भूतवेतालाः पन्नगा हरिणद्विषः।

पठनाद्विद्रवन्त्याशु महाकालादिव प्रजाः।।
श्रवणात्पातकं नश्येच्छ्रावयेद्यः स भाग्यवान्।
(नानाविधानि भोगानि संभुज्य पृथिवीवले।।)
गमिष्यति परां भूमिं त्वरितं नात्र संशयः।
अश्वमेधसहस्रस्य वाजिपेयस्य कोटयः।
गङ्गास्नानसहस्रस्य चान्द्रायणायुतस्य च।।
तप्तकृच्छ्रैकलक्षस्य राजसूयस्य कोटयः।
सहस्रनामपाठस्य कलां नार्घन्ति षोडशीम्।।
सर्वसिद्धीश्वरं साध्यं राज्ञीनामसहस्रकम्।
मन्त्रगर्भं पठेद्यस्तु राज्यकामो महेश्वरि।।
वर्षमेकं शतावर्तं महाचीनक्रमाकुलः।
शक्तिपूजापरो रात्रौ स लभेद्राज्यमीश्वरि।।
पुत्रकामी पठेत् सायं चिताभस्मानुलेपनः।
दिगम्बरो मुक्तकेशः शतावर्तं महेश्वरी।।
श्मशाने तु लभेत् पुत्रं साक्षाद्वैश्रवणोपमम्।
परदारार्चनरतो भगबिम्बं स्मरन् सुधीः।।
पठेन्नामसहस्रं तु वसुकामी लभेद् धनम्।
रवौ वारत्रयं देवि पठेन्नामसहस्रकम्।।
मृदुविष्टरनिर्विष्टः क्षीरपानपरायणः।
स्वप्ने सिंहासनां राज्ञीं वरदां भुवि पश्यति।।
क्षीरचर्वणसन्तृप्तो वीरपानरसाकुलः।

यः पठेत् परया भक्तया राज्ञीनामसहस्रकम् ।।
स सद्यो मुच्यते घोरान्महापातकजाद्भयात् ।
यः पठेत् साधको भक्त्या शक्तिवक्षःकृतासनः ।।
शुक्रोत्तरणकाले तु तस्य हस्तेऽष्टिसिद्धयः ।
यः पठेन्निशि चक्राग्रे परस्त्रीध्यानतत्परः ।।
सुरासवरसानन्दी स लभेत् संयुगे जयम् ।
इदं नामसहस्रं तु सर्वमन्त्रमयं शिवे ।।
भूर्जत्वचि लिखेद्रात्रौ चक्रार्चनसमागमे ।
अष्टगन्धेन पूतेन वेष्टयेत् स्वर्णपत्रके ।।
धारयेत् कण्ठदेशे तु सर्वसिद्धिः प्रजायते ।
यो धारयेन्महारक्षां सर्वदेवातिदुर्लभाम् ।।
रणे राजकुले द्यूते चौररोगाद्युपद्रवे ।
स प्राप्नोति जयं सद्यः साधको वीरनायकः ।।
श्रीचक्रं पूजयेद्यस्तु धारयेद्वर्म मस्तके ।
पठेन्नामसहस्रं तु स्तोत्रं मन्त्रात्मकं तथा ।।
किं किं न लभते कामं देवानामपि दुलर्भम् ।
सुरापानं ततः संविच्चर्वणं मीनमांसकम् ।।
नवकन्यासमायोगो मुद्रा वीणारवः प्रिये ।
सत्सङ्गो गुरुसांनिध्यं राज्ञीश्रीचक्रमग्रतः ।।
यस्य देवि स एव स्याद्योगी ब्रह्मविदीश्वरः ।
इदं रहस्यं परमं भक्त्या तव मयोदितम् ।।

अप्रकाश्यमदातव्यं न देयं यस्य कस्याचित्।
अन्यशिष्याय दुष्टाय दुर्जनाय दुरात्मने।।
गुरुभक्तिविहीनाय सुरास्त्रीनिन्दकाय च।
नास्तिकाय कुशीलाय न देयं तत्त्वदर्शिभिः।।
देयं शिष्याय शान्ताय भक्तायाद्वैतवादिने।
दीक्षिताय कुलीनाय राज्ञीभक्तिरताय च।।
दत्त्वा भोगापवर्गत्वं लभेत् साधकसत्तमः।।
इति नामसहस्रं तु राज्ञ्याः शिवमुखोदितम्।
अत्यन्तदुर्लभं गोप्यं गोपनीयं स्वयोनिवत्।।
इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे दशविद्यारहस्ये।
श्री महाराज्ञीसहस्रनामकम्।।

♦♦♦



क्षीर भवानी पीठ, भवानी नगर, जानीपुर, जम्मू।

पुस्तक प्राप्त स्थान
अर्धरात्री श्री महाराज्ञा सेवा संस्था ट्रस्ट (रजि0)
माता क्षीर भवानी पीठ, भवानी नगर, जानीपुर, जम्मू।

Composed and Printed By: Ramesh Tickoo - 9622118949